# ॥ श्री दंडकादि जैन प्राचीन स्तवनादि

प्राचीन महापुरुषोना बनावेला दंडकादि द्वार
३० तथा स्तवनो, चैत्यवंदनो, स्तुतिओ,
सझायो, विगेरेनो संग्रह.

तपगच्छना पुज्यपाद गुरुणीजी श्री श्री श्री १००८ सुरश्रीजी माहाराजश्रीना शिष्या गुरुणीजी हीरश्रीजी महाराज तेमना शिष्या श्री हरखश्रीजी महाराजना सदुपदेशथी तळे गामना श्रावक शेठ वालुभाइ शामचंद तथा पुनानी श्रावीकाओ विगेरे तरफथी मलेल द्रव्य सहायवडे.

छपावी प्रसिद्ध करनार
खंभात निवासी.

**मास्तर उमेदचंद रायचंद.**

मुं० अमदावाद. ठे० पाजरापोळ.

आवृत्ति १ लो. वीर संवत २४४६ सने १९२०

प्रत १००० संवत १९७६.

श्री 'सत्यविजय' प्रीन्टींग प्रेसमां शा. सांकलचंद हरिलाले छापी–ठे० पांचकुवा नवा दरवाजा–अमदावाद.

किंमत ०–१०–०.

# प्रस्तावना

**शा माटे पुस्तक मने केनो ?**

आप सर्वे जाणोज छो के आवा स्तवनादिक जेवा नाना पु-स्तकोनी प्रस्तावनानी अति आवश्यकता होइ शके नहीं छतां पण आ पुस्तक क्या हेतुथी बहार पाडवामां आव्युं तेम कोना सदुपदेशथी विगेरे सहज हकीकत जणाववी योग्य धारी छे

पण खुशी थवा जेवु छे के हींदुस्ताननां घणां शहेरो अने गामोमां ज्यां ज्यां आपणा पवित्र पूज्य पवित्र उत्तम चारित्र रत्नथी वि-भूषित गुरुणीजी माहाराजाओ विचरी रह्या छे त्यां त्यां आधुनीक समयमां जैन स्त्री वर्गमां तेम बाळीकाओमां खास परम पवित्र वित राग परमात्मानी अविच्छिन्न प्रभावशाळी धर्म क्रियामां तेमज पर-मात्माना अलौकिक गुण गान करवाना उद्यम माटे पुरतो उत्साह हासल करेला दृष्टिगोचर थाय छे दरेक स्त्रीयो अने बाळीकाओ पोतानुं दुर्लभ्य मानुष्य जीवन जो वीतराग परमात्मा धर्म सेवनमां तेमज तेमना गुण गान करवाथी पावन करे तो ते शिवाय आ निःसार दुनीयामां आत्म कल्याणनो बादशाही मार्ग बीजो कयो छे ? वलम्ब न थाय के आ उत्साहने पुरा पाडवा माटे जो के जैनोमां स्तवन सझायना पुस्तको घणा छपायेला छे, छतां पण प्राचीन महा पुरुषोना अपुर्व भाव वाळा घणां स्तवनो चैत्यवंदनो सझायो स्तु तीओ विगेरे हस्त लीखीत पानाओमां पडी रहेला छे तेनो सौने लाभ मळे एवा हेतुथी परम उपकारी पुज्यपाद श्री श्री श्री मोहन लालजी महाराज साहेबजीना संघाडाना साध्वीजी महाराजश्री सुवर्णश्रीजी तेमना शिष्य गुरुणीजी माहाराजश्री हीरश्रीजी तेमना

शिष्यागुरुणीजी महाराजश्री हरखश्रीजी महाराजके जेओ दक्षिण गुजरात, मारवाड, मेवाड, काठीयावाड आदि हींदुस्ताननां घणा शहेरो अने गामोमां विचरी घणी भावीकाओ तेम बालीकाओ उपर उपकार करी पोतानुं दीव्य चारित्र शोभावी रह्या छे तेमना सदूपदेशथी मलेल द्रव्यनी सहायवडे आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आव्यूं छे.

आ पुस्तकनी अंदर उत्तम प्रकारना विषयो दाखल करेला छे प्रथम दंडकना ३० द्वार विस्तारथी दाखल करेला छे पछी सम्यकत्व विचार गर्भित श्री महावीरजीन स्तवन उत्तमविजयजी कृत संयम श्रेणीनुं स्तवननी ढालो, गोडी पार्श्वनाथजीना स्तवनो चैत्यवंदनो स्तुतिओ सझायो विगेरे घणी उपयोगी बाबतो दाखल करेली छे वली आ पुस्तकनी अंदर पुज्यपाद परम उपगारी सुप्रसिद्ध मुनी माहाराजश्री मोहनलालजी महाराज साहेबनो तेमज तेमना पाट पटंधर पंन्यासजी महाराजश्री हर्ष मुनीजीना टुंक वृंतांत साथे तेमना फोटा मुकवामां आवेला छे.

आ पुस्तक पसिद्ध करवामा जे जे भाइओ तथा व्हेनोए मदद करी छे तेमना मुबारक नाम आ पुस्तकनी साथे [जोडवा साथे तेमनो खरा अंतःकरणथी आभार मानवामां आवे छे.

आ पुस्तकमां घणा विषयो हस्त लीखीत पाना उपरथी लेवामां आवेला छे.

बनती महेनते लखावी सुधारी छपाववामा आवेल छे अने तेनी मुल जे असल भाषा छे तेज भाषामां पण केटलाक स्तवनो छपावेल छे छतां पण दृष्टि दोषथी या यंत्र दोषथी शास्त्र विरुद्ध या अशुद्ध

रुपाभुं होय ते माटे सुज्ञ भाइओ बेनोनी क्षमा चाहुं छुं अने सुधारी वांचवा भलामण करुं छु सी प्रसिद्ध कर्ता

आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां जे गृहस्थो तथा बेनो तरफथी मदद मलेली छे तेना मुबारक नामो नीचे मुजब छे –

२००–०–० शेठ बालुभाइ खामचंद तरफथी  मु तले गाम

२५–०–० शेठ हीरचंद दीपचंद तरफथी  मु अमदावाद

३०–०–० शेठ चीमनलाल डुंगरजीनी धरिनी सोभाग्यवती बाइ माणेक  मु पुना

३०–०–० लाधाजी फताजीनी विधवा नाथुबाइ  मु पुना

२५–०–० मणीलाल माणेकचंद  मु पुना

१५–०–० कस्तुरचंद कुंवरचंदनी विधवा बाइ हगरी  मु पुना

१०–०–० शंकरलाल मगनलाल  मु पुना

१०–०–० कृष्णाजी वालाजी  मु पुना

१०–०–० भगवानजी वालाजी  ,, ,,

१०–०–० मारवतीआ रुपाजी  ,, ,,

## पन्यासजी श्री हर्षमुनीजीनुं टुंक वृतांत

श्री महात्मा शांत मुद्रा परमपूज्य श्रीश्रीश्री १००८ श्री मोहनलालजी महाराज साहेब तेमना शिष्य गंभिर्य गुण गुरु सेवा करवामां कुशल पन्यास श्री हर्ष मुनीजी तो महाराज श्रीना चरणकमलने त्यज्या नहीं अर्थात पन्यासजी महाराजश्रीना पासे रहेता कणी काढे छ के कमलनी पांखडीनो त्याग करी भमरो बीजे जाय छे के शुं ... ण महाराजश्रीने छोडीने गया नहीं आ

## શ્રી ૧૦૦૮ મુની મોહનલાલજી મહારાજના શિષ્ય તપગચ્છ

## પંન્યાસજી શ્રી હરખમુનિજી મહારાજ



| જન્મ | દીક્ષા | સ્વર્ગવાસ |
|---|---|---|
| સંવત ૧૯૨૫ | સવત ૧૯૪૪ | સવત ૧૯૭૪ |
| ફાગણ માસ. | ચઇતર સુદ ૯ | વઈશાખ વદ ૯ |

M VADILAL & Co

पंन्यासजी हर्षमुनीजीए तो पोताना गुरुजी महातमा मोहनलालजी माहाराजनां चरणकमलनी सेवामांज पोताना आत्माने कृतार्थ मान्यो वृधावस्थाने लीधे अथवा व्याधिने लीधे के प्रकृति ठीक न होवाने लीधे मोहनलालजी माहाराज पोते कोइ दीवस व्याख्यान वांची शके नही तो ते वखते तेमना शिष्यमां मान्य पन्यासजीश्री हर्षमुनीजी पाट उपर बेसी देसना करता हता ते पंन्यासजी हर्षमुनी कहेवा हता के थोडा बोला तथा शास्त्रमां कह्या प्रमाणे उपदेशने करनारा होवाथी ते महामुनीश्री पंन्यास हर्षमुनीजीनुं व्याख्यान सांभलीने मुंबाइनो तथा सुरतनो संघ आनंद पाम्यो सारा अंतःकरणवाला पन्यास श्री हर्षमुनीजी धर्मथी डरीने सुत्र प्रमाणे यथार्थ अने परीमिन एटले बहु वधारे नही ने तेम बहु ओछुं नही परंतु जरुर जेटलुंज बोलनारा कोइने पण अभीटा लागे तेम नहीं वर्त्तनारा इत्यादि घणा गुणवान पुरुष हता तेमना दर्शनथी सौ कोइने आनंद थतो हतो. एक वखते कोइए श्री मोहनलालजी महाराजने पुछ्युं के हे महाराज तमारा शिष्योमां आपणा पदने कोण शोभावशे ए सांभलीने बीजाओए कह्युं के ए वात पुछ्वी नकामी छे कारणके हालमा जे पंन्यासजी हर्षमुनीजी शोभावे छे तेज पछीथी पण शोभावशे त्यारबाद पंन्यासजी हर्षमुनीजी कांतिमुनीजी तथा देवमुनीजीए कह्युं के अमोए पहेलेथी अंगीकार करेली तपागछनी समाचारी प्रमाणे आपणे अनुसरवानी इछा राखीए छीए तेज वखते नयमुनीजी कल्याण मुनीजी पद्ममुनीजी क्षेमामुनीजी वीगरे घणा शिष्योए कहुं के अमारे तो पंन्यासजी हर्षमुनीजीनुं शरण छे अर्थात पंन्यासजी हर्षमुनीजी करशे ते प्रमाणे करी शुं बाद श्री मोहनलालजी

माहाराजे जे जेने रुचे ते ममाणे करो एम हर्षथी कही काळ नजीक आव्यांथी मोहनलालजी माहाराजे वीचार करयो के महो योग-म-त्रे मंत्रो साक्षात अमृत छे योगना ममावथी अरिहंत वीगर परम योगीयो अमर थइ गयेला छे तेम ते योगना महीमाने वर्णवता वर्णव-तांज श्री मोहनलालजी माहाराज तत्काल विधि ममाणे मत्याख्यान विगेरे करीने पोताना आत्माने छेल्ली समाधीमां जोडी दीघो एटले देहोत्सर्ग करवाने माटे आ देहनी अंतिम समाधिमां बेठा अने आ असार संसारनो तेज वखते आ विनश्वर देहनो त्याग कर्यो अर्थात् काल करयो पन्यासजी हर्षमुनीजी कांतिमुनीजी वीगर आवे साधु तथा गुरुणजी सुरश्रीजी वीगेर साधवीओ भगीनदास कपुरचंद वी-गर श्रावक श्रावीकाओ अपशोषमा पडया बाद सुरतना संघे जाण्युं के जेवो मोहनलालजी माहाराजे संघाडो चलाव्यो तेम ममाणे पन्यासजी श्री हर्ष मुनीजी पण संघाडो चलावसे एम जाणीने सुर तना संघे पंन्यासजी हर्षमुनीजीने गुरुनी पाटे बेसाडया संवत १९६३ सालमां काल करयो त्यारबाद पन्यासजी श्री हर्षमुनीजी नी आज्ञाथी साधु तथा साधवीओ वीचारता हता जे पन्यासजी हर्ष मुनीजीए अवकाश सुधी समुदाय सारो चलाव्यो जेथी देशथी वि-हारता सुरतना संघनी घणी विनति हती माटे सुरतमां पधार्याने केम दीवसे शरीर नरम होवाथी अने वधारे वधारे नरम थवाथी पन्यासजी हर्ष मुनीए जाण्युं के हव मने सारु नहीं थाय ने अंत समयनी स्थिति जाणी के हव मारा संघाडामां कोइ पण मारा गया पछी पंन्यास नथी एम जाणी तेज वखत कमलविजय सुरीश्वर पण सुरतमां पधार्या

हता तेमने बोलावीने कहुं के मांरा संघाडामां कोइ पंन्यास नथी माटे मारा बे शिष्योने पंन्यास पदवी आपजो तेज वखते कमल वीज्य सुरीश्वरे पण कहुं के क्या शिष्योने आपवी त्यारे पंन्थासजीश्री हर्ष-मुनीजीए कहुं के मारा मोटा शिष्यजयमुनीने अने क्षांतिमुनीने ते बे शिष्योने आपजो ते वखते कमलवीज्य सुरीश्वरे पण पंन्यास हर्षमुनी-जीनुं वचन कबुल कर्युं सुरतना संघे पण पंन्यासजीनुं वचन कबुल कर्युं जयमुनीजी मोटा शिष्यने ज्ञानवान जाणीने पंन्यास पदवी आपवानी कहीने शांति मुनीजीने पंन्यास पदवी आपवानी केम कही के दीक्षा लीधी तींदारथीज पंन्यासजी पासेज रहेतां हता उमरे नाना छे पण महागुणीने क्षमावंतने विनय गुण घणो हतो ने ज्ञान पण हतुं तेथी तेमने पण पंन्यास पदवी आपवानुं कहुं त्यार पछी पंन्यासजी हर्षमुनी-जीए काल कर्यो तेज वखत साधु माहाराज साधवीओ सुरतनो संघ घणोज अपशोशमा पडीयो केमके आवा महात्मा गुरु ओचिंता काल करवाथी सुरतना संघने घणुंज लागी आव्युं साधु साधवीओए जाणुं के हवे अमारा संघाडाना नायक पंन्यासजी हर्षमुनीजीए काल कर्यो ते घणुं खोटुं थयुं केमके अमारा संघाडामां गंभिर्य ज्ञान गुनवान गुरुनी खामी पडी गइ छे माटे घणो अपशोश लागे छे. प्रंतु भावी आगल कोइनुं चालतुं नथी. विशेष शुं लखवुं.

ली. श्री. मोहनलालजी जैन पाठशाळाना सेक्रेटरी झवेरी.

**मोहनलाल डाह्याभाइ.**

अमदावाद.

# अनुक्रमणीका

श्री वीत रागाय नमः

# अथ श्री दंडक द्वार प्रारंभ.

प्रथम नाम द्वार, बीजो लेश्या द्वार, त्रीजो शरीर द्वार, चोथो अवगाहना द्वार, पांचमो संघयण द्वार, छठो संज्ञा द्वार, सातमो संस्थान द्वार, आठमो कषाय द्वार, नवमो इंद्रिय द्वार, दसमो समुद्घात द्वार, अगीयारमो द्रष्टि द्वार, बारमो दर्शन द्वार, तेरमो ज्ञान द्वार, चउदमो जोग द्वार, पंदरमो उपयोग द्वार, सोलमोने सतरमो उपजवा चववानो द्वार, अढारमो आयुष्य द्वार, ओगणीसमो प्रर्याप्ति द्वार, वीसमो आहार द्वार, एकवीसमो अने बाविसमो गति आगति द्वार, त्रेविसमो वेद द्वार, चोविसमो चवनद्वार,

पचीसमो प्राणद्वार, छबीसमो संपदाद्वार, सत्ता वीसमो धर्मद्वार, अठावीसमो योनी द्वार, ओग ण्रीसमो कुलकोडी द्वार, त्रीसमो अल्प बहुत्व द्वार हवे प्रथम नाम द्वार कहे छे सातनारकीनो एक दंडक, दस भुवनपतिनादसना दसदंडक, पांच स्थावरनां पांच दंडक, त्रण विगलेंद्रिना त्रण दंडक, तिर्यंच पचेंद्रिनो एक दंडक, मनुष्यनो एक दंडक, एक व्यंतरनो दंडक, एक ज्योतिषनो दंडक, एक वैमानिकनो दंडक, ए चोवीस दंडक घमा, वसा, सेला, अजना, रिठा, मघा, माघवति असुरकुमार, नागकुमार सुवर्ण कुमार, विद्युत कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दीशीकुमार वायुकुमार, स्तनितकुमार, पृथ्वी, आपो, तेउ, वाउ, वनस्पति, बेइंद्रि, तेइंद्री, चोरिंद्रि, तिर्यंचपचेंद्रि, मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिष, वैमानिक, ए प्रथम नाम द्वार हवे

लेश्या द्वार कहे छे. कृष्णलेश्या, निललेश्या, कापोत-लेश्या, तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्या, नारकीने प्रथम त्रण लेश्या, दश भुवनपतिने प्रथम चार लेश्या, तेउ, वाउने प्रथम त्रणलेश्या, बेइंद्री, तेइंद्री, अने चौरेंद्रीने प्रथम त्रण लेश्या, तिर्यंच पंचेंद्री, अने मनुष्यने छ लेश्या, व्यंतरने प्रथमनी चार लेश्या, ज्योतीषीने, सुधर्म, इसान देवलोके एक तेजो लेश्या, त्रीजे, चोथे, पांचमे देवलोके एक पद्म लेश्या, छठा देवलोकथी उपरांत, सघळेदेवलोके एक शुक्ल लेश्या, ए बीजुं लेश्या द्वार, हवे त्रीजो शरिर द्वार कहे छे. शरीर पांच, उदारीक शरीर, वैक्रीय शरीर, आहारक शरीर, तेजस शरीर, कारमण शरीर, आहारक चौद पूर्वधारीने, तेजसते आहार पचवे, कार्मण ते जीवजेगतीए जाय तींहा कर्मभेळां जाय नारकी, दसभूवन-पति, व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक ए चवद दंडके

अण शरीर वैक्रीय, तेजस, कारमण, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वनस्पति, बेइंद्रि, तेइंद्रि, चोरींद्रि, ए सात दंडके त्रण शरीर, उदारीक, तेजस, कारमण वाउकाय अने तीर्यंच पंचेंद्रि, ए वे दंडके चार शरीर, उदारीक, वैक्रिय, तेजस, कार्मण, मनुष्यने पांच शरीर, ए शरीर द्वार हवे चोथो अवगाहना द्वार कहे छे सात नारकीनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्क्रीष्टो पांचसे धनुष प्रथमनरके जघन्यथी त्रणहाथ उतक्रीष्टो पोणा आठ धनुपने छ अंगुल बीजी नरके जघन्यथी पोणाआठ धनुप अने छ अंगुल, उतक्रीष्टो साडा पंदर धनुप अने बार अंगुल त्रीजी नरकेजघन्यथी साडा पंदर धनुपने बार अंगुल, उतक्रीष्टो एकत्रीस धनुषअने एक हाथ चोथी नरकेजघन्यथी एकत्रीस धनुप अने एक हाथ, उतक्रीष्टो साडाबासठ धनुष्य

पांचमी नरकेजघन्यथी साडाबासठ धनुष्य, उतकीष्टी सवासो धनुष छठी नरकेजघन्यथी सवासो धनुष्य, उतकीष्टी अढीसोधनुष सातमी नरके जघन्यथी अढीसो धनुष, उतकीष्टी पांचसे धनुष. वैक्रीय करे तो हजार धनुष, नारकी सा-तेने पोताना शरीरथी वैक्रीयशरीर बमणा करे. मनुष्यनी अवगाहनाजघन्यथी अंगुलनो असं-ख्यातमो भाग उतकीष्टी त्रण गाउनी वैक्रीय करेतो लाख जोजनथी कांइक अधिक सवा प-होरवार रहे. दसभुवनपतिव्यंतर, ज्योतिष, वै-मानीकनीजघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतकीष्टी दसभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमा-नीक, सुधर्मा, इसानदेवलोके सात हाथनीकाय त्रीजे, चोथे देवलोके छ हाथनी काया पांचमे, छठे देवलोके पांच हाथनीकाया सातमे आठमे देवलोके चार हाथनी काया, नवमे, दसमे, अगीया-

रमे अने बारमे देवलोके त्रण हाथनीकाया नवग्रैवेके बेहाथनी काया चार अनुत्तर विमाने एक हाथनी काया सर्वार्थ सीद्धे एक मुठा हाथनी काया वैक्रीय करे तो लाख जोजननु करे, पन्नर दीवस सुधी रहे अने जघन्यथी तो सर्व थानके, अंगुलनो असंख्यातमो भाग पांच स्थावरनी जघन्य तथा उतक्रीष्टी पण अंगुलनो असंख्यातमो भाग पण वनस्पतिनो उतक्रीष्टो हजार जोजनथी अधीक, बे इन्द्री, ते इन्द्री, चौरिंद्रीनो जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतक्रीष्टो बे इन्द्रिनो बार जोजननु, ते इन्द्रिनुं त्रण गाउनु, चौरिंद्रीनुं, एक जोजनतीर्यंच पंचिद्रीनो जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उतक्रीष्टो हजारजोजन वैक्रीय करे तो नवसे जोजननु, चार महुरत सुधी रहे पेहेलो आरो बेसता त्रण गाउनी काया उतरता बे गाउनी काया बीजो आरो बेसता बे गाउनी काया उतरता एक गाउनी काया त्रीजो आरो बेसते एकगाउनी काया उतरते पांचसे धनुष्यनीकाया चोथो आरो

बेसते पांचसो धनुषनी काया उतरते सात हाथनी काया. पांचमो आरो बेसता सात हाथनी काया उतरते एक हाथनी काया छठो आरो बेसते एक हाथनी काया उतरते मुंढा हाथनी काया, हवे चडता आराछ छे. पेहेलो आरो बेसता मुंढा हाथनी काया उतरते एक हाथनी काया बीजो आरो बेसते एक हाथनी काया उतरते सात हाथनी काया. त्रीजो आरो बेसतेसात हाथनी काया उतरते पांचसे धनुषनी काया. चोथोआरो बेसते पांचसे धनुषनी काया उतरते एकगाउनी काया पांचमो आरो बेसते एकगाउनीकाया उतरते बे गाउनी काया छठो आरो बेसते बे गाउनी काया उतरते त्रण गाउनी काया ए चडता छआरा जलचर गर्भजनी हजार जोजननी काया, जलचर समुर्छीमनी हजार जोजननी काया थलचर गर्भजनी त्रण गाउनी काया थलचर समुर्छीमनी सातगाउनी काया. खेचर गर्भजनी नव धनुषनी काया, खेचर समुर्छीमनी नव धनुषनी काया उरपरी सर्प

गर्भजनी हजार जोजननी काया, उरपरी सर्प समु
र्छीमनी नव जोजननी काया भुजपरी सर्पगर्भजनी नव
गाउनी काया ए उतकृष्टी, जघन्यथी तो सर्वनी
अंगुलना असंख्यातमा भागनी कायाए अवगाहना
द्वार हवे पांचमो संघयण द्वार कहे छे वज्ररुषभना
राच संघयण, रुषभनाराच संघयण, नाराच संघयण,
अर्धनाराच संघयण, कीलीका संघयण, छेवठु संघ
यण ए ६ संघयण नारकी, दसभुवनपति, व्यंतर,
ज्योतिष, वैमानिक पांचस्थावर, ए छगणीस दंडके
एके संघयण नथी हाडका नहीं, मांस नहीं, रुधीर
नहीं, ते असंघयणी बे इंद्री, ते इंद्री, चोरींद्रीए त्रण
दंडके एक छेवठीउ तीर्यंच पचींद्री,मनुष्यने छए संघयण
समुर्छीम्, तीर्यंच पचींद्रीने, मनुष्यने छेवठो संघयण
ए संघयणद्वार हवे संज्ञाद्वार कहे छे आहार संज्ञा,
भय संज्ञा, मइथुन संज्ञा, परीग्रह संज्ञा, क्रोध संज्ञा,
मान संज्ञा, माया संज्ञा, लोभ संज्ञा, उघ संज्ञा,

लोक संज्ञा, सुख संज्ञा, दूख संज्ञा, दूगँग संज्ञा, शोक संज्ञा, मोह संज्ञा, धर्म संज्ञा, एसोल संज्ञा, मांहेथी बावीस दंम्डके पनर संज्ञा होय, तीर्यंजपंचींद्री, अने मनुष्यने सोल संज्ञा होय. धर्म संज्ञा बधी ए ठठ्ठो संज्ञाद्वार. हवे सातमो संस्थानद्वार कहेछे. सम चतुरस्त्र संस्थान, निग्रोद परीमंम्डल संस्थान, सादि संस्थान वामन संस्थान, कुब्ज संस्थान, हुंम्डक संस्थान, नारकी पांच स्थावर त्रण विगलेंद्री ए नव दंम्डके एक हुंम्डक संस्थान होय दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक ए तेर दंम्डके एक सम चतुरस्त्र संस्थान होयछे. तीर्यंज पंचींद्रीने,मनुष्यने छए संस्थान होय समुर्छीम तीर्यंच, मनुष्यने एक हुंम्डक संस्थान होय ए संस्थानध्वार हवे कषायध्वार कहे छे. क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार कषाय चोवीसे दंम्डके होय छे. देवताने लोभ घणो, नारकीने क्रोध घणो, तीर्यंचने माया घणी, मनुष्यने मान घणो ए कषाय-

च्यार हवे नवमो इंद्रीयच्यार कहे छे फरस इंद्री, रस इंद्री, घाण इंद्री, चक्षु इंद्री, श्रोत इंद्री, नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर ज्योतीषी वैमानीक, तीर्यंच पचेंद्री, मनुष्यने पांच इंद्री होय एकेंद्रीने फरस इंद्री अने बेइंद्रीने फरस अने रस इंद्री होय छे तेइंद्रीने फरस इंद्री,रस इंद्री, घाण इंद्री होय चोरींद्रीने फरस इंद्री रस इंद्री, घाण इंद्री चक्षु इंद्री ए चारे होय छे हवे दसमो समुदघात च्यार कहे छे वेदनी समुद घात, कषाय समुदघात, मरण समुदघात, वैक्रीय समुदघात तेजस समुदघात, आहारक समुदघात, केवली समुदघात, नारकीने, वायुकायने चार समु दघात वेदनी, कषाय, मरण, वैक्रीय ए चारे होय दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक तीर्यंच पचेंद्री, ए चउद दंडके पांच समुदघात होय, वेदनी, कषाय, मरणांत, वैक्रिय, तेजस ए पांच होय बे इंद्री, ते इंद्री, चौरेंद्री, पृथ्वी, अप, तेउ, वनस्पति,

ए सात दंडके त्रण समुदघात होय. वेदनी, कषाय, मरणांत मनुष्यने साते समुदघात होय ए समुदघात द्वार. हवे अगीयारमो दृष्टीद्वार कहे छे. समकीत दृष्टी, मीश्र दृष्टी, अने मिथ्या दृष्टी. नारकी, दसभुवनपति, व्यंतर, ज्योतीष, वैमानिक तीर्यंच पंचींद्री अने मनुष्य ए सोल दंडके त्रणे दृष्टी होय पांच स्थावर ने एक मिथ्या दृष्टी होय त्रण वीगलेंद्री ने बे दृष्टी होय समकीत दृष्टी अने मीथ्यादृष्टी ए दृष्टिद्वार. बारमो दरसन द्वार कहे छे, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शन, नारकीने, दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीष, वैमानीक, तीर्यंचपंचेंद्री, ए पंदर दंडके त्रण दर्शन होय. चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन. पांच स्थावर ने एक अचक्षु दर्शन होय. बेइंद्री तेइंद्रीने एक अचक्षु दर्शन होय, चौरींद्रीने चक्षु, अचक्षु, ए बे होय, मनुष्यने चारे दर्शन होय, ए दरसणद्वार. तेरमो ज्ञानद्वार कहे छे. मतीज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि

ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, वीभंग अज्ञान, पांच स्थावर मे बे अज्ञान होय, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान ए बे होय त्रण विगलेंद्री ने बे अज्ञान अने बे ज्ञान होय छे मती ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक तीर्यंच पचेंद्री ए पदर दंडके त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे मतीज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधी ज्ञान, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान मनुष्यने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय ए ज्ञानद्वार चउदमो जोगद्वार कहे छे चार मनना, चार वचनना अने सात कायाना एम पंदर जोग सत्य मन जोग, असत्य मन जोग, सत्यमृषा मन जोग असत्य मृषा मन जोग सत्य वचन जोग, असत्य वचन जोग, सतमृषा वचन जोग, असतमृषा वचन जोग, उदारीक काय जोग, उदारीक मीश्र

काय जोग, वैक्रीयकाय जोग, वैक्रीय मीश्रकाय जोग, आहारककाय जोग, आहारक मीश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग, नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर ज्योतीषी, वैमानीकए चउद दंडके अगीयार जोग, चार मनना, चार वचनना, त्रण कायाना वैक्रीयकाय जोग, वैक्रीय मीश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग तीर्यंच पंचीद्रीना दंडके तेर जोग चार मनना, चार वचनना, पांच कायाना उदारीककाय जोग, उदारीक मीश्रकायजोग, वैक्रीयकायजोग वैक्रीय मिश्रकायजोग, कार्मणकाय जोग पांचे स्थावरमां थी चार स्थावर ने त्रण जोग, उदारीककाय जोग, उदारीक मिश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग वाउ कायना दंडके पांच जोग उदारिककाय जोग. उदारिक मिश्रकाय जोग. वैकीयकाय जोग; वैकीय मीश्रकाय जोग. कार्मणकाय जोग. बे इंद्री; ते इंद्री, चौरींद्री ए त्रणे दंडके चार जोग उदारीककाय जोग.

उदारिक मिश्रकाय जोग, कार्मणकाय जोग असत्यमृषा वचन जोग मनुष्यने पदर जोग होय छे ए जोगद्वार. हवे पदरमो उपयोगद्वार कहे छे उपयोग बार पाच ज्ञान त्रण अज्ञान, चार दर्शन मती ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान, मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन, केवल दर्शन, नारकी, दस भुवनपति, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक तीर्यंच पचींद्री ए पदर दडके नव उपयोग त्रण ज्ञान, त्रण अज्ञान, त्रण दर्शन मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान मती अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभंग ज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन पांच स्थावर ने त्रण उपयोग, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, अचक्षु दर्शन, ए त्रण बे इंद्री ते इंद्री ने पांच उपयोग, मती ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, अचक्षु दर्शन ए पांच

चौरींद्रीने छ उपयोग होय मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन ए छ मनुष्यने बार उपयोग होय ए उपयोगद्वार सोलमो सतरमो उपजवा, चववानोद्वार कहे छे नारकी एक समये जघन्यथो एक, बे, त्रण आदेद इजावत उतकीष्टा संख्याता असंख्याता उपजे अने चवे दस भुवनपती व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक, ए तेर दंडके एक, बे, त्रण आदेदइने संख्याता असंख्याता उपजे ने चवे. तीर्यंच पंचींद्री एक, बे, त्रण आदे दइने संख्याता असंख्याता उपजे ने चवे, मनुष्यने एक, बे, त्रन, आदे दइने संख्याता उपजे ने चवे समुर्छिम मनुष्य असंख्याता उपजे अने चवे चार स्थावरमां असंख्याता उपजे ने चवे. वनस्पतिमां अनंता उपजे ने चवे. बे इंद्री, ते इंद्री, चौरींद्री एक, बे, त्रण, आदे दइ जावत उतकृष्टा संख्याता असंख्याता उपजे ने चवे ए उपजवाचववानोद्वार

हवे अढारमो आयुष्यद्वार कहे छे सर्वे नारकीनुं आयुष जघन्यथी दसहजार वर्षनुं उतकीष्टो तेत्रीस सागरोपमनु प्रथम नरके जघन्यथी दसहजार वर्षनु उतकीष्टो एक सागरोपमनु बीजे नरके जघन्यथी एक सागरोपम अने उतकृष्ट त्रण सागरोपम त्रीजी नरके जगन्यथी त्रण सागरोपमनु उतकीष्टो सात सागरोपमनु चोथी नरके जघन्यथी सात सागरोपमनु उतकीष्टो दससागरोपमनु पांचमी नरके जगन्यथी दस सागरोपम अने उतकीष्टो सत्तर सागरोपमनुं छठी नरके जघन्यथी सत्तर सागरोपमनु उतकीष्टो बावीस सागरोपमनु सातमी नरके जघन्यथी बावीस सागरोपनुं उतकीष्टो तेत्रीस सागरोपमनुं दस भुवनपतिना वीस इंद्रना नाम कहे छे चमर इंद्र, बल इंद्र, धर्णेद्र, भूतानेंद्र, वणूदेव, वणूदालि, हरीकत, हरी सींह, अग्नी सींह, अग्नी मानव, पूरण, विसस्त, जलकत, जलप्रभ, अमित गति, मरिगवाहन, विलंब,

प्रभर्जन, घोस, महाघोस, ए वीस इंद्र मध्ये चमर इंद्रनी जातनो जघन्यथी दस हजार वर्षनुं, उतकृष्टो साडात्रण पल्योपमनुं वल इंद्रनौ जघन्यथी दस हजार वरसनुं, उतकृष्टो एक सागरोपमथी अधीक एनी देवीनो जघन्यथी दस हजार वर्षनो उतकृष्टो, साडाचार पल्योपमनुं. हवे दक्षीण पासाना नव इंद्रनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो दोढ पल्योपमनुं हवे उत्तर पासाना नव इंद्रनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो वे पल्योपमनुं.

हवे ए इंद्रोनी देवीओनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो बे पल्योपमनो दक्षीणना नवे इंद्रनी देवीओनुं जघन्यथी दस हजार वरसनुं उतकृष्टो एक पल्योपमनुं पृथ्वीकायनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं, उतकृष्टो बावीस हजार वरसनो.

हवे बादर पृथ्वीनो भेद करे छे. सनाह पृथ्वी गोपीचंदनादीकनो जघन्यथी अंतर मुहुर्तनो उतकृष्टो एक हजार वरसनो. बीजी शुद्ध पृथ्वी नदीनी मेखडादिकनो जघन्यथी अंतर मुहुरतनो उतकृष्टो

बावीस हजार वरसनु श्रीजी वाल्लुका चवेतवेल्ल प्र-
मुखनो जघन्यथी अंतर मुहुर्तनु उतकृष्टो चौद ह-
जार वरसनो चोथा मणसीला हरीआल सरमादीकनु
जघन्यथी अंतर मुहुर्तनु, उत्कष्ट सोलहजार वरसनु
पाचमी सरकरा सुवर्णादिक सात धातुनु जघन्यथी
अंतर मुहुर्तनु अने उत्कष्टथी बावीस हजार वर्षनु
अपकायनु जघन्यथी अतर मुहुर्तनु अने उत्कष्टथी
मात हजार वर्षनु तेउकायनुं जघन्यथी अतर मु-
हुर्तनु अने उत्कष्टथी त्रण अहारात्रीनु वाउकायनु,
जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने उत्कष्टथी त्रण हजार
वर्षनुं वनस्पतिकायनु जघन्यथी अतर मुहुर्तनु अने
उत्कृष्टथी दस हजार वर्षनु बे इंद्रीनु जघन्यथी अ
तर मुहुर्तनु अने उत्कृष्टथी बार वर्षनु ते इंद्रीनु ज-
घन्यथी अंतर मुहुर्तनु अने उत्कृष्टथी ओगणपचास
दीवसनुं चौरिंद्रीनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनु अने
उत्कृष्टथी छ मासनुं आयुष्य होय छे तीर्यच पंचें-
द्रिना पांच भेद छे जलचर, थलचर, खेचर, उरपरी
सर्प, भूजपरी सर्प, एम पांच समुर्छीम अने पांच ग-

र्भंज मली दस भेद. ते मध्येथी समुर्छीम् जलचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्ट पूर्वक्रोड वरसनुं समुर्छीम् थलचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्ट चोरासी हजार वर्षनुं. गर्भज चोपगानुं जघन्यथी अंतरमूहुर्त उत्कृष्टथी त्रण पल्योपमनुं, समुर्छीम् खेचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्टथी बोतेरहजार वर्षनुं, हवे गर्भज खेचरनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग. समुर्छीम् उरपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी त्रेपन हजार वर्षनुं. गर्भज उरपरी सर्पनुं जधन्यथी अंतरमुहुर्त अने उत्कृष्टथी पूर्वक्रोडवरसनुं समुर्छीम् भुजपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी बेंतालीस हजार वर्षनुं तेमज गर्भज भुजपरी सर्पनुं जघन्यथी अंतर मुहुर्त अने उत्कृष्टथी पूर्व क्रोड वर्षनुं आयुष्य होय छे. हवे समुर्छीम् मनुष्यनुं जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी अंतरमुहुर्तनुं. गर्भज मनुष्यनुं जघन्यथी अंतरमुहुर्तनुं अने उत्कृष्टथी त्रण पल्योपमनुं. व्यंतर देवतानुं जघन्यथी दसहजार वर्षनुं अने उत्कृष्टथी एक पल्योपमनुं. व्यंत-

रोनी देवीनुं जघन्यथी दसहजार वर्षनु अने उत्कृ-
ष्टथी अर्ध पल्योपमनु ज्योतीषीना पांच भेद छे-
चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र अने तारा, चंद्रमानुं जघ-
न्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी एक
पल्योपम अने एक लाख वरसथी काइक अधिक,
चन्द्रमानी देवीनु जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग
अने उत्कृष्टथी अर्ध पल्योपमने पचास हजार वर्षथी
काइक अधिक सूर्यनु जघन्यथी पल्योपमनो चोथो
भाग अने उत्कृष्टथी एक पल्योपम अने एक हजार
वर्षथी काइक अधिक सूर्यनी देवीनुं जघन्यथी
पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी अर्ध पल्यो-
पम अने पचास हजार वर्षथी काइक अधिक ग्रहनुं
जघन्यथी पल्योपमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी
एक पल्योपमनुं ग्रहनी देवीनु जघन्यथी पल्योपमनो
चोथो भाग अने उत्कृष्टथी अर्ध पल्योपम नक्षत्रनुं
जघन्यथी पल्यापमनो चोथो भाग अने उत्कृष्टथी
अर्ध पल्योपम, नक्षत्रनी देवीनु जगन्यथी पल्योपमनो
चोथो भाग अने उत्कृष्टथी पल्योपमना चोथा भाग-

थी कांइक अधिक. तारानुं जघन्यथी पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्टथी पल्योपमनो चोथो भाग, तारानी देवीनुं जघन्यथी ताराथी अर्ध जाणवुं.

वैमानीक देवताओनुं आयुष्य कहे छे. सुधर्मा देवलोकनुं जघन्यथी एक पल्योपमनुं अने उत्कृष्टथी बे सागरोपम. इसान देवलोकनुं जघन्यथी एक पल्योपमथी कांइक अधिक उत्कृष्ट बे सागरोपमथी कांइक अधिक. परिग्रहीता देवीनुं जघन्यथी सात पल्योपमनुं अने उत्कृष्टथी पचास पल्योपमनुं. अपरी ग्रहिता देवीनुं जघन्यथी नव पल्योपमनुं अने उत्कृष्ट पंचावन पल्योपमनुं.सनतकुमार देवलोकनुं जघन्यथी बे सागरोपमनुं अने उत्कृष्ट सात सागरोपमनुं.चोथा माहेंद्र देवलोकनुं जघन्यथी बे सागरोपम अधिक अने उत्कृष्टथी सात सागरोपमथी कांइक अधिक. ब्रह्म देवलोकनुं जघन्यथी सात सागरोपमनुं उत्कृष्ट दस सागरोपमनुं छट्ठा लांतक देवलोकनुं जघन्यथी दस सागरोपमनुं उत्कृष्टथी चौद सागरोपमनुं. सा-तमां. माहा शुक्र देवलोकनुं जघन्यथी चौद सागरो

पमनुं उत्कृष्टथी सत्तर सागरोपमनुं आठमा सहसार देवलोकनुं जघन्यथी सत्तर सागरोपमनुं अने उत्कृष्टथी अढार सागरोपमनु नवमा आणंत देवलोकनुं जघन्यथी अढार सागरोपम अने उत्कृष्टथी ओगणीस सागरोपम दसमां प्राणत देवलोकनुं जघन्यथी ओगणीस सागरोपम् अने उत्कृष्टथी वीस सागरोपमनुं. अगीआरमा आरण देवलोकनु जघन्यथी वीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी एकवीस सागरोपमनुं बारमां अच्युत देवलोक जघन्यथी एकवीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी बावीस सागरोपमनुं आयुष्य छे पहेली ग्रैवेकनुं जघन्यथी बावीस सागरोपम अने उत्कृष्ट त्रेवीस सागरोपम बीजी ग्रैवेकनुं जघन्यथी त्रेवीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी चोवीस सागरोपम त्रीजी ग्रैवेकनुं जघन्यथी चोवीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी पच्चीस सागरोपमनुं चोथी ग्रैवेकनु जघन्यथी पच्चीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी छव्वीस सागरोपमनुं पांचमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी छव्वीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी सत्तावीस सागरोपमनुं छट्टी ग्रैवेकनुं जघ-

न्यथी सत्तावीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी अट्ठावीस सागरोपमनुं. सातमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी अट्ठावीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी ओगणत्रीस सागरोपमनुं. आठमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी ओगणत्रीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी त्रीस सागरोपमनुं. नवमी ग्रैवेकनुं जघन्यथी त्रीस सागरोपम अने उत्कृष्टथी एकत्रीस सागरोपमनुं. हवे पांच अनुत्तर विमानमां वीजय, वीजयंत, जयंत, अपराजीत, ए चारनुं जघन्यथी एकत्रीस सागरोमनुं अने उत्कृष्टथी तेत्रीस सागरोपमनुं, अने पांचमां सर्वार्थसीद्धनुं जघन्य अने उत्ष्टकृथी तेत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य हाय छे.

पहेलो आरो वेसते त्रण पल्योपमनुं आउखुं उतरवे ब पल्योपमनुं. बीजो आरो वेसते वे पल्योपमनुं उतरते एक पल्योपमनुं. त्रीजो आरो वेसते एक पल्योपमनुं उतरते पूर्व क्रोड वरसनुं. चोथो आरो वेसते पूर्व क्रोड वरसनुं उतरते सवासो वरसनुं पांचमो आरो वेसते सवासो वरसनुं उतरते वीस वर्षनुं. छट्टो आरो वेसते वीस वरसनुं उतरते सोळ

वर्षनु ए उतरता आरा छे

पहेलो आरो बेसता सोल वरसनुं आवखु उतरता बीस वरसनु बीजो आरो बेसता बीस वरसनुं अने उतरता सवासो वरसनु आउखुं त्रीजो आरो बेसता सवासो वरसनु अने उतरता पूर्वक्रोड वरसनुं चोथो आरो बेसता पूर्वक्रोड वरसनुं अने उतरता एक पल्योपमनु पाचमो आरो बेसता एक पल्योपमनुं अने उतरता ब पल्योपमनुं छट्टो आरो बेसता बे पल्योपमनु अने उतरता त्रण पल्योपमनुं ए छ आरा चडता छे ए आयुष्य द्वार हवे ओगणीसमु पर्याप्ति द्वार कहे छे आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति इंद्रिय पर्याप्ति श्वासोश्वास पर्याप्ति भाषा पर्याप्ति, मन पर्याप्ति ए छ पर्याप्ति छे तेमां नारकी, भुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी, वैमानीक, मनुष्य अने तीर्यंच ए सोल दडके छ ए पर्याप्ति पाच स्थावरने चार पर्याप्ति, आहार–शरीर–इंद्रीय अने श्वासोश्वास ए चार, बे इंद्री, ते इंद्री, चौरींद्री, अने असन्नी पचेंद्रीने मन विना पांच पर्याप्ति होय छे, ए पर्याप्ति द्वार हवे

वीसमो आहार द्वार कहे छे. ओजा आहार रोमा आहार अने कवल आहार एम त्रण प्रकारना आ- हार छे तेमां—नारकी—भुवनपती—व्यंतर, ज्योतीषी— वैमानीक अने पांचस्थावरो ए ओगणीस दंडकोने ओजा आहार अने रोमा आहार एम बे आहार होय छे, अने बे इंद्री—ते इंद्री—चौरिंद्री तथा तीर्यंच अने मनुष्य ए पांच दंडके त्रणे आहार होय छे. जीव चवे ते वखते—एक—बे—त्रण समय सुधी अणाहारी उपज्या पछी आहारी होय ए आहार द्वार.

---

अथ एकवीसमुं गतिद्वार.

गति—गमन करवुं—कया दंडकनो जीव कया कया दंडके जाय एम जे कहेवुं ते अहिं गतिद्वार जाणवुं.

नारकी जीवो नारकीमांथी नीकळी, गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्य एम बे दंडकमां जाय छे. दशभुवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने सौधर्म तथा इशान देवलोकना देवो भवांतरे, पृथ्वीकाय, अप्का- य, वनस्पतिकाय, पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्य एम

पाच दडके जाय, तथा सनत् कुमारादिसहस्रार पर्यं-
तना देवो गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य एम बे दंडके
जाय, ने सहस्रारथी उपरना देवलोकना देवो एक
गर्भज मनुष्यनाज दडके जाय छे पृथ्वीकाय, अप-
काय,वनस्पतिकाय तथा बेइंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरि
द्रिय ए छ दडकना जीवो, भवातरे पाच एकेंद्रिय,
त्रण विगलेंद्रिय, तथा तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्यना
मळी दश दडकने विषे जाय अने वाउकाय तथा ते
उकायनाजीवो ए उपर कहेला दश दडकमाथी एक
मनुष्यना दंडक सिवाय बाकीना नव दंडकने विषे
जाय छे गर्भतिर्यंच पचेंद्रिय अने गर्भज मनुष्यना
दडकमांथी सख्याता आयुष्यवाळा जीवो पोताना
कर्मानुसार २४ दंडकमां जाय तथा असख्याता आ-
युष्यवाळा तो तेर देवतानाज दंडके जाय छे सख्याता
आयुष्यवाळा गर्भज मनुष्यमांथी वज्रऋषभनाराच
सघयणना धणी कोइक जीव आठे कर्म खपावीने
सिद्धगति मांहे पण जाय छे एम सामान्ये चोवीसे
दंडकना जीवोनीगति कही

हवे चोवीसे दंडकना जीवोनी गति पांचसेंने त्रेसठ जीवभेदने विषे कहे छेः—पहेलेथी छट्ठी नारकीना जीवो आयुक्षये नारकीमांथी नीकळीने पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्यपर्याप्ता, पंदर कर्मभूमिनां गर्भजमनुष्य अपर्याप्ता तथा पांचगर्भजतिर्यंचपर्याप्ताने पांचगर्भजतिर्यंचअपर्याप्ता एवं चालीशजीवभेदने विषे जाय, तथा सातमी नारकीथी नीकल्यां जीवो तो पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ताने पांच गर्भज तिर्यंच अपर्याप्ता एमदशजीवभेदने विषे जाय छे. दशभुवनपति, सोलव्यंतर, पंदरपरमाधामी, दशतिर्यग् ज्रंभक, दशज्योतिषी, सौधर्म, इशान अने एक किल्वीषिया एम चोसठ जातिनां देवोमांथी नीकल्या जीवो, पंदर कर्मभूमिनागर्भज मनुष्य अने पांच जातिना गर्भज तिर्यंच तथा बादर पृथ्वीकाय, बादर अपकायने बादरप्रत्येकवनस्पतिकाय मळी त्रेवीसपर्याप्ता तथा त्रेवीस अपर्याप्ता एवं छेताळीस भेदमां जाय छे. सनत कुमारथी मांडीने सहस्त्रार पर्यंत छ देवलोकना देवो, बे किल्वीषिया जातिना देवो अने नवलोकांतिकना

देवो एम सत्तर जातिना देवोमांथी नीकल्या जीवो, पांच गर्भज तिर्यंच अने पदर कर्म भूमिना मनुष्य नामळी वीस पर्याप्ता तथा वीस अपर्याप्ता एवं चाळीस भेदमा जाय छे नवमा आणत देवलोकथी मांडीने बारमा अच्युत देवलोक सुधीना बार देव लोकना देवो अने नव ग्रैवयक तथा पाच अनुत्तरवि मानना देवो एसर्वे मळीने अढार देवलोकना नीकल्याजीव, ते पदरकर्म भूमिना मनुष्यमां जाय छे नारकीनो एक दंडक तथा देवताना तेर दंडक मळीने चौद दंडकनी गति कही जीवमात्र उत्पति काळे अपर्याप्तावस्थाए होय अने पछीथी पर्याप्ता थाय, ए अपेक्षाए अहीं नारकी तथा देवतानी गति पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता जीवभेदे कहीछे तो ते करण अपर्याप्ता जाणवा करण अपर्याप्ता जीव अवश्य पर्याप्ता थायज, तथा संग्रहणी विगेरेमां कह्युं छे के नारकी तथा देवता चवीने पर्याप्ता तिर्यंच अने मनुष्य थाय एमां कोइ विरोध नथी

पृथ्वीकाय, अपकाय, वनस्पतिकाय तथा बे

इंद्रिय, तेइंद्रिय अने चौरिंद्रिय एवं छ दंडकना जीवो आयुक्षये आप आपणा दंडकमांथी नीकळीने, पंदर कर्म भूमिना गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता, एकसोनेएक समुर्च्छिम मनुष्य अने अडताळीसतिर्यंचना ए सर्वे मळीने एकसोने ओगणाएंशी जीवभेदने विषे पोतपोताना कर्मानुसार जाय छे. तेउकाय अने वाउकाय ए बे दंडकना नीकळ्या जीव. अडताळीस भेदना तिर्यंचमां जाय छे. एवी रीते बावीस दंडकनी गति कही.

गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एवा जलचरजीवो आठमांथी बारमा देवलोके, नव ग्रैवेयके अने पांच अनुत्तर विमाने जाय नहि माटे सर्व पांचसे ने त्रेसठ जीवभेदमांथी ए अढार स्थानकना पर्याप्ता तथा अपर्याप्तामळी छत्रीस जीवभेद बादकरता बाकीना पांचसेंने सतावीस जीवभेदमां जलचर जीवो जाय छे. गर्भजउरपरिसर्पजीवो उपर कहेला पांचसेंने सत्तावीस जीवभेदमांथी सातमी अने छठ्ठी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी चार भेद वर्जीने बा-

कीना पाचसेंने त्रेवीस जीवभेदमां जाय छे गर्भज थलचर जीवो ( चोपगा ) उपर कहेला पांचसेने सत्तावीस जीवभेदमांथी सातमी, छठी अने पांचमीनारकीनापर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी छ भेद वर्जी ने बाकीना पाचसे ने एकवीस जीवभेदने विषे जाय छे गर्भज खेचर जीवो उपर कहेला पाचसेंने सतावीस जीव भेदमाथी सातमी, छठी, पाचमी अने चोथी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी आठ भेद व जीने बाकीना पाचसेंने ओगणीस जीवभेदमा जाय छे गर्भज भुजपरिसर्पजीवो उपर कहेला पाचसेंने सत्तावीस जीव भेदमाथी सातमी, छठी, पाचमी, चोथी अने त्रीजी नारकीना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळी दश भेद वर्जीने बाकीना पाचसेने सत्तर जीव भेदमां जाय छे हवे असंज्ञी तिर्यच पंचेंद्रिय जीवो आयुक्षये निकलीने त्रणसेंने पंचाणु भेदने विषे जाय तेना नाम कहे छे;—दश भुवन पति, सोल व्यंतर, पंदर परमाधामी, दशतिर्यग् जृंभक, छप्पन्न अंतर द्वीपना मनुष्यो, पहेली नारकी अने पंदर कर्म भू-

मिना मनुष्यो एवं एकसोने त्रेवीस पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मळीने वसेंने छेताळीस तथा एकसोने एक समुर्छिम मनुष्यो अने अडताळीस भेद तिर्यंचना गणतां त्रणसेंने पंचाणुं जीवभेद थया तेमां असंज्ञी तिर्यंच पचेंद्रियनी गति जाणवी. एवं त्रेवीस दंडकनी गति कही.

मनुष्यना दंडके गति कहे छे. प्रथम समुर्च्छिम मनुष्य आयुक्षये, समुर्च्छिम मनुष्यमांथी नीकळ्या, पंदर कर्म भुमीज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्म भुमिज अपर्याप्या, एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य अने अडताळीस भेदना तिर्यंच एवं एकसोने ओगणाएंसी जीवभेदमां जाय छे पंदर कर्म भुमिना गर्भज मनुष्योमांथी जीवो नीकळीने पांचसेंने त्रेसठ जीवभेदमां जाय छे. त्रीस अकर्म भुमिना मनुष्यमांथी नीकळ्या जीवो, दशभुवनपति; सोल व्यंतर, पंदर परमाधामी, दशातिर्यग् ज्रंभक, दश ज्योतिषी, एक किल्वीषिया अने सौधर्म तथा इशान ए बे देवलोक मळी चोसठ जीवभेदमां [illegible]

थी नीकळ्या जीवो, दश भुवनपति, सोलव्यंतर, पंदर परमाधामी अने दश तिर्यग जृंभक एम एकावन जीवभेदमा जाय छे इति गतिद्वार

---

अथ बावीसमुं आगतिद्वार

आगति—आगमन—कया दडकने विषे कयाकया दडकना जीवो आवीनें उपजे एम जे कहेवु तेनु नाम अहिं आगतिद्वार जाणवु

नारकी तथा देवताना मळी चौद दडकने विषे एक तिर्यंच पचेंद्रिय अने बीजा मनुष्य एम बे दडक मांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय एम त्रण दडकने विषे एक नारकीवर्जीने बाकीना त्रेवीशें दंडकमांहेथी जीवोमाथी उत्पन्न थाय छे तेउकाय, वाउकाय, बे इंद्रिय, ते इंद्रिय अने चौरिंद्रिय एम पांच दंडकने विषे थावरना पांच, विगलेंद्रियना त्रण, तिर्यंच पचेंद्रिय अने मनुष्य एम दश दंडक माहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे तिर्यंच पचेंद्रियना दंडकने विषे चो

वीशे दंडकमांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. मनुष्यना दंडकने विषे. तेउकाय अने वाउकाय सिवाय बाकीना बावीश दंडकमांहेथी जीवो आवी उत्पन्न थाय छे. एम सामान्य चोवीशे दंडकनी आगति कही.

हवे चोवीशे दंडके, पांचसे त्रेसठ जीवभेदमांथी आगति कहे छे—पहेली नरके. पंदरकर्मभूमीज गर्भज मनुष्य, पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय अने पांच समुर्च्छिमतिर्यंच पंचेंद्रिय एम पच्चीशभेदना जीव आवी उपजे. बीजी नरके. पंदर कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस भेदना जीव आवी उपजे. त्रीजीनरके. पंदर कर्म भूमिज गर्भज मनुष्य तथा गर्भज जलचर, थलचर, उरपरिसर्प अने खेचर एम ओगणिश भेद मांहेथी जीव आवी उपजे. चोथी नरके पंदरकर्मभूमिज गर्भज मनुष्य तथा गर्भज जलचर थलचर अने उरपरिसर्प एम अढार भेदमांहेथी जीव आवी उपजे.पांचमी नरके पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य तथा जलचर अने उरपरिसर्प एम सत्तर भेदमांहेथी जीव आवी

उपजे छठ्ठीनरके पद्र कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य अने गर्भज जलचर एम सोल भेद मांहेथी जीव आवी उपजे सातमी नरके पण पंद्र कर्मभुमिजग-र्भज मनुष्य अने जलचर एम सोलभेदमाहेथी आवी उपजे नरकने विषे अपर्याप्ता जीवो जाय नहि ए प्रकारे नारकीना दंडके आगति कही

दशभुवनपति, सोल व्यंतर, पद्र परमाधामी अने दशतिर्यगजृंभक ए एकावनजातिना देवोनेविषे एकसो एक क्षेत्रना गर्भज मनुष्यपर्याप्ता, पांचगर्भज तिर्यंच पर्याप्ता अने पांच असंज्ञी तिर्यंच पंचेंद्रिय एम एकसोने अगियार भेदमांहेथी जीव आवी उपजे दश प्रकारना ज्योतिषी अने सौधर्म एम अगियार जातीना देवोने विषे पद्र कर्मभूमिज गर्भज मनुष्य, त्रीस अकर्मभुमिज गर्भजमनुष्य अने पाच गर्भज तिर्यंच एम पचास भेदमाहेथी जीवो आवी उपजे बीजा ईशान देवलोकने विषे पंदरकर्मभुमि, पांचहरि वर्ष, पाच रम्यक, पाचदेवकुरु ने पाच उत्तरकुरु एम पात्रीस क्षेत्रना गर्भज मनुष्यो तथा पांचगर्भजतिर्यंच एम चालीश भेदमाहेथी जीव आवी उपजे पहेला

किल्वीषिया जातिना देवोने विषे पंदर कर्मभुमि,पांच उत्तरकुरुने पांच देवकुरु एवं पचीस क्षेत्रना गर्भज मनुष्यो तथा पांचगर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम त्रीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. त्रीजाथी आठमासुधी छ देवलोक, नव लोकांतिक अने बे किल्वीषिया एम सत्तर जातिना देवोने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य अने पांच गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय एम वीस भेदमांहेथी जीवो आवी उपजे. नवमा आणंत देव-लोकथी मांडीने पांच अनुत्तर विमान पर्यंत्ना अढार देवलोकने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्यना भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. एवी रीते एक नार-कीनो दंडक तथा तेर देवताना दंडक मळीने चौद दंडके आगति कही.

पृथ्वीकाय, अपकाय अने वनस्पतिकाय ए त्रण दंडकनेविषे अडतालीसभेदना तिर्यंच, एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य तथा पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनु-ष्य पर्याप्ता,पंदर कर्मभुमिना गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता तथा पंदर परमाधामी, दश भुवनपति, सोलव्यंतर, दशातिर्यग् जृंभक,दश ज्योतिषी, सौधर्म तथा इशान

अने एक किल्बीपिया जातिना देवो एम सर्वे मळी घर्सेने ब्रेंताळीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे ते उकाय, घाउकाय, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चौरिंद्रिय अने असंज्ञीतिर्यंच पंचेंद्रियने विपे एकसोनेएक समुर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंद्र कर्मभुमिज मनुष्य पर्याप्ता, पंद्र कर्म भुमिज मनुष्य अपर्याप्ता अने अडताळीस भेदना तिर्यंच एम एकसोने ओगणाएंसी भेदमांहेथी जीव आवी उपजे गर्भज तिर्यंच पंचें-द्रिय एवा जलचर, थलचर, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचरने विपे एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य अपर्याप्ता, पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता, पंदर कर्मभुमिज मनुष्य अपर्याप्ता, अडताळीस भेदना तिर्यंच तथा पंद्र परमाधामी, दश भुवनपति, सोलव्यंतर, दश तिर्यग् जृंभक, दश ज्योतिप, त्रण किल्विपीया नव लोकांतिक अने सौधर्मथी मांडीने आठमा सहस्रार पर्यंत् देवलोक तथा सात नारकी एम सर्वे मळीने घर्सेने सडसठ जीवभेद मांहेथी जीव आवी उपजे ब्रेवीस दंडके आगति कही

समुर्च्छिम मनुष्यने विपे पंदर कर्म भुमिज ग

नुष्य पर्याप्ता, बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर प्रत्येक वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, सुक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म अपकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सुक्ष्म साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता, बादर साधारण वनस्पतिकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता त्रण विकलेंद्रियना पर्याप्ता अपर्याप्ता, तथा वीस तिर्यंच पंचेंद्रियना अने एकसोने एक समुर्च्छिम मनुष्य एम सर्वे मळीने एकसोने इंकोतेर भेदमांथी जीवो आवी उपजे. पंदर कर्म भुमिज गर्भज मनुष्यने वीषे उपर कहेला एकसोने इंकोतेर जीवभेद तथा नव्वाणु देवताना भेद अने पहेलीथी छट्ठीनारकी सुधीना नारकी एम सर्वे मळीने बसेंने छोंतेर भेदमांहेथी जीव आवीउपजे. त्रीस अकर्म भुमिना मनुष्यने विषे पंदर कर्मभुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता अने पांच गर्भज तिर्यंच पर्याप्ता मळी वीस भेदमांहेथी जीव आवी उपजे. छप्पन्न अंतर द्वीपना मनुष्यने विषे पंदर कर्म भुमिज गर्भज मनुष्य पर्याप्ता तथा पांच गर्भज ‌तिर्यंचपर्याप्ता अने पांच समुर्च्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय

पर्यांता एम पच्चीसभेदमांहेथी जीव आवी उपजे-
एवी रीते चोवीस दंडके आगति कही

---

त्रेवीसमुं वेद द्वार कहे छे

स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुंसक वेद नारकी स्था-
वर अने त्रण विगलेंद्री एनव दंडके एक नपुंशक
वेद होय छे, दसभुवन पती, व्यंतर, ज्योतीषी, अने
वैमानीकने, स्त्री वेद अने पुरुष वेद एम बे वेद होय
मनुष्य अने तीर्यंच पचेंद्रीने त्रणे-वेद होय ए वेद
द्वार हवे चोवीसमो भुवन द्वार कहे छे प्रथम नरके,
त्रीस लाख नरकावासा बीजी नरके, पचीस लाख
नरकावासा त्रीजी नरके, पंदर लाख नरकावासा-
चोथी नरके, दस लाख नरकावासा पांचमी नरके,
त्रण लाख नरकावासा छट्ठी नरके, पांच उणा एक
लाख नरकावासा अने सातमी नरके, पांच नरका-
वासा सर्वे मलीने चोरासी लाख नरकावासा छे, प-
हेली नरके तेर पाथडा, बीजी नरके अगीआर पाथ
डा, त्रीजी नरके नव पाथडा, चोथी नरके सात पा-
थडा, पांचमी नरके पांच पाथडा, छट्ठी नरके त्रण
पाथडा अने सातमी नरके एक पाथडो, सर्वे मलीने

ओगणपचास पाथडा छे. पहेली. रत्नप्रभा, बीजी शर्करा प्रभा, त्रीजी वालुका प्रभा, चोथी पंकप्रभा, पांचमी धुम प्रभा, छट्ठी तम प्रभा, सातमी तमतमा प्रभा. रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाखने अेंसी हजार जोजन, शर्करा प्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाखने बत्रीस हजार जोजन, वालुका प्रभा पृथ्वीनो पींड एक लाखने अठ्ठावीस हजार जोजन, पंकप्रभा पृथ्वीनो पीं-ड एकलाखने वीस हजार जोजन, धुमप्रना पृथ्वीनो पींड एकलाखने अढार हजार जोजन, तमप्रभा पृ-थ्वीनो पींड एकलाखने सोलहजार जोजन, तमत-मा प्रभा पृथ्वीनो पींड एकलाखने अढार हजार जोजन, ए साते नारकीनुं जाडपणुं जाणवुं. रत्नप्रभा पृथ्वीनो पींड एकलाख अेंसीहजार जोजन छे तेमां. थी एकहजार जोजन हेठे मुकी अने एकहजार जो-जन उपर मुकी वच्चे एकलाखने इठ्ठोतेर हजारनुं पोहोलापणुं ते मांहे नरकावासा छे. अने तेमां दस भुवन पतीना भुवन छे, जघन्यथी जंबु द्वीप जेवडा मध्यमथी संख्याता जोजन प्रमाण अने उत्कृष्टथी असंख्याता जोजनना छे. हवे उपर एकहजार जोज-ननुं मुकेलुं छे तेमांथी सो जोजन हेठे अने सो जो-

जन उपरनु मुकी वाकी वचमा रहेला आठसो जोजनमां आठ व्यंतर देवोना भुवनो छे ते जघन्यथी भरतक्षेत्रना प्रमाणवाला, मध्यमथी महाविदेह क्षेत्रना प्रमाणवाला अने उत्कृष्ट जंबुद्वीप जेवडा मोटा होय छे वली उपरना भागमां सो जोजन रहेलुं छे तेमांथी हेठे दस जोजन अने उपर दस जोजन मुकी वचमां रहेला ॲंशी जोजननी पहोलाइमां आठ वाणव्यंतर देवोना नगर छे ते जघन्यथी भरतक्षेत्र जेवडा अने उत्कृष्टथी जंबुद्वीप जेवडा होय छे सुक्ष्म पांच स्थावरो चौदे लोकमां व्यापेला छे. बादर पांच स्थावरो, विगलेंद्री तथा तीर्यंच पंचेंद्री लोकमां ठसो ठस छे, मनुष्य अढीद्वीपमां पीसतालीस लाख जोजन मांहे छे हवे पांच ज्योतीषीना भेद कहे छे समभुतला पृथ्वीथी सातसेने नेवु जोजन उचा जइए तो त्यां प्रथम तारा छे ते उपरे दस जोजन आवे सूर्य छे, ते उपरे त्रण जोजन आवे ब्रहस्पति छे, ते उपरे त्रण जोजन आवे मंगल छे, ते उपरे त्रण जोजन आवे सनीसर छे एटले एकसो दस जाजन मांहे ज्योतीषीना असंख्याता विमानो छे त उपरे

एक राज उंचो सुधर्मा अने इसान देवलोक छे, सु-
धर्मा देव लोकमां बत्रीस लाख विमान, बत्रीस
लाख देहेरा, अने तेमां जीन बिंब सत्तावन क्रोडने
साठलाख छे. इसान देव लोके, अट्ठावीसलाख वि-
मान अने अट्ठावीस लाख देहेरा छे, तेमां जीनबिंब
पचास क्रोड अने चालीसलाख छे. सनतकुमार देव
लोके बारलाख विमान अने बारलाख देहेरा छे,
तेमां जीनबिंब एकवीस क्रोडने साठलाख छे, मां-
हेंद्र देव लोके आठ लाख विमान अने आठ लाख
देहेरा छे, तेमां जीनबिंब चौद क्रोडने चालीसलाख
छे. ब्रह्मदेव लोके चारलाख विमान अने चारलाख
देहेरा छे, तेमां जीनबिंब सातक्रोड अने वीसलाख
छे, लांतक देव लोके, पचास हजार विमान अने
पचास हजार देहेरा छे, तेमां जीनबिंब नेवुलाख छे.
सुक्र देवलोके चालीसहजार विमानने चालीसहजार
देहेरा छे, तेमां जीनबिंब बहोंतेरलाख छे. सहसार
देवलोके छ हजार विमानने छ हजार देहेरा छे, तेमां
जीनबिंब दसलाख ऐंसीहजार छे. आणंत अने प्रा-
णंत देवलोके चारसे विमान अने चारसे देहेरा छे,

तेमां जीनबिंब पहोतर हजार छे आरण अने अ-च्युत देवलोके त्रणसें विमान अने त्रणसे देहेरा छे तेमा जीनबिंब चोपन हजार छे प्रथम त्री के एक-सो अगीआर विमानने एकसो अगीआर देहेरा छे, तेमा जीनबिंब त्रणसेनेत्रीस, बीजे त्रीके एकसो सात विमान अने एकसो सात देहेरा छे, तेमा जीन बिंब बारहजार आठसोने चालीस, त्रीजे त्रीके एक सो-विमान एकसो देहेरा अने तेमां जीनबिंब बारहजार, पाच अनुत्तर विमान पाच विमाने, पाच देहेरा तेमा जीनबिंब छसें छे सर्व मलीने विमान चोरासी लाख सत्ताणुंहजार नेत्रेवीस छे एटला देहेरा तेमा जीनबिंब एकसो क्रोड बावन क्रोड चोराणुंलाख चुंमालीसहजार सातसेंने साठ एउर्ध्व लोकनो सर-वालो छे हवे भुवनपतीनी सम्ख्या कहे छे चमर ईंद्रने चोत्रीसलाख भुवन, बलईंद्रने त्रीसलाख भुवन, घरणेंद्रने चुमालीस लाख भुवन, भुतानेंद्रने चालीस लाख भुवन, वर्णुदेवने अडत्रीस लाख भुवन, वणु-दालीने त्रीसलाख भुवन, हर्षितने चोत्रीस लाख भुवन, हरीसेहने त्रीसलाख भुवन, अग्निसेहने चा-

लीसलाख भुवन, अग्नि मानवने छत्रीसलाख भुवन, पुरणीने चालीसलाख भुवन, विसष्टने छत्रीसलाख भुवन, जलकंतने चालीसलाख भुवन, जलप्रभने छत्रीसलाख भुवन, अमितगनीने चालीसलाख भुवन, मरीगवाहनने छत्रीसलाख भुवन; विलंबने चालीस लाख भुवन, प्रभजनने, छेंतालीसलाख भुवन, घोसने पचासलाख भुवन, महा घोसने छेंतालीसलाख भुवन, सर्व इंद्रने सात क्रोडने बोंतेरलाख भुवन एटला देहेरा तेमां जीनबिंब तेरसे नव्यासी क्रोडने साठलाख छे. तीर्छा लोकमां बत्रीसहजार अने ओगणसाठ देहेरा तेमां जीनबिंब त्रणलाख एकाणुंहजार त्रणसेंवीस छे. व्यंतर अने ज्योतीषीमां असंख्याता जीनाबिंब छे, एना भुवन अने देहेरा गणवा मां न आवे. हवे त्रणभुवनना देहेरानी संख्या कहेछे आठ क्रोडने सत्तावनलाख ओगणत्रीस हजार नेव्यासी एटला देहेरां, तेमां जीनाबिंब, पंदरसेने बेतालीस क्रोड अठावनलाख छत्रीसहजार अने एंशी एटला त्रणभुवनमां जीनाबिंब जाणवा. सर्वार्थ सीद्धथी बार जोजन सीद्ध सीला छे ते लांबी अने पहोली पीसतालीसलाख जोजन छे वचमां आठ जोजन

जाडी छे छेहे अगुलना असंख्यातमां भाग जेटली पातली छे, मांखीनी पांख जेवी ते उपरे एक जोजनमां सीद्धो छे गाउने छहे भागे अथवा जोजनना चोवीसमा भागे जइए ते यारे सीद्ध परमात्मा आवे ते सीद्ध परमात्मानी अवगाहना त्रणसे तेत्रीस घनुष्यने पत्रीस अंगुलनो प्रमाण छे एवा श्री सीद्ध परमात्मा छे तेमने माहारो समय समय नमस्कार होजो ए भुवन द्वार ॥ हवे पत्तीसमो प्राण द्वार कहेछे प्राण दस छे, फरस इंद्री रसइंद्री, घ्राण इंद्री, चक्षु इंद्री, श्रोत इंद्री, मनोबळ, वचन बल, कायबल, श्वासोश्वास, आउखु, नारकी, दसभुवनपती, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक, तीर्यच पचेंद्री अने मनुष्य ए सोल दडके दस प्राण होय छे पांच स्थावरने च्यार प्राण फरस इंद्री, कायबल, श्वासोश्वास अने आउखुं तेइंद्रीनें सात प्राण, फरस इंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री, कायबल वचनबल, श्वासोश्वास अने आउखु चौरींद्रीने आठ प्राण फरस इंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री चक्षुइंद्री, कायबल, वचनबल श्वासोश्वास अने आउखु असंज्ञी पंचेंद्रीने नव प्राण फरस इंद्री, रसइंद्री, घ्राणइंद्री. चक्षइंद्री. श्रोतइंद्री, कायबल.

वचनवल, श्वासोश्वास अने आउखुं, ए प्राणद्वार—हवे छवीसमुं संपदाद्वार कहेछे. संपदात्रेवीस छे, चक्र रत्न, दंडरत्न, खडगरत्न, कांगीणीरत्न, मणीरत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, ए सातरत्न एकींद्री छे. गाथापती पुरोहितरत्न, सेनापतिरत्न, वार्धिकरत्न, गजरत्न, अश्वरत्न, स्त्रीरत्न, ए सात पंचींद्रीरत्न छे. तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वलदेव, वासुदेव, केवली, साधु, श्रावक, अविरति—समकित दृष्टि, मांडलिकराजा, ए त्रेवीस संपदा. पेलीनरकनो नीकल्यो सात एकींद्री विना वाकीनी—सोलसंपदा पामे. बीजी नरकनो नीकल्यो पंदर संपदा पामे, सतएकींद्री अने चक्रवर्ती विनानी त्रीजी नरकनो नीकल्यो, सातएकींद्रीरत्न, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, विना तेर संपदा पामे. चोथी नरकनो नीकल्यो. सात एकीद्रीरत्न, तीर्थंकर, चक्रवर्ती बळदेव, वासुदेव, विना बार संपदा पामे. पांचमी नरकनो नीकल्यो सात एकीद्रीरत्न, तीर्थंकर चक्रवर्ती बळदेव, वासुदेव, अने केवली, विना अगीआर संपदा पामे. छट्ठी नरकनो नीकल्यो, सात पंचेंद्री रत्न, श्रावक, अविरती समकित दृष्टि, ए दस संपदा पामे. सातमी नरकनो नीकल्यो, अश्वरत्न गजरत्न,

अविरती समकित दृष्टि, ए त्रण संपदा पामे दस भु-
वनपती, व्यंतर, ज्योतीषीए बार दंडकमांथी नीक-
ल्यो, तीर्थंकर अने वासुदेव विना एकवीस संपदा
पामे पृथ्वी, अप, वनस्पति, तीर्यंच पचींद्री अने
मनुष्य ए पांच दंडकमांथी नीकल्यो, तीर्थंकर, च-
क्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव विना ओगणीस संपदा
पामे तेउकाय, वाउकायनो नीकल्यो, सात एकीं-
द्री रत्न अश्व रत्न, गज रत्न, ए नव संपदा पामे
बे इंद्री ते इंद्री, चौरींद्रीनो नीकल्यो, तीर्थंकर, च
क्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, केवली, विना अढार स
पदा पामे वैमानीकमां सुधर्मा, इशान देवलोकनो
नीकल्यो, त्रेवीस संपदा पामे त्रीजा देवलोकथी
आठमा देवलोक सुधीनो नीकळी, सात एकींद्री
रत्न विना सोल संपदा पामे नवमां देवलोकथी न
वग्रैवेयक सुधीनो नीकल्यो सात एकींद्री रत्न, अश्व
रत्न, गजरत्न, ए नव विना चौद संपदा पामे पांच
अनुत्तर विमाननो नीकल्यो तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बळ-
देव, केवली, साधु, श्रावक, मांडलीकराजा, अविर-
ती समकित दृष्टि, ए आठ संपदा पामे ए संपदा
द्वार—सत्तावीसमो धर्मद्वार कहेछे नारकी, दससुवन

पती, व्यंतर, ज्योतीषी, वैमानीक, पांच स्थावरो, त्र-
ग विगलेद्रीए वावीस दंडके धर्म नथी. तीर्यंय पंचीं-
द्री अने मनुष्यने करणी रुप धर्म छे. ए धर्मद्वार--
हवे अट्ठावीसमो योनी द्वार कहेछे पृथ्वी काय, अ-
पकाय, तेउकाय, अने वाउकाय ए चारने सात सा-
तलाख योनी छे प्रत्येक वनस्पतिकायने दस लाख
अने साधारण वनस्पति कायने चौदलाख योनी छे,
बे इंद्री, ते इंद्री अने चौरींद्रीने बेए लाख योनी छे,
तीर्यंय पंचेंद्रीने, नारकीने, देवताने ए दरेकने चार चार
लाखयोनी छे मनुष्यनी चौदलाखयोनी छे ए योनीद्वार
ओगणत्रीसमूं कुल कोडी द्वार कहे छे नारकीनी प-
चवीसलाख कूल कोडी भूवन पतीनी वीस लाख
कुल कोडी, व्यंतरनी बे लाख कुल कोडी, ज्योती-
षीनी बे लाख कुल कोडी, वैमानीकनी बे लाख कुल
कोडी, पृथ्वीकायनी बार लाख, अपकायनी सात ला-
ख, तेउकायनी त्रण लाख, वाउकायनी सात लाख,
वनस्पतिकायनी अट्ठावीस लाख कुल कोडी, बे ई-
द्रीनी सातलाख, ते ईंद्रीनी आठलाख अने चौरीं-
द्रीनी नवलाख कुल कोडी, जलचरनी साडाबारला-
ख, थलचरनी चौदलाख, खेचरनी बारलाख कुल

कोडी, उरपरी सर्पनी दसलाख, अने भुजपरी सर्प-नी-नवलाख कुल कोडी, मनुष्यनी बारलाख कुल कोडी, सर्वे थइने एक कोडने सत्ताणुलाख कुल कोडी थई, ए कुल कोडी द्वार, श्रीसमो अल्प बहुत्व द्वार सर्वथी थोडा गर्भज पर्याप्ता मनुष्य, तेथी बादर अग्नि काय जीव असख्यात गुणाअधिक तेथी वैमानीक देवता असख्यात गुणाअधिक, तेथी दस भुवनपती देवता असंख्यात गुणा अधिक, तेथी नारकीना जीव असख्यात गूणा अधिक, तेथी व्यंतर असख्यात गूणा अधिक, तेथी ज्योतीषी देवता असंख्यात गूणा अधिक, तेथी चौरींद्रीना जीव असंख्यात गुणा अधिक, तेथी तीर्यंच पंचींद्रीना जीव विशेषाधीक, तेथी बे इंद्रीना जीव विशेषाधिक तेथी ते इंद्रीना जीव विशेषाधिक, तेथी पृथ्वीकाय जीव असख्यात गुणा, तेथी अपकायना जीव असंख्यात गुणा अधिक, तेथी वाउकायना जीव असंख्यात गुणा अधिक, तेथी वनस्पतिकायना जीव अनंत गुणा अधिक ए श्रीसमुंद्वार संपूर्ण

दंडकना श्रीसद्वार संपूर्ण समाप्त,

# श्री सम्यक्त्व विचार गर्भित

# श्री महावीरजिनस्तवन.

## ढाल पेहेली एछिंडीकिहां राखी एदेशी.

इगविध दुविध त्रिविध चउविधवलि ॥ पणविध दशविधजाणो ॥ ए समकित शिवतरूनुं बीजक ॥ संप्रति पर्रे मन आणोरे ॥ प्राणी समकित शुध आराधो ॥ जेम शिवमारग साधोरे ॥ प्राणी० सम० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इगविध तुज आणा रुची दुविहा ॥ द्रव्य भावथी कहिये ॥ निश्चयने व्यवहारे अथवा ॥ समकित दुविध सदइयें रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ सदहणा सूधी तुज आगम ॥ परमारथ नवीजाणे ॥ समकित द्रव्यथकी तस कहिये ॥ भावथी तत्व वखाणेरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ मिथ्यापुद्गल शुद्धनु वेदन ॥ समकित द्रव्य कहावे ॥ भावथि तत्व रुचिपण तिमहिज ॥ तत्व रुची परिभावेरे ॥ प्रा० ॥ ४॥ पुद्गलरूपी अरूपी अ पुद्गल ॥ ए पण द्विविधनुं देखे॥ क्षायोपशमिकवेदक पुद्गल॥ शेप अपुद्गल अलेखेरे ॥ प्रा० ॥५॥निश्चय समकित शुभ, आतमनो ॥ ज्ञानादिक परिणाम ॥ अथवा आतम समकित कहिये ॥ गुण गुणी भेद न ठामरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ मिथ्या दृष्टीतणी संस्तवना ॥ त्यागादिक व्यवहार ॥ वलिय निसर्गापर अधिगमथी ॥ बिहुं भेदे निरधाररे प्रा० ॥ ७ ॥ जिम कोई मारग भूलो पंथी ॥ भमतो मारग आवे ॥ कोइक उपदेशादिक योगे ॥ कोइक थाग न पावेरे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ ज्वर पण सहेजे औषध

योगे, भावे, एक न भाय ॥ मारग, ज्वर छ्याते समकित ॥ इणि परें द्विविधे पायरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ जाती समरण प्रमुख थकी जे ॥, वास निसर्ग विचारो ॥ गुरुउपदेश।दिकथी भाख्युं ॥ ते अधिगम विध धारोरे ॥ म० ॥ १० ॥ कारक रोचक दीपकभेदे ॥ त्रिविधे पण ए भाख्युं॥ अथवा उपशम क्षायोपशमिक।।सायिक भेदे दाख्युरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ ते जिम भाख्युं ते तिम कीधुं ॥ ते कारक तस खास ॥ शुभ धर्मोपरि रुचिथी रोचक ॥ नहि, किरिया, अभ्यासरे ॥ मा० ॥ १२ ॥ मिथ्या दृष्टि थको पण पोते ॥ धर्म कथादिक सारे ॥ दीपक परें परने दीपावे ॥ ते दीपक उपचारेरे ॥ मा० ॥ ॥ १३ ॥ ते समकित जिम फरस्युं जीवे ॥ तिम शुभ आगम दाखु शुभ आगम नय न्याय शुधोदधि ॥ परमारथ रस चाखुंरे ॥ माणी समकित शुद्ध अराधो ॥ १४ ॥



ढाल बीजी देवतुन सिद्धांत मीठो ए देशी

वीर जिणेसर साहिब सुणजो ॥ निज सेवक अरदासरे ॥ दीन दयाकर ठाकुर आपो ॥ तुमचरणे मुझ वासरे ॥ वी० ॥ १ ॥ लो कालाशि रह्यो अविनाशी ॥ भाव अनादि अनंतर ॥ ए भव चक्र तण। दुःख बहुला ॥ भोगवियां भगवंतरे ॥ वी० ॥ २ ॥ सूक्ष्मनि गोद वस्यो हुं स्वामी ॥ अनादि वणस्सइ नामर ॥ तिहांमे जीव अनंता पुद्गल ॥ परावर्तविण स्वामिरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ अव्यवहार राशें इम वसिओ ॥ काल अनंतो भोगरे ॥ कर्मपरिणाम नृपति आ देशे ॥ सादरा भव्यता योगेर ॥ वी० ॥ ४ ॥ तिहां एकण सासा

सासमें कीधां ॥ भवसतरे जाजेरारे ॥ ए दुख तुजविण कुण छोडावे ॥ स्वामी मुज भवफेरारे ॥ वी० ॥ ५ ॥ व्यवहाररासी लई उतकर्षे ॥ काल अनंत अनंतोरे ॥ थुल निगोदने पृथवी पाणी ॥ तेज अनिल त्रस जंतोरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ तिहांपण हुं वसिओ तुम पाखें ॥ मिथ्या मतने जोरेरे ॥ हरिहर देव करीमें मान्या ॥ तुं न चढयों मन मोरेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ तेण में छेदन भेदन ताडन ॥ भूख तृषा गुरु भाररे ॥ गर्भवासने जन्म जरा दुख ॥ भोगवियां निरधाररे ॥ वी० ॥ ८ ॥ इम चउगइ भवना दुख फरसी ॥ वार अनंती अनाणीरे ॥ पाला दृष्टांते इग पुद्गल ॥ परावर्त्त स्थिति आणीरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ भव्यपणादिक ने परिपाके ॥ गिरिसरि दुपल न्यायेंरे ॥ अध्यवसाय विशेष करण जे ॥ अनाभोगथी थाय रे ॥ वी० ॥ ॥ १० ॥ ते त्रिविधे भाख्युं तिहां पहेलुं ॥ यथाप्रवृत्त वली बीजुंरे ॥ करण अपूरव नामे कहीयें ॥ अनिवृत्त करण ते त्रीजुंरे ॥ वी० ॥ ११ ॥ यथा प्रवृत्त करणे आयुविणं ॥ सात करम करी खीणरे ॥ कोडा कोडी सायर इगपलनो ॥ असंख्य भाग तिणे हीणरें ॥ ॥ वी० ॥ १२ ॥ इहा कर्कस निविड गुपिलजिम ग्रंथी भेदन दुकर कामरे ॥ कर्म परिणाम जनित घन जीवनो ॥ रागद्वेष परिणामरे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ते ग्रंथी नवी भेदी जीवे ॥ पहेलि इणे संसाररे ॥ वार अनंति अभव्य पण आवे ॥ ग्रंथी लगें निरधाररे ॥ ॥ वी० ॥ १४ ॥ भव्य अभव्य रहे तिहां ग्रंथी ॥ संख्य असंख्यो कालरे ॥ अरिहंतादिकनी ऋद्धि देखी ॥ संयमने उजमालरे ॥ वी० ॥ १५ ॥ तिहा लहे श्रुत समायक द्रव्यें ॥ सेष लाभ नही तासरे

॥ तिहांथी भव्यकेपण जीवे ॥ पण नहि शिवपुर बासर ॥ वी० ॥ ॥ १६ ॥ कोइक भव्य महातम तेहमां ॥ भेदने भवनो पाररे ॥ निश्चित इकार पारें भिम तवखिण ॥ भेदे भल्ल मनोहाररे ॥ वी० ॥ ॥ १७ ॥ करण अपूरव परम विशुध ॥ तिणते भ्रपी आयरे ॥ भेदीने अतर मूहूरतमा ॥ अनिवृत्तिकरणे जायर ॥ वी० ॥ १८ ॥ ॥ मिथ्यामोह तणीस्थिति तेहनु ॥ अतरमुहूरत एकोरे ॥ उदय क्षण उपरें ओलधी ॥ ते समरय सुविवेकरि ॥ वी० ॥ ॥ १९ ॥ अनिवृत्ति करण विसेषे अंतर ॥ मुहूरतकाल अनूपोर ॥ अतरकरण कर तिहा भेपजे ॥ दलिक अभाव सरुपोरि ॥ वी० ॥ ॥ २० ॥ जिमवनदवदग्धे घन उसर ॥ पामी ठाम वल्हायर ॥ तिम मिथ्या वेदन वनदव सम ॥ अतरकरणे थायर ॥ वी० ॥२१॥ अंतरकरण करे मिथ्यातनी ॥ थितिद्युग कहै जिन न्यानेर ॥ अंतरकरण थकी थिति हेठी ॥ पहली मुहूरत मानेर ॥ वी० ॥ २२ ॥ सहुथी उपरली थिति बीजी ॥ तिहां प्रथम स्थिति जाणोर ॥ मिथ्यात्वदलिकनुं वेदन तेहथी ॥ मिथ्यादृष्टी वखाणोर ॥ वी ॥ २३ ॥ अतरमुहूरत ते थितिनाश ॥ नही मिथ्यादल वदोर ॥ अंतरकरणनो प्रथम समय तिहां ॥ लहे उपशम निरपदोर ॥ वी० ॥ २४ ॥ परमानंद अगम होइ भव्यमिम ॥ कांतो कष्क भलेपर ॥ न्यायवत हरप जिम गाह ॥ न्याय धनागम पत्तर ॥ वी० ॥ २५ ॥



॥ ढाल श्रीजी सहिरसमाणी ए देसी

॥ इणीपरें तुमथी समकित करस्युं ॥ वहथी भवथी भवजल

त्तरस्युंरे ॥ धनधन तुम सेवा ॥ एथी मन वंछीत फल लेवा ॥ ते करवा मुज हेवारे ॥ ध० ॥ १ ॥ तिहां कोइ देश विरति तससरसी सर्व विरतिलहे हरिसीरे ॥ ध० ॥ मिच्छामयण कोदर वा सरिखुं ॥ उपशम ओषधपरखुंरे ॥ ध० ॥ २ ॥ जल वस्त्रादिकनेदृष्टांते ॥ तुज आगम कहेखांतेरे ॥ ध० ॥ मिथ्यापुंजकरेत्रणसोधी ॥ उपशम करीशुभबोधीरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ शुद्धने अर्द्ध विशुद्धते वीजो ॥ अविशुद्ध मतरीजोरे ॥ ध० ॥ उपशमथी पडिओमनवामे ॥ क्षायोपशमिक पामेरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ मिश्र तथा मिथ्यात्वने फरसे ॥ करम मतीइम हरसेरे ॥ ध० ॥ वीजुंक्षायोपशमिक कहिये, उपशमपरिपण लहियेंरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ मिच्छापुंजकरीत्रिण निरणे ॥ कोई अपूरव करणेरे ॥ ध० ॥ शुद्धपुज तिहांवेदतोज्ञानी, जिनवचनामृतपानीरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ उपशमपाम्याविण तुजनामे ॥ क्षायोपशमिकपामेरे ॥ ध० ॥ यथाप्रवृत्तिकरणत्रयक्रमथी ॥ अंनरकरणेतुजथीरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ जेलहेउपशम भवजल तरवा ॥ तसत्रणपुंजन करवारे ॥ ध० आलंवन अलहंती ईयल, जिमसंठाण नमूकेरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ मिश्र पुंज अणलाभी उपशमे ॥ तिममिथ्याते ढूकेरे ॥ ध० ॥ उपशमसमकितथीतिणिपडिओ ॥ जइ मिथ्या गुण अडिओरे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इम सिद्धांतीनिज मत खोले ॥ कल्पभाष्यपण वोलेरे ॥ ध० ॥ ते त्रणपुंजनुंसंक्रमभाखुं ॥ जिनवयणेमनराखुंरे ॥ ध० ॥ १० ॥ मिथ्या दलिकथीपुद्गल खिंची ॥ समकितदृष्टीर्त्रिचीरे ॥ ध० ॥ संकरमावे समकित मीसें ॥ शुभपरिणामे हिंसेरे ॥ ध० ॥ ११ ॥ समकितदृष्टी मीस आकर्षी ॥ समकितमाहेहर्षीरे ॥ ध० ॥ संकरमावे मिथ्यादृष्टी

॥ मिथ्यामांगुणपूठीरे ॥ प० ॥ १२ ॥ समकित पुञ्जस मिथ्यामांहे ॥ पण भीमें नवि चाहेरे ॥ प० ॥ मिच्छासीम नहीछे चेहन ॥ वे श्रण पुजछे तेहनेरे ॥ प० ॥ १३ ॥ मिच्छासीण थये होय चुगी ॥ मीस खये एक पुजीरे ॥ प० ॥ क्षायक समकित पुञ्जस मासे ॥ जिन आगम इम भासेरे ॥ प० ॥ १४ ॥ सोचित मयण कोद्रवा थाने ॥ समकित पुञ्जस मानेरे ॥ प० ॥ तेहने विरच तंडुलादिक पासे ॥ शुद्धपणुं तस नासेरे ॥ १५ ॥ तिमज कुशास्त्र कुसीयिकसंगे ॥ तस किरिया मन रंगेरे ॥ प० ॥ मिथ्या, मिश्रित समकित आये ॥ क्ष-सण मिथ्या थायरे ॥ प० ॥ १६ ॥ समकितथी पडिऊमो पाछुं ॥ यसी समकितलहे माछुंरे ॥ प० ॥ ते श्रण पुंज करे विहां फरी ॥ मिच्छ मपूर निधरीरे ॥ प० ॥ १७ ॥ अनिवृत्ति बसें ते रसीमो ॥ समकित पुंजे वसीओरे ॥ प० ॥ समकित परेजिहां विरतिनपावे ॥ क्षायकरण बे आमेरे ॥ प० ॥ करण अपुव्व कामने आगे ॥ वि रतिभणी विहां जागेरे ॥ प० ॥ १८ ॥ अंतरमुहुरतमां तस लापे ॥ निज परिणामे थायेरे ॥ प० ॥ ऊंचो नियम नही विहां कोई ॥ वृद्धि हाणी सम होईरे ॥ प० ॥ १९ ॥ अनाभोग परिणामनी हाणे ॥ गइ विरति नवी जाणेरे ॥ प० ॥ अकृत करण थको ते प्राणी ॥ फिरी लहे विरति सुहाणीरे ॥ प० ॥ २० ॥ आभोगें जे विरतिथी खसिया ॥ तिमज मिथ्यागुणे वसियारे ॥ प० ॥ अंतरमुहूरतमा लहे आछी ॥ जघन्य थकी फिरी पाछीरे ॥ प० ॥ २१ ॥ उत्कर्षे बहुकालें मास्मी ॥ आप करणछे सांखीरे ॥ प० ॥ इणीपर कर्मप्र-कृति हथिमांहे ॥ तिहां जोयो उच्छांहेरे ॥ प० ॥ २२ ॥ कोइ विरत

धित समकेत फेरी ॥ ते लहे मिथ्या वेरीरे ॥ ध० ॥ छठीनरक लगें ते जाय ॥ समय मतें कहेवायरे ॥ ध० ॥ २३ ॥ आऊ बंधविना ऊच्छाहे ॥ फिरी समकित अवगाहेरे ॥ ध० ॥ वैमानिकविण आउ न वांधे ॥ कर्म मती मत सांधेरे ॥ ध० ॥ २४ ॥ समकित पतित कहे मतबांधे ॥ उत्कृष्टी स्थिति बांधेरे ॥ ध० ॥ भिन्न ग्रंथिने आगम न्याने ॥ स्थिति उत्कर्ष न मानेरे ॥ ध० ॥ २५ ॥ इणीपरें भेद मतांतर जाणे ॥ पण संदेह न आणेरे ॥ ध० ॥ निःशांकित तुज वयण आराधे ॥ न्यायें तस गुण वाधेरे ॥ ध० २६ ॥



॥ढालचोथी विनयवहोसुखकार अथवा सालिभद्रभोगीरहो एदेशीछे.॥

॥ दर्शन मोह विनाशथीजी ॥ जेनिर्मल गुणठाण॥ ते समकित ओघे कह्युंजी ॥ ते भवियण हित आणरे ॥ जिन जी तुज आणासु-रंग ॥ मुझ नगमे मिथ्यासंगरे ॥ जि० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ मिच्छा दरसण मोहनीजी ॥ उपशमि उपशमजाण ॥ धुरग्रंथी भेदे कह्युंजी ॥ उपशमश्रेणी प्रमाणरे ॥ जि० ॥ २ ॥ नाश उदीरण मिच्छनोजी ॥ अनुदीरण समठाम ॥ क्षयउपशमथी उपजेजी ॥ क्षयोपशमिका नाम रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ त्रिविधि मोह विनासथीजी ॥ त्रीजुंक्षायिकनाम क्षपकश्रेणी चढतांहुएजी ॥ जेहथी शिवपुर ठामरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ विपाक प्रदेशें वेदवुजी ॥ द्विविध उदय विष्कंभ ॥ उपशमतुं तेहने कहेजी ॥ आगममां थिरथंभरे ॥ जि० ॥ ५ ॥ नाश विपाकोदय -थकी जी ॥ वेदन तेहनुंरे नाम ॥ उपशमि ते नवि संभवेजी ॥ क्षा-

षोपसमिक ठामरे ॥ मि० ॥ ६ ॥ मिच्छा पुग्गल वेदताजी ॥ शुद्ध अशुद्ध तिहां दोप ॥ विपाक प्रदेशोदय यकीजी ॥ अनुक्रम समजी षोयरे ॥ जि० ॥ ७ ॥ अण चउ दुग मिच्छा तणाजी ॥ पुंज खपा-वीरे होय ॥ शुद्धपुंज खपवां विहांजी ॥ अतिम पुग्गल होयर ॥ जि० ॥ ८ ॥ तस वेदन वेदने कह्युजी ॥ वेदक षोयुर नाम ॥ उपशम वमतां पांचमुंजी ॥ सासादन गुण षामर ॥ जि० ॥ ९ ॥ अंतरमुहु-रत एकनी जी॥ उपशम स्थिति उवेस ॥ उत्कर्षे षट आवली जी ॥ जघन्य समय होय शेषरे जि०॥१०॥ अशुद्धपुंज भाषा तणीजी ॥ इच्छायें तिहां तास ॥ अण कसाय उदयें हुयेजी ॥ वेहथी उपशम नाशरे ॥ जि० ॥ ११ ॥ उपशमथी पडतायकाजी ॥ न गयो मिच्छा रे भाव ॥ तावत सासादन कह्युंजी ॥ उपशम स्वाद सहावर ॥ जि० ॥ १२ ॥ अंतरमुहूरत कालनीजी ॥ उपशम स्थिति गुणस्थाण ॥ सासादन षट आवलीजी ॥ वेदक समय प्रमाणरे ॥ जि० ॥ १३॥ स्थिति सागर तेत्रीसनीजी ॥ साधिक क्षायक जाण ॥ षमणी स्थिति छसठी कहीजी ॥ क्षायोपशमिक ठागर ॥ जि० ॥ १४ ॥ उपशम सासादन कह्युंजी ॥ आमव वेल्लार पंच ॥ वेदक एक वेला हुयेजी ॥ तिमहिज क्षायक संचर ॥ जि० ॥ १५॥ चार असंख्य उत्कर्षथीजी क्षायोपशमिक हाय ॥ एवे तस गुणठाणा कह्युंजी ॥ सांभलजो सहु कोय रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ उपशम अडगुण ठाणमोजी, अविरत गुण पदरस ॥ क्षायक गुणठाणे लघेजी ॥ आदिम प्रणविणशेषर ॥ जि० ॥ १७ अविरति गुणठाणा थकीजी ॥ जावत सप्तम ठाण ॥ एक वेदक बीजुं इहांजी ॥ क्षायोपशमिक माणर ॥ जि० ॥ १८ ॥ सा-

सादन सासादनेजी ॥ भाखे अंग उवंग ॥ न्याये शिवसुख ते लहे जी ॥ जशतुज आण अभंगरे ॥ जि० ॥ १९ ॥

---

॥ ढाल पांचमी शांतिसुधारस कुंडमां तुंरमे मुनिवर ए देशी. ॥

धन धन शासन ताहरुं ॥ माहरुं जिहांमन लीनरे ॥ क्षण पण तसविण नविरहे ॥ जिमजल भर विण मीनरे ॥ धन० ॥१ ॥ देश विरति दरशणथकी ॥ पलिय, पहुत्तमां जाणिरे ॥ अनुक्रमे चरण-श्रेणीविहुं ॥ संख्यसायर गुण खाणिरे ॥ धन० ॥ २ ॥ तेहिज भवें हुए तेहने ॥ जेहनेसत्तगखीणरे ॥ चउतियभव उत्कर्पेथी ॥ पुव्वबद्धा उये पीणरे ॥ धन० ॥ ३ ॥ बद्धायु सुर नगरनुं ॥ तेहने तियभव संतरे ॥ आउ असंख्यनर तिरितणु ॥ तसपण चउभवें अंतरे ॥ धन० ॥ ४ ॥ समकित स्थितिहोए ओगथी ॥ अंतरमूहूरत एकरे ॥ साहिय खओवसमासिरी ॥ सायर छासट्ठि छेकरे ॥ धन० ॥ ५ ॥ इग अ-थवा बहु आसरी ॥ दरसणनो उपयोगरे ॥ जघन्य उत्कृष्ट थकी कह्यो ॥ अंतरमूरत भोगरे ॥ धन० ॥ ६ ॥ दरसणलब्धि शुभ सुर-लता ॥ क्षयोपशमादिक रूपरे ॥ अंतरमूहुरत माननी ॥ जघन्यथी कहेजिनभूपरे ॥ धन० ॥ ७ ॥ छासठ सायर सविमली ॥ नरभव हिय उतकृष्टरे ॥ तेहथी उर्द्ध जो नविदिए ॥ समकित रयणने पृष्टरे ॥ धन० ॥ ८ ॥ ते निश्चय शिवपदलहे ॥ ए एकजीवने योगरे ॥ जीवनानाश्रित सर्वदा ॥ दरसणनो उपयोगरे ॥ धन० ॥ ९॥ अंत-रमुहुरत एकनुं ॥ जघन्य अंतरमन आणरे ॥ अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तनं

॥ तस उत्कृष्ट परिमाणरे ॥ धन० ॥ १० ॥ जीव नानाभिव नथि होए ॥ समकित अंतर लेखर ॥ तम आपश्यक हृयिमो ॥ ए अधिकार विशेपर ॥ धन० ॥ ११ ॥ दशविध सहन उपदेशथी ॥ उपशम मशुस्त जे पंचरे ॥ अहम निसग्ग रुइ मेदथी ॥ दशविध वस परपंचरे ॥ धन० ॥ १२ ॥ निसग्गुवएस आणारुइ ॥ सुत्त बीयरुइ अभिरामरे ॥ अभिगमा योग किरियारुई ॥ संखेव धम्म रुइ नामरे ॥ धन० ॥ १३ ॥ गुरुउपदेशविण सहेजथी ॥ जिनवयणे परतीतरे ॥ जेहने तेहने जाणसो ॥ प्रथम निसर्ग रुचि रीतरे ॥ धन० ॥ १४ ॥ तेसवि गुरुउपदेशथी ॥ सदहे जे जण आपरे ॥ ते उपदेशरुचि नर कह्यो ॥ इम तुज आगम थापरे ॥ धन० ॥ १५ ॥ कारण मशुस्त अजाणतो ॥ शुद्ध जिन आणाम सेमरे ॥ तइय आणारुचि तुफरे ॥ मास तुसाविक पेमरे ॥ धन० ॥ १६ ॥ सूत्र भणतो समकितलहे ॥ प्रसन्न प्रसन्न परिणामरे ॥ गोविंद वाचकनीपरे ॥ सुत्तरुई तसनामरे ॥ धन० ॥ १७ ॥ देसरुई समोपसमथी ॥ सम्मरुई विस्तारिरे ॥ उदकमां तेलबिंदुपरे ॥ बीयरुइ मपधारिरे ॥ धन० ॥ १८ ॥ अभिगम रुई सुअनाणने ॥ अरथथकी अवगाहेरे ॥ अंगपइन्न मशुस्तथे ॥ शास्त्र सम्येनिरवाहेरे ॥ ॥ धन० ॥ १९ ॥ द्रव्यना भाव आण्याभिणे ॥ सर्व्व प्रमाणे प्रसेसरे ॥ सर्वनयेथिम तसकर्यु ॥ विच्छार रुई अकलेभर ॥ धन० ॥ २० ॥ दंसणनाण चारित धर्मी ॥ तिमविन यो तप कामरे ॥ सुमति गुपतिकिरियाकसे ॥ तेकिरिया रुनामरे ॥ धन० ॥ २१ ॥ आगम कोविद नवीहुए ॥ कुमय कदिठीपि मुपरे ॥ सले वरुई तेहने कर्यु ॥ जिमचिम्यातिय पुंपरे ॥ धन० ॥ २२ ॥ धम्म

अधम्म प्रमुख दव्व ॥ चरण सुय धम्मना भेदरे ॥ जेजिन भाषित सद्दहे ॥ तेधम्मरुई निरवेदरे ॥ धन० ॥ २३ ॥ एदशविध दरशण कह्युं, उत्तराध्ययनमजाररे ॥ अध्ययने अडवीसमें ॥ न्याय सागर सुखकाररे ॥ धन० ॥ २४ ॥



ढालछट्ठी माइ धन्नसुपनतुंदेशी.

जडजलपणपोते सिच्युकाठनबोले ॥ तससंगतिलोहुं तेहनेपण तसतोले ॥ तेम हुं गुणहीणो तोपण दास तुमारो ॥ अवगुणउवेखी प्रभुजी पारउतारो ॥ १ ॥ तुं गुणमणि दरिओ उद्धरिओं जगजेणे ॥ मुजकांइनतारयो तुज संगतिनही तेणे ॥ अलगो तहिविलगो तुंमुझ दिलथीदेव ॥ अविचलपदआपो ॥ ढीलतणीसीटेव ॥ २ ॥ नहीता मुझ दावे नहीमुकुंकरुंसोर ॥ जालीदिलभींतर धालीकरसुंजोर ॥ जासो किम दीधा, विणशिवसुखजिनराज ॥ सहेजे जो देशो तो रहेशे तुम लाज ॥ ३ ॥ अविनयमुझखमजो हुंछुं मूढअयाण ॥ करतांनविआवे वीनतडीजिनभाण ॥ वालक जेमबोले कालोगहिलोवोल ॥ तेमात पितामन, लागे, अमृततोल ॥ ४ ॥ इणिपरे प्रभुस्तविओ समकित लेशविचारे ॥ आगमअनुसारे मुझमतिने अनुहारे ॥ संवतरुतुरसमुनि चंद्रसंवत्सरजाणी ॥ १७६६ ॥ भादरवेमासे सीतपंचमीगुणखाणि ॥ ॥ ५ ॥ श्रीतपगच्छनायक श्रीविजयरत्नसूरिंद ॥ सुरगुरुजश आगलें करजोडेमतिमंद ॥ तसराजेपंडित उत्तमसागरसीस ॥ कहेन्यायसागर प्रभु पूरोसंघजगीस ॥ ६ ॥

# अथ श्री पंडित उत्तम विजयजीकृत संयम श्रेणीनुं स्तवन

॥ ढाल पहेली प्रथम गोंवालातणेभवेजी एदेशी ॥

केवल ज्ञान दिवाकरुजी ॥ सिद्ध बुद्ध सुखदाय ॥ आतम संपद भोगवेजी ॥ वर्द्धमान जिनराय ॥ गुणोदधि शासन नायक वीर ॥ मेरु महिधर धीर ॥ गुणो० ॥ शास० ॥१॥ एआकणी ॥ मनुष्यभवि संयम फरसतोजी ॥ पाम्यो क्षायक भाव ॥ संयमश्रेणी फूलडेजी ॥ पूजुं पद निष्भाव ॥ गु० ॥ २ ॥ वाचक जसविजये रच्योजी ॥ संक्षेपें सज्झाय ॥ विस्तरि जिन गुण गावतांजी ॥ जीहा पावन थाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ चारकषाय क्षय उपशमेजी ॥ सरव विरति गुणठाण ॥ तेना असंख्य ठाणमांजी ॥ पर्यवनुं परिमाण ॥ गु० ॥ ४ ॥ सर-वाकाश प्रदेशथीजी ॥ अनंत गुणा अविभाग ॥ सुरवकल्पना आण्य-मांजी ॥ भासे हुं मैं भाग ॥ गु० ॥ ५॥ भाग अनन्ते आदिथीजी ॥ बीजे ठाणे वृद्धि ॥ इम अनंत भागवृद्धिमेजी ॥ थानकनि होय सिद्धि ॥ गु० ॥ ६ ॥ अंगुल भाग असंख्यमांजी ॥ जे आकाश प्रदेश ॥ तेता थानक नीपजेजी ॥ कंडक तास निवेस ॥ गु० ॥ ७ ॥ बीजा कंडक ठाणमांजी ॥ आदि असंख्यांस भाग ॥ अनंतानंत भागनाजी ॥ थानक कंडक माण ॥ गु० ॥ ८ ॥ इम नंत भाग वृद्धिनेजी ॥ कंडक कंडक मध्य ॥ ठाण असंख्यांस वृद्धिनाजी ॥ कंडक माने सद्य ॥ गु० ॥ ९ ॥ ते आगेनंत भागनाजी ॥ थानक कंडक मात

॥ तदनंतर संख्य भागनुंजी ॥ थानक एक विख्यात ॥गु० ॥१०॥ ते ऊपर द्वय वृद्धिनांजी ॥ जेता ठाण अतीत ॥ ते कीधे संख्यभागनुंजी ॥ बीज्युं ठाण पवित्त ॥ गु० ॥ ११ ॥ इम वृद्धि द्वय अंतरेजी ॥ कंडक माने इष्ट ॥ असंसंख्यातें वृद्धिनाजी ॥ थानकजिनवर पुष्ट ॥ गु० ॥ १२ ॥ वलि पूरव द्वय वृद्धिनाजी ॥ थानक सरव करेह ॥ आगल गुण संख्यातनुंजी ॥ थानक एक धरेह ॥ गु० ॥ १३ ॥ इम त्रिक वृद्धिने अंतरेजी ॥ गुण संख्यातना ठाण ॥ कंडक माने नीपजेजी ॥ जाणे तुं वर नाण ॥ गु० ॥ १४ ॥ पुनरपि त्रिक वृद्धी तणाजी ॥ पूरी थानक सर्व ॥ असंख्यात गुण वृद्धिनुजी ॥ थानक एक अगर्व ॥ गु० ॥ १५ ॥ चउरंतर चउरंतरेंजी ॥ थानक कंडक मेय ॥ असंख्यात गुण वृद्धिनाजी ॥ पंडीत वीर्य वरेय ॥गु०॥१६॥ उपर वली चउ वृद्धिनाजी ॥ फरसे थानक सार ॥ तदनंतरनंत गुण नुंजी ॥ थानक एक उदार ॥ गु० ॥ १७ ॥ पंच पंच वुद्धी विचेंजी ॥ ठाण एक इक जोय ॥ इम अनंत गुण वुद्धिनाजी ॥ कंडक माने होय ॥ गु० ॥ १८ ॥ उपर वली पंच वृद्धिनाजी ॥ फरसे संयम ठाण ॥ प्रवचन अनुसारें कह्युंजी ॥ पट थानक परिमाण ॥ गु० ॥ १९ ॥ असंख्य लोकाकाशनाजी ॥ प्रदेश ने परिमाण ॥ इक पट थानक ऊपरेंजी ॥ ऊठे वलि पट ठाण ॥ गु० ॥ २०॥ ए संयम गुण ठाणमांजी ॥ जे वरते मुनि सोय ॥ वंद्य अपर भजनापणेंजी ॥ भाष्यकल्पमां जोय ॥ गु० ॥ २१ ॥ पट थानक संयम तणाजी ॥ कहेतां स्तवतां वीर ॥ क्षमाविजय जिन भक्तिथीजी ॥ उत्तम लहे भव तीर ॥ गु० ॥ २२ ॥

---

' ढाल बीजी सुरतीमहीनानीदेशी

वस्तु स्वभाव प्रकाशक भाषित लोगालोग ॥ वीर जगत गुरु भोगवे रत्नत्रयीनो भोग ॥ संयमना पद थानिक सूक्षम बुद्धि गम्य ॥ स्व पर विशेषन इसें थाउं चंत्र सुरम्य ॥ १ ॥ भाग अनंतर वृद्धिना ठाणते कंडक सार ॥ छे यद्यपि ते असंख्यात ठवुं तस बिंदु चार ॥ असंख्य भाग वृद्धिनुं थानक आगल एक ॥ तस ठामें ठवुं एको मन धरी अतिहि विवेक ॥ २ ॥ पढ पद बिंदु अंतर इम होय एकाचार ॥ तदनंतर पद बिंदु सयपर्णा बीस उदार ॥ आगल भाग संख्यातर वृद्धिनो बीओ जाण ॥ इम पद बिया ठवतां मींडां सत परिमाण ॥ ३ ॥ सत बीमा बीस एका मींडा सत समुदाय ॥ भागनी वृद्धि मांहे यथां इवे गुण वृद्धि कराय ॥ संख्यात गुणनी वृद्धिमां तीओ आदि उदार ॥ इम सवि मींडां अंका चिप ठवि त्रिआ चार ॥ ४ ॥ बीस बीमा सत एका पण सय बिंदु मान ॥ असंख्यात गुण वृद्धि भो चोको धुरि मंडाण ॥ इम पद चोका भाणतां तिक बीस द्विक सत जोय ॥ पण सय एकडा मींडा पंचबीससें होय ॥ ५ ॥ इवे अ-नंत गुण वृद्धि पदे ठवि पंचक चंग ॥ पुनरपि पूरब रीतें मींडां अंक सुरंग ॥ तिवार पछी पंचक इम पंचक पद अव थाय ॥ आगें पण पंचबीससें मींडां अंक कराय ॥ ६ ॥ पांचडा चोगडा त्रगडा बगडा एकडा बिंदु ॥ पद थानकनां चंत्रनी संख्या कहे जिनचंदु ॥ पद बीस सय पणसय पंच बीस सय सार ॥ अंका मींडा गणतां सरवा बारहजार ॥ ७ ॥ संयम श्रेणिमां श्रेणि क्षपक सहि शुक्ल ध्यान ॥

ाती करमनो क्षयकरी पाम्यो पंचम ज्ञान ॥ प्रवचनसारनी वृत्तिमां .त्रनी ठवणा दीठ ॥ क्षमाविजय जिन वयणथी उत्तम चित्त पविठ॥८॥

---

ढाल त्रीजी एकवीसानी देशी.

आतम रामीरे, शिव विसरामी नित्यनमु ॥ प्रभुजी स्तवतांरे पाप पोताना निगमु ॥ षटथानिकरे जे अह ठाण परूपणा ॥ सुणो सयणारे वयणा कल्पनी भाष्यना ॥ १ ॥ त्रूटकः–आदि असंख अंस वृद्धिथी कह्यो ॥ भाग अनंत अंस केटलां ॥ हेठथानिक एम पूछत ॥ कइयें कंडक जेतलां ॥ भाग संख्या तह गुण संख्याते अ-संख अनंतह गुण वली ॥ तस प्रथमथी कहे अथ अनंतर ॥ कंडक माने केवली ॥ २ ॥ इत्यनंतरमार्गणा एकांतररे मार्गणा सुणो सवि संतरे ॥ भाग संख्यातेंरे मूल थानकथी तंतरे ॥ हेठे थानिकरे भाग अनंतना भाखीयें ॥ एककंडकरे कंडक वर्गते दाखीयें ॥ ३ ॥ त्रूटक ॥ दाखीयें गुण संख्यातथी वली ॥ असंख अनंत गुणथी तथा ॥ पढम ठाणथी एक अंतर ॥ कंडक वर्ग कंडक यथा ॥ इति एकांतर मार्गणा ॥ एक अंतर मार्गणा कही ॥ सुणो द्व्यंतर मार्गणा ॥ संख्यात गुणथी हेठथानक अनंत भागना सुभमना ॥ ४ ॥ कंडक घनरे, कंडक वर्ग दु, गुणो करो ॥ एक कंडकरे तस संख्या मनमां धरो ॥ दुग अंतररे असंख्य अनंत गुणथी लह्यां ॥ अथ स्थानकरे पूरव पर्रें जाणो कह्यां ॥ ५ ॥ इति द्विकांतरमार्गणा त्रूटकः–त्रिके अंतर कोई पूछे ॥ आदि असंख्य गुण वृद्धिथी ॥ हेठें भाग अनंत केरां ॥ ठाण कहो गुरु वयणथी ॥ कंडक वर्गनुं वर्ग कीजे ॥ कंडक घन त्रिक उपरें

॥ कंडक वर्ग त्रिक एक कंडक ॥ होए ते मनमां धरे ॥ ६ ॥ छठी वृद्धिनार पहेला ठाणथी हेठलां ॥ बीय वृद्धिनार थानक पूरव पेतलां ॥ इति त्रिकांतर मार्गणा, चउरंतररे अनतगुणा दिम ठाणथी ॥ हेठ थानकरे भाग अनंत ना मानथी ॥ ७ ॥ सूक्ष्म, परिमाणथी ते अष्ट कंडक ॥ वर्गवर्गा घन घना ॥ चार कंडक वर्ग आगल ॥ एक कंडक सोभना ॥ इति चतुरंतर मार्गणा, पर्यवसाननी मार्गणा ते ॥ थ थानिक पूर करे ॥ मूलथी संयम ठाण फरसी ॥ वीर विभू केवल वरे ॥ ८ ॥ उपर मध्यथीर संयम थानिक जे मजे ॥ नियमार हेठ चतरी पुनरपी सजे ॥ अंतर्मुहूर्तनीरे वृद्धी हानि ठाणमां ॥ होय मुनि नेर ज्ञानीदेखे ज्ञानमां ॥ ९ ॥ सूक्ष्म ॥ अल्पबहुत्व विचार करतां अनंत गुणना थोडला ॥ तेहथी गुणह असंख्य केरा ॥ कंडक वर्ग कंडक भला ॥ पच्छानुपूर्वि वृद्धि उपर पहन्यायें भावीयें ॥ समाविजय जिन चरण उत्तम भक्तिभावें पावीये ॥ १० ॥

---

### ढाल चोथी रागधन्याश्री कलसरूप

*गायो गायोरे भले वीर जगतगुरु गायो ॥ एआंकणीछे संयम* श्रेणी थानक वर्निधठवणा यंत्र बनायो ॥ अह ठाण परूपण करता ॥ मनुज जनम फल पायोरे ॥ भले० ॥ १ ॥ शुद्ध निरंजन अलख अगोचर ॥ एहिज साध्य सुहायो ॥ ज्ञानक्रिया अवलंबी फरसो ॥ अनुभव सिद्धि उपायोरे ॥ भले० ॥ २ ॥ श्रद्धा ज्ञान स्थ्या छ तोपण ॥ जोनवि जाय पमायो ॥ बंध्य तरु उपमते पामे ॥ संयम ठाणओ नायोर भले० ॥ ३ ॥ जस स्वर चंदन भारनो वाहक ॥

भारनो भागी कहायो ॥ तिनिपरें ज्ञानी संयम हीनो ॥ सदगतीयें नविजायोरे ॥ भलें० ॥ ४ ॥ आश्रव त्यागें संवर परिणति ॥ अविरति सरव उठायो ॥ स्व स्वरूपमां थिरता तेहिज ॥ संयम शुद्ध ठहरायोरे ॥ भलें० ॥ ५ ॥ अनुभव सुरतरु फलने काजे ॥ कीजें आतम अमायो ॥ सन मुखभावें जेह प्रवर्त्तन ॥ तेह निवर्त्त निदायोरे ॥ भलें० ॥ ६ ज्ञानक्रिया दुग चक्रें शोभित ॥ संयम रथ सुखदायो ॥ अनुभव धोरी युत शिव नगरे ॥ जाता विघ्नथायोरे ॥ भलें० ॥ ७ ॥ रायसिद्धारथ वंश विभूषण ॥ तिसलाराणीजायो ॥ अजअजरामर सहेजानंदी ॥ ध्यान भूवनमां ध्यायोरे ॥ भलें० ॥८॥ संवत नंद निधि मुनि चंद्रे ॥ देव दयाकर पायो ॥ प्रथम जिनेसर पारण दिवशे ॥ स्तवना कलश चढायोरे ॥ भलें० ॥ ९ ॥ विजयदेवसूरीस पटोधर ॥ विजयसिंह सवायो ॥ सत्यशिष्याधार कपूरविजयबुध ॥ क्षमाविजय पुण्य पायोरे ॥ भलें० ॥ १० ॥ सूरतमांहे सूरय मंडण ॥ श्रीजिन विजय पसायो ॥ विजयदयासूरिराजे जगपति ॥ उत्तम विजय मल्हायोरे ॥ भलें० ॥ ११ ॥

---

## अथ श्रीतारंगगिरितीर्थमंडन श्रीअजितनाथजिन स्तवन.

ढाळ १ ली.

राग—मेडी उपर मेह झरोखे वीजळी हो लाल—ए देशी.

आणंद अधिक उच्छाह धरी दिलमां घणो हो लाल धरो०
बहुदिननो उमाह सफळ थयो मुझतणो हो लाल सफळ० ॥ १ ॥
भवतारण तारंग अचल जव निरखीओ हो लाल अचल०

मपवारण तारंग अचल मव निरखीमो हो लाल मपल०
हीयडुं हेज विलास धरी घणुं हरखिओ हो लाल धरी० ॥ २ ॥
दंड कलस अभिराम ध्वजाश्युं सोहतो हो लाल ध्वजा०
गगनशुं मांडे वाद प्रासाद मन मोहतो हो लाल प्रासाद० ॥ ३ ॥
कुमारपाळनरिंद परमश्रावक कर्यो हो लाल परम०
धन्य धन्य हेमसूरींद जेणे नृप उद्धर्यो हो लाल जेणे० ॥ ४ ॥
तेणे कीधो कुमारविहार नामे देवकुल मल्ले हो लाल नामे०
महीयलमांहि जयंत आणे त्रिभुवनतिलो हो लाल आणे० ॥ ५ ॥
बेठा अजितजिणंद गजांक मनोहरु हो लाल गजांक०
विजयामात मल्हार सोभागी सुंदरु हो लाल सोभागी० ॥ ६ ॥
पटभद्रनो वनराजि बिराजे बहुपरे हो लाल बिराजे०
कोटिशिला जिहां दीठे भविमन मन हरे हो लाल भवि० ॥ ७ ॥
तारणदेवीनाम अछे रखवाळिका हो लाल अछे०
ए गिरिनी मनोहार भविक सुखदायिका हो लाल भविक० ॥ ८ ॥
च्यार पाजे चढी चढमति दुःख निकंदीये हो लाल दुःख०
भेटी अजितजिनंद सदा आणंदीये हो लाल सदा० ॥ ९ ॥
तोरण थंभ उत्तंग केसरनी कोरणी हो लाल केसरनी०
पुतळीरूप अनूप शोभा अतिघणी हो लाल शोभा० ॥ १० ॥
सिद्धाचलसम एह आनंदपुर पासथी हो लाल आनंद०
सफळ करो अवतार सुदर्शनवासथी हो लाल सुदर्शन० ॥ ११ ॥

---

## ढाळ २ जी.

### राग—नणदलनी देशी.

साहिब अजितजिणंद अवधारीयें, दासतणी अरदास हो;
सा० श्रीतारणगिरिमंडणो, महीमां महिमनिवास हो ॥सा०॥१२॥
सा० गुण अनंत छे ताहरे, तो कां न दिओ एक हो;
सा० तिणगुणथी तुझने मिल्यो, भक्तितणे सुविवेक हो ॥सा०॥१३॥
सा० रयणायर एक रयणडे, देतां न होय हाणि हो;
सा० तिणे नाशे लोकनी आपदा, वाधे सुजसनी वाणी हो॥सा०॥१४॥
सा० सुनजरथी होइ, सेवक शुद्ध सुबोध हो;
सा० तरणिप्रभा पण दुरथी, करे कमलाकरबोध हो ॥सा०॥१५॥
सा० गिरुआ गुणवंता जिके, होय ते समभाव हो;
सा० न्हानां म्होटां नवि गणे, सविने तारे नाव हो ॥सा०॥१६॥
सा० हाथे दोय कुसुमांजली, वासे वाम अवाम हो;
सा० चंद्रज्योति सघळे समी, उंच नीच गुणधाम हो ॥सा०॥१७॥
सा० मेह महीतले वरसतां, न गणे ठाम कुठाम हो;
सा० चंदन निजवासे करी, तरुवर परिमल धाम हो ॥सा०॥१८॥
सा० फलदल जाया बहु करे, पंथीजन विश्राम हो;
सा० वाटे जे सुरतरु फळ्या, उपगारी गुणधाम हो ॥सा०॥१९॥
सा० न्हाना सामुं विशेष जे, साहिबने चित्त होय हो;
सा० निर्गुण पण गुणवंत ते, लोक कहे सहुकोय हो ॥सा०॥२०॥
सा० इम जाणीने तारीये, दीनतडी दिल आण हो;

सा० भावी लाग्या पाउले, तेहने भी करो ताण हो ॥सा०॥२१॥
सा० लोचन लन्के बाहरे, तरीया सेवक लाख हो;
सा० करो तेणे ध्युं आपीयुं, ते प्रभु मुजने दाख हो ॥सा०॥२२॥
सा० चिच परख्यो तो पूरसो, ए निश्चयमहाराज हो;
सा० सेवक पण सुखीयो होये, प्रभुसे साहिब लाज हो ॥सा०॥२३॥
सा० ज्ञानविमल तेजे तपे, प्रभुतासुंदरी साथ हो;
सा० महेर करीने मानीये, वीनतडी जगनाथ हो ॥सा०॥२४॥

कलश

भवभ्रांतिवारण जगततारण, तारगगिरिवरमंडणो,
श्रीअजितजिनवर नाथदिणयर, दुरिततिमिरविहंडणो;
चउतीस अतिशय रयण मणिगण, भवण्णवण रयणायरो,
श्रीज्ञानविमलसूरींदवंदित, सकलमंगल सुहंकरो ॥ २५ ॥



## अथ श्रीराणकपुरतीर्थनुं स्तवन

### ढाळ १ ली

राग—डुंगरधारु—ए देशी

महसमे प्रणमी प्रेमशुं रे लाल, गाउं ऋषभजिणंदरे; मनमोहन म्हारा
सफल मनोरथ माहरोर लाल, उल्लस्यो अंगे आणंदरे मन ॥मह ॥१
त्रिभुवनतिलक सोहामणो हो लाल, मोटो पुहवि प्रासाद र मन०
चमत उंचपणे करी रे लाल, कर गगनशुं वादरे मन० ॥मह०॥२॥

सिद्धनिलयने पहोंचवा रे लाल, उभाव्यो मानुं थंभ रे मन०
जोतां तृप्ति न पामीये रे लाल, छुटीजे भवदंभरे मन० ॥प्रह.॥३॥
नलिनीगुलमविमाननी रे लाल, मांडणी एह अचंभरे मन०
पूतळी मिसे मानु आवीने रे लाल, जोवा थिर थई रंभरे मन. ॥प्रह.४॥
मोटो देश मेवाड छे हो लाल, जिहां राणिकपुर अभिराम रे मन०
पोरवाड तिहां परगडोरे लाल, धन्नोशा जस नामरे मन. ॥प्रह.॥५॥
धन्य धानलदे तेहनीरे लाल, तरुणी पुण्यप्रधान रे मन०
धर्मकारज करी मोटिकारे लाल, अविचल राख्युं नाम रे मन. ॥प्रह.॥६
अट्ठमपोसहे आदरी रे लाल, धरतां धर्मनुं ध्यान रे मन०
सुधर्मवासी सुर कहेरे लाल, वांछित देउं दानरे मन. ॥प्रह.॥७॥
वर मांग्यो देवलतणोरे लाल, अनोपम अतिहि उद्दाम रे मन०
पट्ट आलेखी आपीयोरे लाल, सुरविमान उपमान रे मन.॥प्रह.॥८॥
देपा शिलावटने दियोरे लाल, कोरणी वितथ न होय रे मन०
पत्थरखाण कही तिहां रे लाल, विघन नहि ईहां कोयरे मन.॥प्रह.॥९

ढाळ २ जी.

राग—कोइ लो पर्वत धुंधलो रे लोल—ए देशी.

संवत चौदपंचाणुमां रे लोल, शुभमुहूरते शुभवाररे जिणंदराय.
मोटे मंडाणे मंडावीयो रे लोल, धरणे ऋषभविहार रे जिणंदराय.
॥ आवो आवो श्रीजिन वंदीयेरे लोल ॥ १० ॥ आंचली०॥
भ्रह्मांड माडी मांडणी रे लोल, कीधां वळी पंचमेर रे जिणंद०
ओढो माकार चिहुं दिशेरे लोल, मानुं मोहने करवा जेररे जिणंद०
॥ आवो० ॥ ११ ॥

देहरी चोराशी दीपतीरे सोल, चिहुं दिसे पोळ छे चाररे जिणंद०
लखचोराशीयोनिमे रे सोल, मानुं चौगइभ्रमण निवाररे जिणंद०
॥ आघो० ॥ १२ ॥

चभव सिर थांमा मसा रे सोल, चौदसयां चोवीश रे जिणन्द०
तोरणमोक्ति सोहामणीरे सोल, एक एक दिसे बत्रीसरे जिणंद०
॥ आघो० ॥ १३ ॥

विविधप्रकारे कोरणी रे सोल, पूतळी गणीय न जाय रे जिणंद०
मंडप चार चिहुदिसेरे सोल रगमंडप सुखदाय रे जिणंद०
॥ आघो० ॥ १४ ॥

सहस्त्रकूट तेमा सोहीये रे सोल, अष्टापद प्रतिबिंबरे जिणंद०
नवनिधिपरे नव भूहरां र सोल, तिहां अनेकजिनबिंबरे जिणंद०
॥ आघो० ॥ १५ ॥

रायणतळे प्रभुपादुका र सोल, मानु त्रिहुं भूमि चत्तगर जिणंद०
॥ आघो० ॥ १६ ॥

स्वर्गे शाश्वत देहरां रे सोल, तिम पृथ्वीतळ एह र जिणंद०
ए समसर पे आणीये र सोल, तेहवो न दीठो कोयर जिणंद०
॥ आघो० ॥ १७ ॥

ढाळ ३ जी

राग—चोरणीमां—ए देशी

संवत चौत्सचाळुए रे, शुचि पंचमी शुभ योग,
मासवैशाखवर्णी भली रे, आणी बहुविध रंग रे
॥ श्रीजिन सेवीये ॥ १८ ॥

सुविहिततपगच्छ यतिपति रे, श्रीसोमसुंदरसूरि;
करे प्रतिष्ठा अतिभली      ाजते मंगलतूर रे ॥ श्री० ॥ १९ ॥
मूळनायक श्रीऋषभजी रे, चउमुख थापे रे तेह;
समवसरणनी थापना रे, चउगतिवारक तेह रे ॥ श्री० ॥ २० ॥
परिकरयुत त्रिहुं भूमिका रे, त्रिभुवननो उद्धार;
चउवीससहसने माजनेरे, बिंबप्रतिष्ठा तेणीवाररे ॥ श्री० ॥ २१ ॥
नाटक विविधप्रकारनां रे, ओछव अतिघणा थाय;
संघ आवे दशदिशितणा रे, भेटी पावन थाय रे ॥ श्री० ॥ २२ ॥
अचल हुओ अवनीतळे रे, तीरथ महिमावंत;
धरणविहार मनोहरुरे, जस गुणनो नहि अंतरे ॥ श्री० ॥ २३ ॥
आजलगे तेह चैत्यनी रे, पूजा भक्ति विशेष;
दिन दिन थाये दीपती रे, थापे पुण्यनी रेख रे ॥ श्री० ॥ २४ ॥
चिहुं दिशना संघ सामटा रे, जो आवे समवार;
पण संकटता नवि हुवेरे, एहवो चैत्यविस्ताररे ॥ श्री० ॥ २५ ॥
शाश्वत चैत्य ते सांभरे रे, दीठे इणि प्रासाद;
जन्म सफल तेहनो हुवेरे, नाशे सवि विषवाद रे ॥ श्री० ॥ २६ ॥
चार प्रासाद पासे अछे रे, पुण्यतणा ते ठाम;
आजलगे थाता अछे रे. बिंबप्रासादना काम रे ॥ श्री० ॥ २७ ॥
तेहनुं ध्यान सदा धरे रे, समकित निर्मळ थाय;
ज्ञानविमल सुखसंपदा रे, पामे सुजस सवाय रे ॥ श्री० ॥ २८ ॥



# अथ श्रीजिनपूजाविधिनुं स्तवन

## दुहा

श्रीजिनसदननिवासिनी, समरी शारदमाय;
पंचमअंग धुरे भणी, ब्राह्मीलीपी सुखदाय ॥ १ ॥
देशविरतिनी मांडणी, होइ समकित शुद्ध;
जिनपूजाथी योग शुभ, वाधे निर्मल बुद्ध ॥ २ ॥

## ढाळ १ ली.

प्रणमिय पासजिणंद पाय, पभणुं पूजाविधि;
प्रथम भविकजन भावशुं, ए जोइ भूमि शुद्ध ॥
अत्यभ मालन दुर्गछनीय, कुल संगति वरजे;
जे जिनभक्ति हीण होय, तेहने पण तरजे ॥ ३ ॥
शुभस्थानक जोइ करी, दूषण सवि छंडे;'
घर पेसतां वामभागे, देरासर मंडे ॥
भूमियकी दोढ हाथ ऊंच, सिंहासन स्थापे;
समचोरस संठाण जोइ, जिम शिवसुख आपे ॥ ४ ॥
शुक्र वत्स ने राहु परिघ, शूल योगिनी काल;
वैधृत ने व्यतिपात त्यात, इत्यादिक टाळे ॥
शुभमुहूर्त गुरुआलम्बें, धुरि कलश पराले;
मोलव्रतशुं जिनराज बिंब, घरमा पधरावे ॥ ५ ॥
तारा राशि नक्षत्र योनि, गण नाडीवर्ग,
जिनने नामे आपणे, होय जे जिनरंग ॥

चैत्रमासे होइ शोक रोग, जेठे धन हाणि;
आषाढे तिम भाद्रमासे, होय शून्नुं ठाण. ॥ ६ ॥
आश्विन कार्तिक मास होय, क्लेशादिक दुःख;
माघे भय होय अग्निनो, मागशरे धन सुख ॥
श्रावण ने वैशाख पोष, फागुण सुखकार;
ए मासे जिनराजबिंब, ठवतां जयजयकार. ॥ ७ ॥
दीपोत्सव विजयादि दिवस, जेह लोकप्रधान;
तिण दिवसे पण थापना, कीजे सावधान ॥
काष्ठलेप पाषाण चित्र, लोह दंतनी दाखी;
देरासरे मूलबिंब ते. स्थापन नवि राखी ॥ ८ ॥
अंगोपांगे हीन होय, खंडित विणपरिकरे;
नासिका दोषे दुष्ट जेह, नवि तेह देरासरे ॥
पूरवे चौपद नाश होय, इशाने भमता;
अग्निकुणे भय अग्निनो, वायुकूणे संचित ॥ ९ ॥
नैऋते निर्धन कार जाणी, उत्तरे होय हाणि;
जिनवर सन्मुख टाळवी, दिशि विदिशि प्रमाण ॥
दक्षिण पश्चिम सन्मुखे, जिनवर बिंब स्थापे;
सुख संपत्ति संतान सुख, जगमां जस व्यापे ॥ १० ॥
वास्तुकशास्त्र प्रमाण जाण, वकवटतपयंत्र;
ग्रंथ विवेकविलास देखी, तिम स्थापन मंत्र ॥
शंका कंखा दोष पोष, न धरे मिथ्यात;
इम देरासर घरे ठवे, धन तेहनी मात ॥ ११ ॥

दुहा

एवे जिणबिंबि पूजा करे, श्रावक निर्मळभक्ति;
संक्षेपि ते विधि कहुं, जेहनी जेवी शक्ति ॥ १२ ॥

ढाळ २ जी

राग—रत्नमाळानी देशी

प्रथम पूरबदिशे अहवा उत्तरदिसे, सन्मुख स्नान भवि आचरे ए;
शुद्धनिर्मळजळे तेलमर्दन करे, यतनाशु नीर तिहां वावरे ए ॥१३॥
केश दिये कांकसी भक्ति मनमां वसी, बेसी परनालिय बाजठे ए;
पोतिक पहेरीने जीवयतना होइ, तिमपरे स्नानजल परठवे ए. ॥१४॥
चरणे चाखडी ठवे मुखे जिनगुण स्तवे, निर्मळ पोतिक पहेरतो ए;
एकपट निर्मळ उत्तरासंगजु, आठपडकोश मुखे धारतो ए ॥ १५ ॥
वस्त्र दोय जिनवर पुजतां नर धरे, नारीने वस्त्र त्रण दाखीये ए;
नारी नरवस्त्रनो पालवो नवि करे, ज्ञान जिनभक्तिशुं राखीये ए १६
मन वच काय धन वस्त्रने भूमिका, पूजा उपगरण शुद्धि साचवी ए;
साधवे बांधवे कठिन निजकर्मने, भविकजन सिद्धिसाधन भणी ए॥१७॥
विधियकी चंदन ओरसीये घसी, भरी कुरि रजतकचोलडी ए,
जिनवरबिंबने पुजणी पुंजीने, पछी न्हवे कनकजलकलसडे ए ॥१८॥
अंगलुहणां तिहां दोय हर्षे धरे, चदन बाव्की करी करे ए;
शुद्धकर्पूरमांहि भेळवी भेळवी, द्विगुण केसररसु भरे ए ॥ १९ ॥
वेल जायेम मोगरेल चूआ भलि, अरगजा अबीर तिहां विस्तरे ए;
पुर्व उत्तरदिसे मुखे जिनपूजतो, भविकनर एणीपरे मतवरे ए ॥२०॥

दक्षिणसन्मुखे मरणनो भय कहे, अग्निसंतापभय संभवे ए;
नैऋते विन्घ संतानसुख पश्चिमे, वायु चोथे ठामे सुत हरे ए ॥२१॥
पूर्वदिशे संपदा उत्तरे फळ बहु, इशाने धर्मनी वासना ए;
इणिपरे जाणतो भविकजन पूजतो, छेदतो बंध दुःखपाशनाए॥२२॥
चरण अंगुष्ठयुग जानुयुग करयुग, अंसयुग मस्तके निलवटी ए;
कंठे हृदयस्थळे उदर नाभिमंडळे, अंगे नवतिलक दक्षिणवटीए॥२३॥
विविधयुक्तें करी भक्तिशुं नवनवी, भातिनी आंगीय विरचिये ए;
सातनारक नर तिरिगति नवविध, दुःखटळे जो जिन चरचीए ए॥२४॥

दुहा.

तदनंतर जिनवरतणे, कंठे कुसुमचि दाम;
गुणसंयुत गुंथी ठवे, करतो भाव प्रणाम ॥ २५ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—जिनगुण गावे हो नागकुमारी—ए देशी.

जिनगळे ठावे हो कुसुमची माळा, जिनगुण गावे हो भावविशाला.
॥ जिन० ॥

जिन गुण गावे हो देइ देइ ताला,
जिन गुण गावे हो के भावे त्रिकाला,
चंपक केतक दमणो मरुओ जाइ जुइवाला;
नाग पुन्नागप्रियंगु अशोक, मोगर मालतीमाला ॥ जि० ॥२६॥
कृष्णागरु कस्तुरी अंबर, कुंदरुष्क घनसारो;
तुरुष्क सेलारस वाती सुंदर, धूप घटी विस्तारो ॥ जि० ॥२७॥

जिम जिम धूप दहे तिम दुरगति, दोहग दुरमति नासे;
धूप दशांग करंतां भविने, परिघलपाप पणासे ॥ जि० ॥ २८ ॥
लोकालोकप्रकाशक दीपक, तुं जिन इम करे दीवो;
दीपकपूजा करतो भविजन, शुभ परे ते चिरंजीवो ॥ जि० ॥२९॥
श्रण पुंज करी इणिपरे मांगे, जिनमारग अनुसरतो;
दर्शन ज्ञान चारित्र श्रण आपो, अक्षतपूजा करतो ॥ जि० ॥३०॥
स्वर्गादिक फल जिनपूजानां, तेह भणी फळ ढोवे;
श्रीफळ पुगीफळ नाणगादिक, परभव दुःखी न होवे ॥ जि० ॥३१॥
विविध सुखडी नैवेद्यपूजा, करतो भने इम रासे;
शिवसुख सुखडली मुझ आपो, जिम भविबाळक चासे ॥जि०॥३२॥
दक्षिणदिशे प्रतिमाने दीवो, डावे धूप करीजे;
फल नैवेद्यादिक जिनसन्मुख, भूपण जिनकरे दीजे ॥ जि० ॥३३॥
साठ नव श्रण कर गुरु मज्झिम, जघन्य अवग्रह समे;
ध्यान चैत्यवंदन नरदाहिण, तिम वामा वामांगे ॥ जि० ॥ ३४ ॥
चंद्रमविण पूजा नवि दासी, ते कीजे परभाते;
वासपूजा मध्यान्हे सांजे, धूप दीप बहुभावे ॥ जि० ॥ ३५ ॥
जिनप्रदक्षिणा दीये भविक जे, श्रण सात एकवीस;
चउगइ भ्रमण न होवे तेहने, ए फल वीसवावीस ॥ जि० ॥ ३६॥
अष्टप्रकारे जे जिन पूजे, अष्टकर्म होवे दूरे;
आठ अनंता गुण ते पामे, शिवसुख होय हजूर ॥ जि० ॥ ३७ ॥
अष्टमंगल इस परे नित्य होवे, अष्टमहासिद्धि पावे;
आठे प्रवचनमाता सुधी, तेहनी ते जिन गावे ॥ जि० ॥ ३८ ॥

दुहा.

जिन पूजंता चित्त धरो, एह अवस्था तीन;
छद्मस्था ने केवली, सिद्धस्वरुप अदीन ॥ ३९ ॥

ढाळ ४ थी.

राग सामेरी—समवसरण सुरवाजां वाजे–ए देशी.

छद्मस्थाना त्रण प्रकार, जन्म राज्य श्रामण्य उदार;
भाविजे तिम सार, इंद्र उच्छंगे लिए जिम सुरगिरि;
कलश धरी रहे जिणपरे सुरवर, शिर उपरे नीर ठवंत. ॥ ४० ॥
जिणवेलाए कीजे पखाळ, निर्मळनीरे कलश विशाळ;
जन्मावस्था ( जन्माअवस्था ) सार ॥
चंदन केशरने घनसार, पुष्प चढावे जेणीवार;
राज्यावस्था सार ॥ ४१ ॥
केशरहित शिर मुख पेखीजे, श्रामण्यावस्था जाणीजे;
साधुपणुं भावीजे, जिनमुख निरखी रीजे ॥
बीजी अवस्था केवलीकेरी, चउविध सुर रहे जिनने घेरी;
वाजे मंगल भेरी ॥ ४२ ॥
प्रातिहारज आठ विराजे, कोडि गमे तिहां वाजां वाजे;
वयरादिक सवि भाजे ॥
रूप्य हेम मणि त्रण गढ सोहे, त्रणभुवननां मनडां मोहे;
परखदा दशदोइ बोहे ॥ ४३ ॥
चउमुख चउविध धर्म प्रकाशे, बार छत्र रहे अधर आकाशे;
चोवीस चामर खास ॥

चमयपासे कंकेलि उदार, कुसुमवृष्टि सुरमाला धार;

धर्मध्वज तिहां चार ॥ ४४ ॥

सहसजोयणनो धस विस्तार, पादपीठ सिंहासन सार;

अतिशय चोत्रीश ने च्यार ॥

सुर चमरीधाळे तिहां अंग, अमरकुमर करे नाटक चंग;

मान अधिक मन रंग ॥ ४५ ॥

सत्तरभेद मच पूजा कीजे, केवली अवस्था इम भावीजे;

समकितनु फल लीजे ॥

सिद्ध अवस्था करीए एह, पर्यंकासन बेठा जेह;

काउस्सग्गे रह्या तेह ॥ ४६ ॥

आप तर्या तेम अमने तारो, अष्टकर्मनो लेश निवारो;

समकित देइ सुधारो ॥

जगचिंतामणि तुं जगनाथ, जगबांधव तुं शिवपुर साथ;

जगगुरु तुंहि अनाथ ॥ ४७ ॥

परमपुरुष मह तुं पुरुषोत्तम, दुरे कर्यो तें मोहमहातम;

शरणागत मन शरणो ॥

अजरअमर मह तुं अविनाशी, तिम करो अमने सुखविलासी;

जो वच तुम साबासी ॥ ४८ ॥

चैत्यवंदन करता भावीजे, गर्भावासे जिम नवि आवीजे;

इणिपरे विनति कीजे ॥

संघने धीरविमल जिनदेव, इणिपरे जे करे जिननी सेव,

नय कहे ए नितुमेव ॥ ४९ ॥

दुहा.

जे जिनभक्तिये दुमणो, न धरे जिनशुं नेह;
नररुपे ते नारकी, नय कहे तेहनी देह ॥ ५० ॥
भावसहितभक्तिये करी, नवि कीधी जिनसेव;
दासपणुं परभव लहे, नय कहे ते नितुमेव ॥ ५१ ॥

ढाळ ५ मी.

राग आशावरी—नमो रे नमो श्रीशत्रुंजयगिरिवर—ए देशी.

श्रीजिनपूजा विधिशुं कीजे, शिवसुख स्हेजे लीजेरी;
जिन तुज मुखमुद्रा निरखंतां, मुज तनमन अतिरीझेरी ॥श्री०॥५२॥
पंचवरण वर कुसुमची माला, जे जिनकंठे आरोपेरी;
ते नरने शिववनिता वरवा, वरमाळा गळे ओपेरी ॥ श्री० ॥ ५३॥
कुसुमकलीनो छेद न कीजे, पत्रभंग नवि कीजेरी;
उत्तमस्थानक तरुवरकेरुं, उत्तमगंध ग्रहीजेरी ॥ श्री० ॥ ५४ ॥
कीडे खाधुं कुवसने वांध्युं, पगे लाग्युं भोंये पडीयुंरी;
नाभिथकी जे हेठुं धरीयुं, तिम शिर उपर चढीयुंरी ॥ श्री० ॥ ५५ ॥
चासी राख्युं लोके फरश्युं, कोह्युं करथी खलिउंरी;
गंधविहुणुं ओणुं दुणुं, अवर देवने माळउंरी ॥ श्री० ॥ ५६ ॥
पत्र कुसुम एहवुं वरजीजे, पहेरीजे शुभवेशजी;
उज्वलनिर्भळ वस्त्र अखंडित, जेह सुपोत सुपेसजी ॥ श्री० ॥ ५७ ॥
एणीपेरे विधिशुं जे जिन पूजे, धूजे पातिक तासजी;
नय जिनगुणपूजानो रसीयो, भवेभवे तुमपय दासजी ॥श्री०॥५८॥

वस्तु

स्नात्र चंदन दीप मस धूप कुसुम नैवेद्य ध्वज चामरे,
वास अक्षत देवद्रव्यवृद्धि वाजित्र नाटक गीत थुति;
पत्र छत्र फल अतिप्रसिद्ध ॥

पसविभूषण अतिघणां, एम एकवीस प्रकार;
नय करे पूजी जिनवा, जिन ! एमने भवजल तार ॥ ५९ ॥

दुहा

आठ सत्तर एकवीसविध, एकसतने वळी आठ;
एक सहसआठ उपर, एम पूजाविधि पाठ ॥ ६० ॥
हवे जिनपूजा फळ कहुं, लही ग्रंथनी साख;
जिनप्रतिमा जिनसारिखी, ए गणधरनी भाख ॥ ६१ ॥

ढाळ ६ ठ्ठी

राग—कडखानी देशी

भविकजन भावशुं जिनपपूजा करा, जिम तरो एह भवजलधि सोहिलो;
देशविरतितणुं कम्म एह मोटकुं, सुगुणमां तेह नर गणिए पहिलो
॥ भविक० ॥ ६२ ॥

चोथफल देहरे जायवा मन धरे, छठ फल उठमे गमन भणीजे;
सात अठ चरण साहमो होवे जिनघरे, तेहने अठ्ठमनुं फल कहीजे
॥ भविक० ॥ ६३ ॥

दसमफल अर्धपंथे चार द्वादसमफल,पन्न(१५)उपवास फल देख दीठे;
मासफल पूजतां चउत फल एणिपर, सफल पूजायकी पाप निठे
॥ भविक० ॥ ६४ ॥

सोगणुं पुण्य जिनबिंबने पूजतां, सहसगुणु चंदने लेप करतां;
लखगणुं कुसुमची माळ आरोपतां, अनंतगणुं पुण्य नाटक करंतां.
॥ भविक० ॥ ६५ ॥

प्रहसमे पूजथी सर्व संकट टळे, मध्यदिने जन्मना पाप नाशे;
संध्यपूजाथकी सात भव पाप सवि, नादपूजाथकी दुःखपणासे.
॥ भविक० ॥ ६६ ॥

नीरपूजाथकी अंगनीरोगता, चंदने सुजश सौभाग्य वाधे;
वस्त्रथी विस्तरे सुतसुतापरिकरा, फळथकी देवताआयु साधे.
॥ भविक० ॥ ६७ ॥

धूपथी परजले पाप संताप सवि, दीपथी दलिद्रनी कोडि जावे;
अक्षते ज्ञानचारित्रधन संपजे, छूटककुसुमथी राज्य पावे.
॥ भविक० ॥ ६८ ॥

वासपूजाथकी धर्मनी वासना, नाटके तीर्थपद होय हाथे;
पंचवर्णी कुसुमदाम जे गळे ठवे, शिववधू तेहने ग्रहे बाथे.
॥ भविक० ॥ ६९ ॥

मंगलदीपथी मंगलमालिका, आरतीए अरतिउचाट भांजे;
छत्र चामरथकी भविकजन सहजथी, तेजप्रताप महपूर राजे.
॥ भविक० ॥ ७० ॥

ज्ञान लहे द्रव्यपूजाथकी धन घणुं, ध्वजथकी सर्वमांहि मान पामे;
जिनप आभरणपूजाथकी भविजना, चक्रवर्त्यादिपद इंद्र पामे.
॥ भविक० ॥ ७१ ॥

इणीपरे रजते सोवम अगी मुस, जे करे भावस्तु लाम जाणी;
एम महुफलनर्ती देवपूजा छती, सकलविधि शास्त्रमांह मखाणी
॥ भविक० ॥ ७२ ॥

श्राद्धदिनकृत्यनी वृत्ति पूजाप्रकरण–ग्रन्थस बहुभयमां विधि सुणीजे;
मापमारुप संक्षेपथी ए कह्यो, देवपूजा समये ए भणीजे
॥ भविक० ॥ ७३ ॥

श्रच्छतपगच्छवरगगनदिनमणिसमो, श्रीविजयप्रभसूरींद राजे;
पंडितराय कविधीरविमलतणो, शिष्य नयविमल कहे भविक काजे
॥ भविक० ॥ ७४ ॥

ढाळ ७ मी

राग धन्याश्री

पूजो रे भवि भाव धरीने पूजो;
शिवसुखदायक त्रिभुवननायक, ए सम देव न दूजोर ॥भवि०॥७५॥
इच्छा होय जो शिवसुखकेरी, जो भवभयथी धूजो;
तो भक्तिशुं तन मन मेळी, श्रीजिनवरपद पूजो र ॥ भवि० ॥७६॥
बहुभवसंचित चित्तमांहेथी, मिथ्यामतरज धुंजो;
श्रीजिनचरण शरण करी अहनिश, कर्मनृपतिशुं झुझोरा भवि ॥७७॥
मोहविडंबन महिलामाया, नाख्यमांहे मम मूंझो;
जिम अपरे परभवमंगलमां, उपन्निनोह अरंझोर ॥ भवि० ॥ ७८ ॥
शिवसुखसाधन जिनवर पुजन, कामगवी घर दुझो;
नय कहे ए हितशीख अम्हारी, मानी भवि मतिसुझो र
॥ भवि० ॥ ७९ ॥

कलश ( दुहा ).

चंद्र (१) वेद (४) भोजन (१७) वरिस (१७४१) विजयदशमी बुधवार;
पुजाफल रचना रची, समीशहेर मोझार. ॥ ८० ॥
वीरचंद्र आग्रह करी, कीधो एह स्तवन्न;
भणतां नवनिधि संपजे, सुणतां चित्त प्रसन्न. ॥ ८१ ॥

॥ इति श्रीजिनपूजाविधिस्तवनं सम्पुर्णम् ॥

---

## अथ श्रीज्ञानपंचमीतिथिनुं स्तवन.

ढाळ १ ली.

राग-फागनी देशी.

प्रणमी श्रीगुरुपदकज, ज्ञाननी प्राप्ति उपाय;
पंचमीतप महिमा कहुं, सुणजो भविसमुदाय ॥
त्रिगडे बेठा मिठा, गिरुया वीरजिणंद;
दे उपदेश अनेकथा, निसुणे सुरनरवृंद ॥ १ ॥
ज्ञानलोचन सुविलासे, लोकालोकप्रकाश;
भक्ति मुक्तिदातार छे, ज्ञान परमसुखवास ॥
ज्ञान विना नर पशु कहे, लहीए कांइ न भेद;
ज्ञानदीपक समज्ञानी, सर्वाराधक वेद ॥ २ ॥
देश आराधक किरिया, ज्ञान विना ते अंध;
ज्ञानसहित जे किरिया, ते सोनुं ने सुगंध ॥
दक्षिणावर्त्तक शंख, दुधे भरियो तेह;

ज्ञानी श्वासोश्वासमां, कठिन करम करे छेह ॥ ३ ॥
ज्ञानसहित कृतकिरिया, ते तरिया भवसिंधु;
महानिशीथमां अक्षरा पंचमी ज्ञानमबंध ॥
भगवतीप्रमुख आगममांहि, ज्ञानतणा बहुमान;
पहेलुं ज्ञान अनुभवे, किरिया तास भधान ॥ ४ ॥

ढाल २ जी

राग—साहेलडीनी देशी

पंचमीतपविधि सांभलो साहेलडी रे, जिम पामो भवपारतो;
जिनगणपरमुनि उपदिशे ॥सा०॥ भविषण ने हितकारतो ॥ ५ ॥
मागशिर माघ फागुण भला ॥सा०॥ जेठ आषाढ वैशाखतो;
षट कांवी ब्ली लीजीए ॥सा०॥ शुभदिने सद्गुरु साखतो ॥ ६ ॥
वहर देव जुहारीये ॥सा०॥ गीतारथ गुरुवंदतो;
पोथी प्रक्ति पूजीए ॥सा०॥ मभावना माही नांदितो ॥ ७ ॥
उभयटंक आवश्यक करो ॥सा०॥ देववंदन त्रणे काळतो;
ब्रह्मचर्यने पाळीए ॥ सा० ॥ आरंभसचित्तपरिहारतो ॥ ८ ॥
पंचमीस्तवन गुरु कहे ॥सा०॥ पचसे पोथ उपवासतो;
त्रिविध चउविध गुरुने मुख ॥सा०॥ अथवा पोषध खासतो ॥ ९ ॥
गीतारथ पासे पढे ॥ सा० ॥ मन धरे तस उपगारतो;
जावज्जीव उत्कृष्टपदे ॥सा०॥ पंच वरस मास सारतो ॥ १० ॥
जघन्यपदे एम जाणीए ॥सा०॥ अथवा ब्ली एक वर्षतो;
उजमणे आराधीये ॥सा०॥ जिम पहोंचे मनहर्षतो ॥ ११ ॥

ढाळ ३ जी.

राग–शारद बुद्धिदाइ–ए देशी.

निज शक्तिने सारु, उजमणुं करो वारु;
वित्त खरचो मोटे मने, प्रतिमा भरावो चारु ॥
ज्ञान दर्शन चारित्र टीका, त्रिणे ज्ञानने पुजे;
पापना पुजीने गुरुपरे काउसग्ग कीजे ॥ १२ ॥

त्रूटक.

पांच एकावन लोगस्सकेरो, पंच पंच वस्तु ढोवे;
पाठा परति रुमाळ ने लेखण, वासकुंपी ने जोवे ॥
पाटी पोथी ठवणी कवली, पूंजणी नोकारवाळी;
दोरा चाबखी थापनाचारज, तिम मुहपत्ति सुंवाळी ॥ १३ ॥
कागळ ने कांठा, खडीआ वत्तरणा कांबी;
झरमर चंदरुआ, वाळाकुंची लांबी ॥
आरती धूपधाणा, मंगलदीप भृंगार;
प्रासाद ने प्रतिमा, तेहना वळी शणगार ॥ १४ ॥

त्रूटक.

सारसार वस्तु जगतमां, ज्ञान दर्शन उपगरणा;
केशर सुखड अगर कपूर, वाती ध्वज अंगलूहणां–
पंच अहव शक्ति पंचवीश, पंचवाटनो दीवो,
फल पकवान धान बहु मेवा, कुसुम प्रमुख बहु सेवा ॥ १५ ॥
पूरव अथ उत्तर, दिशि विदिशि ईशान;

नमो नाणस्सपदने, ध्यावो थई सावधान ॥
साहम्मीवच्छल्ल कीजे, गीतगाने गाईजे;
ए करणी करता, ज्ञानने आराधीजे ॥ १६ ॥

त्रूटक

साधीजे ईम शिवपद साधु, जिम गुणमंजरी वरदत्त;
लहे सौभाग्य वळी ज्ञान आराधुं, करी निज निर्मळ चित्त ॥
ते संबंध कथाथी कहेजो, लहेजो शाश्वितकाज;
ज्ञानविमलगुरु आणा पसाये, अधिक उदय होय आज ॥१७॥



# अथ श्रीपंचमीतिथिनु स्तवन

दुहा

प्रणमी प्रेमे पासजिन, पदपंकज अभिराम;
पंचमीतपमहिमा कहु, सुणतां सीझे काम ॥ १ ॥
अलकाअधिक बिराजती, द्वारवती इति नाम;
नेमिजिणेसर आवीया, रैवतगिरि शुभठाम ॥ २ ॥
केशर चंदन आचीया, बेठी परखदा बार;
वरदत्तगणधर तव तिहा, प्रश्न करे सुविचार ॥ ३ ॥
दंसण नाण चरित्तनी, करो विधि केही होय;
जिणविधि ते आराधीये, भंपे श्रीजिन सोय ॥ ४ ॥
चौदस आठम पूर्णिमा, अमावासी ए तिथि चार;

चारित्र पोसह आदरी, लहीये भवजलपार ॥५॥
पंचमी बीज इग्यारसी, ज्ञानतणी तिथि एह;
ज्ञानभक्ति बहु साचवो, जिम होय निर्मल देह ॥ ६ ॥
नवतिथि शेषे कीजीये, दर्शनभक्ति विशेष:
जिनपुजन कल्याणका–दिक साधर्मिक देख ॥ ७ ॥
तेहमांहि वळी निमळी, कार्त्तिकपंचमी जेह;
ज्ञानाराधननी कही, नेमिजिने धरी नेह ॥ ८ ॥
एह दिवस आराधतां, पाम्युं निर्मळ नाण;
वरदत्त ने गुणमंजरी, सुणज्यो तास वखाण ॥ ९ ॥

ढाल १ ली.

राग–दान कहे जगे हुं वडो–ए देशी.

जंबूद्वीपे भरतमां, पद्मपुरी अतिसोहे रे;
सुषमा जेहनी जोयतां, सुरनरना मनमोहे रे.
॥ श्रीजिनवर एम उपदिशे ॥ १० ॥
अजितसेन जस राजिओ, तस घरणी यशोमतीराणी रे;
वरदत्त तेहनो सुत भलो, सकलकळा गुणखाणी रे ॥ श्री० ॥ ११ ॥
आठवरसनो जव थयो, तव मूक्यो निशाळे रे;
अक्षर मात्र न आवडे, जिम जळमां शेवाल रे ॥ श्री० ॥ १२ ॥
अनुक्रमे यौवन पामीओ, विणठ्युं कोढे देहो रे;
रति नवि पामे केहथी, न धरे कांइ सनेहो रे ॥ श्री० ॥ १३ ॥
हवे तिणहीजपुरमां वसे, सिंहदास जिनधर्मी रे;

कोटिध्वज व्यवहारीओ, संपसुस्य शुभकर्मी रे ॥ श्री० ॥ १४ ॥
कपूरतिलका तस गेहिनी, गुणमंजरी तस बेटी रे;
बचने मूंगी वरतनु, रोगतणी छे पेटी रे ॥ श्री० ॥ १५ ॥
सोलवरसनी सा थइ, पण तस कोइ न इछे रे;
मातपिता परिजन सवे, तस दुःखे दुःखीया थीइ रे ॥ श्री० ॥ १६ ॥

दुहा

एणे समये तत्र एकदा, विजयसेन गच्छनाथ,
चउनाणी गुरुगुण भर्या, मुनिपरिकरे सनाथ ॥ १७ ॥
नागरजन सवि आवीयां, सुतयुत नरनाथ
सिंहदास तनया सहित, वंदे श्रीमुनिनाथ ॥ १८ ॥

ढाळ २ जी

राग—वाडी फुली अतिभली मन भमरारे—ए देशी

क्लेशनाशिनी देशना हितमाणी रे, भाखे श्रीगुरुराज;
॥ सुणो भवि प्राणी रे ॥
ज्ञान आराधन साधजो हि० भवणपठनने काजे सुणो० ॥ १९ ॥
ज्ञान विराधे जे मने हित० ते परभवे मनहीण सुणो०
वचने जेह विराधता हित० ते मूगा दुःखदीण सुणो० ॥ २० ॥
कायाथी जे विराधता हित० तस कुष्टादिकरोग सुणो०
त्रिविधविराधन ज्ञाननी हित० जे मूरख करे भोग सुणो० ॥ २१ ॥
पुत्र कलत्र धन मित्रनो हित० तेहने होये नाश सुणो०
आधिव्याधि तस परभवे हित० निर्विवेक वनु वास सुणो० ॥ २२ ॥

सिंहदास इम सांभळी हित० पूछे उलट आणी सुणो०
कहो भगवन्? किण कर्मथी हि०मुज तनया गुणहीण सुणो० ॥ २३ ॥
गुरु कहे एह संसारमां हित० सुखदुःख कर्मने हाथ सुणो०
कर्मथकी वळिया नहीं हित० चक्री हलधर साथ सुणो० ॥ २४ ॥
एहनो पूरवभव सुणो हित० हृदये विचारो हेव सुणो०
कर्मतणी गति एहवी हित० गुरुभाखे ततखेव सुणो० ॥ २५ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—कंत तमाकु परिहरो—ए देशी.

धातकीखंडे भरतमां, मनोहर खेटकनाम नरराज;
नयरमांहि व्यवहारिओ, धनवंत वसुदेव नाम नरराज.

पूरवभव तुमे सांभळो ॥ २६ ॥

सुंदरी नामे गेहिनी, तस सुत पंच रसाल नरराज
आसपाल पहेलो भलो; वीजो ते तेजपाल नरराज ॥ पू० ॥ २७ ॥
गुणपाल त्रीजो कह्यो, धर्मपाल धर्मसार नरराज;
लावण्यरूपे शोभती, वळी तस पुत्री चार नरराज ॥ पू० ॥ २८ ॥
लीलावती ने शिलावती, रंगावती तिम जाण नरराज;
मृगावती चोथी भली, महिमा गुणनी खाण नरराज ॥ पू० ॥ २९ ॥
पंडित पासे मोकल्या, ते पांचे निजनंद नरराज;
चपलाइ करता घणुं, मांहोमाहि दंद नरराज ॥ पू० ॥ ३० ॥
पंडित मारे तेहने, ते रोये घरे जाय नरराज;
पंडितने उपले हण्यो, जो फरी तुम न सुहाय नरराज ॥ पू० ॥ ३१ ॥

दुःखथकी तिणे मणे भ्रु होवे, खिसवे इणिपरे माय नरराम,
कंठशोष कीधायकी, खुं अधिकेरुं थाय नरराम ॥ पू० ॥ ३२ ॥
पाटी पोथी मग्रुखमे, परमाळे तिणिवार नरराम;
मूर्खपणाथी वेरने, नवि परणावे नार नरराम ॥ पू० ॥ ३३ ॥
तिणे दुःखे दुःखीआ थीमस्ये, भाखे शेठ वचन नरराम;
मंगम मूरख रासीया, कीधो अहिस जनम नरराम ॥ पू० ॥ ३४ ॥
मत्युत्तर सब स्त्री कहे, ए सघळो तुम दोष नरराम;
मर्मपानके उपले इणी, माणी मतिमणो रोष नरराम ॥ पू० ॥ ३५ ॥
ते तुम तनया उपनी, ज्ञानाशातना कीध नरराम;
आगे पीरी रोगर्खु, ए फल तास मसिद्ध नरराज ॥ पू० ॥ ३६ ॥

ढाळ ४ थी

राग—वीर वखाणी राणी चेलणाजी—ए देशी

पुरवभव इम सांभळीजी, जातिस्मरण लह्यो ताम;
कहा भगवन् ! इव पइनुंजी, कर्म छाडणनु निदान
॥ ज्ञान आराधन आदरोजी ॥ ३७ ॥
इणे अवसर वरदत्तनोजी, कर्म पुछे नृप ताम;
गुरु कहे एहिम भरतमाजी, श्रीपुर शेठ वसु नाम ॥ ज्ञा० ॥ ३८ ॥
वसुसार वसुदेव विहु हताजी, तेहना पुत्र गुणवंत;
गुरुतणी देशना सांभळीजी, मनमांहि तेणे एकांत ॥ ज्ञा० ॥ ३९ ॥
संजम बहुमणे आदर्योजी, सूरिमुनिसुंदर पास;
वसुदेव बहुश्रुतगुणपद्मीजी, धरिपद ठपे र उल्लासे ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥

पंचसयसाधुने वाचनाजी, आपतो करतो सज्झाय;
एकदिन पोरिसी सूयतांजी, प्रथमां रयणि विहाय ॥ ज्ञा० ॥ ४१ ॥
निद्रा न करी शके गच्छधणीजी, चिंतवे मनमांहि एम;
धन्य मुरख मुज बांधवोजी, किसीय चिंता नहि तेम ॥ ज्ञा० ॥ ४२ ॥
एहवुं मूर्खपणुं लहुंजी, चित्ते धर्युं जेह अज्ञान;
बारदिन मौन करीं उपन्योजी, ताहरो पुत्र निदान ॥ ज्ञा० ॥ ४३ ॥
वृद्धभ्राता थयो हंसलोजी, मानससरोवरमांहि;
इम सुणी जातिस्मरण लह्युंजी, वरदत्ते देशनामांहि ॥ ज्ञा० ॥ ४४ ॥
भूपति शेठ वेहुं भणेजी, सूरि आगळ करजोडी;
विधि कहो ज्ञान आराधवाजी, जेम पहोंचे मनकोडी ॥ ज्ञा० ॥ ४५ ॥

ढाळ ५ मी.

राग—वीरजिणेसरचरणकमळकमळाक्यवासो—ए देशी.

भाषे तव मुनिनाथ साथ निसुणे चित्त आणी,
उज्वलपंचमी दिवसे जेह आराधे प्राणी
चोथभगत जिन वांदवा पूजा त्रिहुं काळ,
सावद्यकरणी नवि करे ब्रह्मचर्य संभाळे. ॥ ४६ ॥
मास मास एणिपरे करे तिहां पांसठमास,
उजमणुं करे तेहनुं पंच वस्तु प्रकाश;
पाटी पोथी परति पंच ठवणी ने कवली,
नोकारवाळी पूंजणी चावखा पंचवर्णी. ॥ ४७ ॥
पंच जाति फल पंच पंच, जिनबिंब प्रासाद,

पंच जातिना द्रव्य चेर, टाळो पंच प्रमाद;
मासे मासे न करी शके तो कार्तिक पंचमी,
अजुआळी आराधीये जावज्जीव करो एम ॥ ४८ ॥
कुसुम कपूर सुगंध द्रव्य लेइ पुस्तक पूजे,
ठवणी चामोठ उपरे थापीने रीझे;
पंचवर्ति दीपक करे तिम स्वस्तिक पूरे,
पंचवर्ण फल सुखडी पन ढोवे अचूर ॥ ४९ ॥
ओ ह्रीं नमोनाण(स्स) जाप गुणे सहसग दोय
उचर सहामो शुद्ध चस धरे निर्मळ होय;
गुरुमुखे सह पच्चक्खाण रुपानाणुं मूके,
जावजीव इम उचरे पछे विधि नवि चूके ॥ ५० ॥
जो पोसहने कारणे ए विधि न करी शके,
तो बीजे दिन साचवेतो कीर्ति झलके;
रोग सोग संताप दुःख जावे संपद थावे,
अनुक्रमे सुरसुख भोगवी अजरामर थावे ॥ ५१ ॥
ते तप वेहुं जणे आद्यों थया तेह नीरोग,
तिणे सौभाग्यनी पंचमी कहे ते पेहडुं लोग;
पेम उममणुं धरिस करे वरदत्त खिसा,
सहस (१०००) कन्या परणी तिहां अनुक्रमे लिपे दीक्षा ॥५२॥
गुणमंजरी पण थइ नीरोग गुणचंद्रे परणी,
पचमी तपनी विधि अनेक कीधी निर्मल करणी;

अंते संयम आदरी विहुं विजयविमाने;
वत्रीशसागर आयुमान पहोता शुभध्याने. ॥ ५३ ॥

ढाळ ६ ठी.

राग—शारद बुद्धिदाइ—ए देशी.

जंबूपुर्वविदेहे विजयपुष्कलावती नाम,
पुंडरीकिणीनयरी अमरसेननृप धाम;
गुणवती तस राणी तस कुखे उपन्न,
वरदत्तजीव सुरना गुण लक्षण संपुन्न.

त्रूटक.

गुणलक्षण संपुन्नो पेखी शूरसेन दिओ नाम,
वार वरसनो एकशतकन्या परणाव्यो अभिराम;
तीर्थंकरमुखथी पूरवभव निसुणी चारित्र लेइ,
वर्ष सहस एक पाळी केवळ सिध्या कर्म खपेइ. ॥५४॥

हवे रमणीविजये नरसिंहभूपतिगेहे,
अमरावतीकुखे गुणमंजरीजीव तेह;
उपन्नो आवी सुग्रीव ठविउं नाम,
वहु कन्या परण्यो राजतेज वहुधाम.

त्रूटक.

वहुधा सुख विलसंतां हुआ पुत्र चोराशीहजार,
थापी पुत्र राज्ये लेइ संयम केवळ पाम्या सार;
पूर्वएकलख भवि प्रतिवोधी पाम्या अविचळ सुख,

सौभाग्यपंचमीनो तप करतां जाये दुर्गतिदुःख ॥५५॥

एह संबंध निसुणी ज्ञान आराधो प्राणी,
आशातना टाळो जिम थाओ गुणखाणी;
एम माणी नाणी सुणीये ए हित आणी,
श्रीजिनखरगणधरनी पहेली उत्तम वाणी

कळश

उत्तमवाणी जिननी सुणीने मतिसुम्पा भविप्राणी,
पंचमनाण म्हेथा कारणे ए साधी सहिनाणी;
श्रीविनयविमलकविराजसुसेवक धीरविमलकविराय,
नयविमल तस शिष्य कहे एम ज्ञाने सुजस सवाय ॥५६॥

---

## अथ श्रीमौनेकादशीतिथिनुं स्तवन

ढाळ १ ली

राग—शांतिजिन एक मुज विनति—ए देशी

देश सोरठ द्वारापुरी, केशव हरिनरिंदुए;
यादवकुलनभदिनमणी, सौम्यगुणे जिम चंदुए ॥ १ ॥

॥ हरमने धर्म समाचरो ॥ आंकणी ॥

नेमिजिणंद समोसर्या, मुनिवर सहसअढार (१८०००) ए;
रैवतगिरि सुणी आवीया, वंदे हरी सुखकारए ॥ हर० ॥ २ ॥
निसुणी देशना पुछीउं, एकादशीफल सारए;
ज्ञाननी तिथि आराधतां, आपे शिवसुख सारए ॥ हर० ॥ ३ ॥

दाखे सुव्रतमुनिकथा, निसुणे परखदा बारुए;
पुण्यविशेषथकी फले, विधिथी शुभ आचारुए ॥ दृढ० ॥ ४ ॥
घातकीदक्षिणभरतमां, विजयपुरी सुविशाळुए;
पश्चिमदिशि ईषुकारने नृप नामे पृथिवीपाळ ॥ दृढ० ॥ ५ ॥
चंद्रवती तेहनी प्रिया, नगरशेठ सूरनामए;
पुत्र अनेक छे तेहने, सकलकळा गुणधामए. ॥ दृढ० ॥ ६ ॥
जिनधर्मे वहुनेहीओ, आवश्यकव्रतधारुए;
एकदिन गुरुमुखे ज्ञानने, सुण्यो महिमा हितकारुए ॥ दृढ० ॥ ७ ॥
तव गुरु धवल एकादशी, दिन आराधन भाख्योरे;
ज्ञानवळे तस हित भणी; विधि सघळो तिहां दाख्योरे ॥ दृढ० ॥ ८ ॥

ढाळ २ जी.

राग—पुण्य प्रशंसीए ए देशी.

मौनपणे पोसह करे रे, अहोरत्तो चौविहार;
पठन गुणन जिन नामनां रे, करतां धर्म विचार रे.
॥ भवि व्रत आदरो ॥ ९ ॥
पारणे उत्तरवारणे रे, एक भक्त आहार;
उभयटंक आवश्यकं रे, करे सचित्तपरिहार रे ॥ भ० ॥ १० ॥
ज्ञानतणी पूजा करे रे, साहम्मिवात्सल्य सार;
जिन आगळ ढोणुं करे रे, पूजा विविधप्रकार रे ॥ भ० ॥ ११ ॥
संविभागव्रत साचवी रे, पारण एम करंत;
बारवरस पूरे थये रे, उजमणु मनखंत रे ॥ भ० ॥ १२ ॥

जिनवरने नव भूषणां रे, प्रत्येके अग्यार;
धान पकवान प्रमुख बहुरे, लसावे अंग अग्याररे ॥ भ० ॥ १३ ॥
सघभक्ति बहुविधि करेर, ज्ञानोपगरण सार;
ठवणी कवली चाबसी रे, पाठा प्रमुख अग्यार रे
बिंगणा तिम सार रे ॥ भ० ॥ १४ ॥
पणिपरे बहुविधि साधवेरे, एक वरस ते सर्व,
अग्यार अग्यारस उजळी रे, कीधुं पूरण पर्व रे ॥ भ० ॥ १५ ॥
उजमणाना दिनथकी र, पन्नरमे दिने तेह;
शूलरोगे मरी सुर थयोरे, आरणकल्पे गुणगेहरे ॥ भ० ॥ १६ ॥

ढाळ २ जी

राग—मादिकरण श्रीआदिजिनजी—ए देशी

तिहांथी चवि आ भरतमाजी, शौरीपुरे पुण्यवंतजी;
समुद्रदत्त्यवहारियोजी, प्रीतिमतीनो कंतजी
॥ भावे भवियण व्रतधरोजी ॥ १७ ॥
तसकुखे सुर उपन्याजी, नामनिक्षेपण ठामजी;
निधि प्रगटये महोत्सव करेजी, सुव्रत दीधुं नामजी ॥ भा० ॥१८॥
साधुसमीप संग्रहेजी, समकित निम व्रत बारजी;
यावनवये परणावियोजी, कन्या अग्यार उदारजी ॥ भा० ॥ १९ ॥
संयम ननक माद्योजी, सापे आतमकाजजी;
सुव्रत परस्वामी थयोजी, कोडि अग्यार धन साजजी ॥भा०॥२०॥
धर्मघोषसूरि भाखीयाजी, करे तिहां पर्व विचारजी;

जातिस्मरणथी ते ग्रहेजी, पूरवल्यो आचारजी ॥ भा० ॥ २१ ॥
एक दिन पोसह आदर्योजी, मौनी निशि परिवारजी;
ते निसुणी चोर आवियाजी, धन लेवा तेणीवारजी;
कीधो प्रदीप प्रचारजी ॥ भा० ॥ २२ ॥
दीठा काउस्सग्गे रह्याजी, लेवे धननी कोडिजी;
थंभे शासनदेवताजी, नहीं कोइ धर्मनी जोडिजी ॥ भा० ॥ २३ ॥
लोके राय जणावीओजी, आवीयो चोकीदारजी;
थंभाणा सवि ते तिहांजी, अचरिज एह अपारजी ॥ भा०॥ २४ ॥

ढाळ ४ थी.

राग—हमचडीनी देशी.

मन थिर करीने पोसह पारे, विधि सघलो आराधे;
राजा पण तेहने घरे आव्यो, मेटे भगति बहु साधे रे.
हमचडी. ॥ २५ ॥
अभयदान मांगी मूकाव्या, तस्कर व्यसनथी वार्या;
शेठपदे राजाए थाप्यो, तसपरिजन सत्कार्या रे हमचडी. ॥ थ६ ॥
वळी एकदा अग्यारसदिवसे, सपरिवार व्रतधार;
लाग्यो अग्नि ज्वलतुं पुर देखी, धर्मशरण करे साररे हमचडी ॥२७॥
धर्मशाखा सुव्रतगेहादिक, मूकी अवर सवि जलीउं;
देखी नरपति बोले एहने, धर्मे विघन सवि टळीउंरे
हमचडी. ॥ २८ ॥
एकशतबहोंतेर पुत्र थया तस, सघळीए नगरीकेरा;

कोडिनवाणु घन सवि मूकी, लीये संयम घई सूरार हमघडी ॥१९॥
मयघेसरघउनाणीं गुरुथी, मग अग्यार भम्यासे;
घ्ठ अष्टम व्रत चार छम्मासी, एक तिम चार घउमासी रे,

हमघडी ॥२०॥

एम तप करतां सुव्रतमुनिने, मौनएकादशीदिवसे;
मंग पीडा बहु उपमावी, पण स्थिरतागुण विकसेरे हमघडी ॥२१॥
एक मिथ्यासुर क्षोभण काचे, परमुनिन मुखे भावी;
भादरई बड संयम सावे, सो वेदना खमावे रे हमघडी ॥ २२ ॥
करे व्यंतर जो बसतीने बाहिर, भावे तो सुख पावे;
कर्मो न मान्यो मस्तक हणीओ, पण निजमन न डगावे रे

हमघडी ॥ २३ ॥

एणिपरे घातिकर्म खपावी, पामी केवलनाण;
सिद्ध थयो सुरवृंद मळीने, मोच्छव करे विहाणरे हमघडी ॥२४॥
वनिता पण अग्यारे संयम, लेइ निरतीचार;
माससंलेखण शिवगति पामी, वळी बहु वस परिवार रे

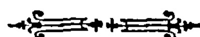
हमघडी ॥ २५ ॥

ढाळ ५ मी

राग—बे करजोडीने जिनपाये लागु—ए देशी

नेमिजिणंदे केशव भागे, एह संबंध कह्ये विधरागे;
सांभळी कृष्ण ए दिवस आरापे, क्षायिकसमकितना गुणगावे ॥२६॥

अरजिनव्रत नमिजिनवर ज्ञान, मल्ली जन्म व्रत केवलज्ञान;
एकचोवीशीमां पंचकल्याण, त्रणचोवीशीना पन्नर कल्याण ॥३७॥
एकक्षेत्रे एम भणीजे, दशक्षेत्रे दोढशो जाणीजे;
अतीत अनागत ने वर्त्तमान, पंचास पंचास एम प्रमाण ॥ ३८ ॥
नेवुंजिनना नाम गणीजे, एक त्रणने एकज लीजे;
अढारमो ओगणीश ने एकवीश, वर्त्तमान जिन ए निशदीश ॥३९॥
सातमो चोथो छठो एह; अतीत अनागतना जिन जेह;
मोटुं पर्व कह्युं तिण हेते, जिनशासनने वळी शैवसंकेत ॥४०॥
मागशर शुदी अग्यारस पाळे, ते सात्रि कर्मना मेल खपावे;
जावज्जीव कीजे शुभभावे, भवभवनां तेम संकट जावे ॥४१॥
श्रीज्ञानविमलसूरि एणीपरे भाखे, एह चरित्रतणी छे साखे;
आराधे जे जिनकल्याण, होवे तस घरे कोडि कल्याण ॥ ४२ ॥



## अथ श्रीवीशस्थानकतपनुं स्तवन.

### दुहा.

श्रीजिनमुखकजवासिनी, ब्रह्माणी श्रुतदेवी;
थानकतपमहिमा विधि, हुं पभणुं नितमेव. ॥ १ ॥
जिन सिद्ध पवयण गुरु थिविर, बहुश्रुत तपसी जेह;
वात्सल्य कीजे एहनुं, बहुनाणोपयोगे तेह. ॥ २ ॥
दंसण विनय आवश्यके, शीले निरतीचार;
प्रमादि क्षण पण नहीं. तप अनाशंस विचार. ॥ ३ ॥

अतिथिसंविभागे करी, चउविह दान आहार;
वैयावच्च संघ दाखीये, उपसर्गादि निवार ॥ ४ ॥
चउविध संघ समाधिनुअपूर्वज्ञान अभ्यास;
श्रुतभक्ति तीर्थप्रभावना, ए वीस पुण्यनिवास ॥ ५ ॥

ढाल १ ली

राग—मे करजोडीने जिन पाये लागु—ए देशी

हवे थानकतप जेणिपरे कीजे, तेहतणो विधि इम निसुणीजे;
समकितधारी जे नरनारी, सचित्तपरिहारी ने ब्रह्मचारी ॥ ६ ॥
उत्तरपारणे एकाहारी, त्रिहुं विधि जिनपूजे निरधारी;
आवश्यक दुगवेल संभाळे, यतना करी जीवनी पाळे ॥ ७ ॥
गुरुभक्ति भळी विधिनो रागी, धर्मरसक ने विषयनो त्यागी;
सज्जनसंगी कपटे न लिंगी, तत्त्व श्रवणनो जे अतिरंगी ॥ ८ ॥
एहवा लक्षणनो जे प्राणी, अमृतपरे मीठी जस वाणी;
ते ए तप करवा उजमाळ, जिनपद बांधे पुण्यविशाल ॥ ९ ॥
गुरुमुखथी फळ एहनां निसुणी, विधि अनुसार करतो करणी;
दोषसहस एहनुं करे गणणुं, सेवथी चरित्र एहनुं हवे भणुं ॥१०॥
साधु श्रावक ए तपने धार, घोष छद्मासमगव उदार;
प्रथम अंतिमजिन सर्व आराध्यां, शेषे इगदुग पूर्वभवे साध्या॥११॥
श्रावक पोसह करी आराधे, मुळगविधियेतो जिनपद बांधे;
बीजे दिने पूजादिक करणी, साचवतो विधिशुं जिम भरणी ॥१२॥
यद्यपि कावसग्ग ग्रंथे न दाख्या, पणसुविहितमुनिये विधिमा राख्या;

हथी दर्शनशुद्धि विशेषे, तप चारित्रतणे पण लेखे ॥ १३ ॥
क नवकारने काउसग्गे, पलिय सुरायु बंधे सग्गे;
ओगणीशलाख ने सहस त्याशी, दुगशत सडसठ सहस पांत्रीश आणो;
दुसय दुसठि पल्योपम आय, बांधे सुरनुं करी मन ठाय ॥ १५ ॥
तेहभणी काउसग्ग छे जुत्त, त्रिकरणयोगशुं विधि सुपवित्त;
सामायिक करीने जो कीजे, तो सहेजे संसार तरीजे ॥ १६ ॥
थानक थानक काउसग्ग करवा, सामायिके भवजलधि तरवा;
नाम ठाम हवे एहनां दाखे, ग्रंथ विचारामृतनी साखे ॥ १७ ॥

ढाळ २ जी.

राग मारुनी—चेतन चेतीये रे—ए देशी.

जिनपूजाविधि ग्रंथांतरथी जाणज्यो रे, कहेतां वाधे विस्तार;
जे विशेषपदारथ जगमां जाणीये रे, तेहनी भक्ति उदार,
ते तिहां जोडीये सार ॥ १८ ॥
जिनवर पूजीये रे, पामी नरभवयोग;
धर्म अतुल छे जगमां श्रीजिनवरतणोरे, आराध्ये शिवयोग.
॥ जि० ॥ ए आंकणी ॥
नमोअरिहंताणं गणीए प्रथमपदे भलुंरे, तेपण अड सत्तर प्रकार;
पूजा कीजे वळी प्रासाद करावीये रे, तस आशातना वार ॥ जि० ॥ १९ ॥
तस प्रत्यनीकनी संगति सहजे वारीयेरे, काउसग्ग चोवीश वा वार;
अवर्णवाद आच्छादन जस थुति गाइये रे, भक्ति बहुमान उदार.
॥ जि० ॥ २० ॥

देवपालभूपालपरे श्रीजे भवे रे, पामे जिनपद खेम'
मनोरमा तस घरणी गणधरपदवी लहीरे, प्रथम थानकने नेम
॥ जि० ॥ २१ ॥

भक्ति करो भवि बीजे थानके सिद्धनीरे, विध भरावी खास;
भणीरूपसोभन धातुवणी पहुरे, सिद्धगुण कीर्तिने रास ॥जि०॥२२॥
नमोसिद्धाणं दोय सहस जपीये सदारे,पूरव विधि सवि होय;
काउसग्ग अड भय पन्नर लोगस्सतणोरे,तन्मयध्याने जोय॥जि ॥२३॥
भरिहंतने पण बीजुं पद ए मान्य छेरे, सोबी भपरा भाव;
एहने ध्याने सिद्धस्वरूपीआतमारे,सादि अनंत हुइ जात ॥जि०॥२४॥
महावीर्य पुंडरीक भष्टापद रैवतारे, श्रीसम्मेतादिक ठाम;
विधिसुं कीजे यात्रके पद भराबीयेरे,बांधे जिनपद ठाम ॥जि० ॥२५॥
हस्तिपालनृप विक्रमधानवणीपरे रे, श्रीजे भवे जिन थाय;
मंत्री गणधरपद पामी शिव जावस्येरे,बाजापद सुपसाय ॥जि० ॥२६॥
त्रीजे थानके प्रवचनभक्ति करी भली रे, प्रवचन चतुविध संघ;
श्रमणादिक छे भागम मुख्यपतारे, कीजे न तस्स उल्लंघ ॥जि०॥२७॥
समकितवंता शासनभक्ता जे भविप्राणीया रे, कीजे तास सहाय;
वात्सल्य नंदीषेण इत्यादिकतणोरे,अनुग्रह करे निरमाय ।जि २८।
'नमोपवयणस्स' गणीये काउसग्ग कीजीयेरे,लोगस्स पद भपधा चार;
चितन करता जिनप्रभशेठतणीपरे रे,हीरप्रभा तस नार ॥जि०॥२९॥
बेउने जिनपद गणधरपद बली नारीनेरे, पामी लहे शिवसुख;
त्रीजे थानके भक्ति करो एम भाषहु रे, महिमा मोटिम लक्ख
॥ जि० ॥ ३० ॥

## ढाळ ३ जी.

### राग–पारधीयानी देशी.

चोथे थानके कीजीये रे, शक्ते गुरुनी भक्ति रे गुणरसिया;
आचारी आचार्यनीरे, छत्रीशगुणनी व्यक्ति रे चित्तवसिया ॥३१॥
'नमोआयरियाणं' गणोरे, छत्रीस लोगस्स काउसग्गरे गुण०
त्रिकरण विनये सेवना रे, अति उच्छाह अथग्ग रे चित्त० ॥३२॥
पुरुषोत्तमनृपनी परे रे, जिनपद लहीए सार रे गुण०
अन्न पान वसती ने वेयावच्चेरे, पूजाने सत्कार रे चित्त० ॥३३॥
पद पंचमे वळी थिविरनी रे, सेवा बहूविध होय रे गुण०
श्रुतपर्यायवयथी वळी रे त्रिविध लोकोत्तर जोय रे चित्त० ॥३४॥
सीदाता सम संयमे रे, थिर करतां होय थेर रे गुण०
'नमोथेराणं' ध्याइए रे, काउसग्ग त्रण पण तेर रे चित्त० ॥३५॥
पद्मोत्तरनृपनी परे रे, जिनपद लहीए क्षेम रे गुण०
छठ्ठे बहूश्रुतने नमो रे, उपाध्यायपद प्रेम रे चित्त० ॥३६॥
'नमोउवज्झायाणं' जपोरे, काउसग्ग लोगस्स पचवीशरे गुण०
विविधभक्ति तस साचवोरे, बहु श्रुतनी सुजगीश रे चित्त. ॥३७॥
महेंद्रपालनृपनी परे रे, जेम सुतशीलप्रधान रे गुण०
जिनगणधरपद पामश्ये रे, जेहनी मोटी माम रे चित्त० ॥३८॥
तपसी साधुपद सातमे रे, भक्ति करो द्रव्यभाव रे गुण०
'नमोलोएसव्वसाहूणं'रे, सगवीश लोगस्स खास रे चित्त० ॥३९॥
वीसामण वात्सल्यथी रे, प्रमुख करो घणी सेव रे गुण०

वीरभद्रमुनिनी परे रे, जिनपद लहे स्वयमेव रे चित्त० ॥४०॥
ज्ञानोपयोग प्रतिक्षणे रे, त्रिक्यो आठमे ठाण रे गुण०
'नमोनाणस्स'पद काउसग्गे रे, पण एकावन मानरे चित्त० ॥४१॥
ज्ञानोपगरण ज्ञानने रे, ज्ञानीने बहुमान रे गुण०
जयसरेवराजा परे रे, पांचे जिनपद नाम रे चि० ॥४२॥

ढाळ ४ थी

राग—मेंदी उपर मेह झरुखे वीजळी हो लाल झरुखे—ए देशी

नवमुं थानक दर्शनपदनुं ध्याइए हो लालके पदनुं०
'नमोदसण(स्स) करी जापक पाप पलाइए हो लालके पाप०
पण अथवा सडसठ लोगस्सने चितीए हो लाल लोग०
सुगुरु सुदेव सुधर्म ए दर्शनमंतीए हो लाल ए दर्शन० ॥४३॥
दर्शनना उपगरण धणारो बहुपरे हो लाल धणारो०
नि शंकादि दोष निवारी चित्त धरो हो लाल निवारी०
जिम हरिविक्रमभूप जिनेंद्रपदवी लहे हो लाल जिनेंद्र०
दर्शनथी वळी ज्ञानचारित्र गुण गहगहे हो लाल चारित्र० ॥ ४४ ॥
दशमुंपद 'नमोविनयस्स' गणी आराधीए हो लाल गणी०
गुणिपद तेरनो विनय पंचमेदे साधीय हो लाल पंच०
एहना दशविध भेद विनय काउसग्ग करो हो लाल वि०
दश अथवा बावन्न लोगस्स करी मनतरा हो लाल लोग० ॥४५ ॥
दर्शन ज्ञान चारित्र न तप उपकारीनो हो लाल के तप०
मोक्ष विनय पण भेद ए जैनाचारनो हो लालके जैना०

धनश्रेष्टिपरे तेह मुनिव्रत आदरी हो लाल मुनि०
बांधे जिनपद नाम करी किरिया खरी हो लाल करी० ॥४६॥
उभयकाळ आवश्यक षड्विध साचवे हो लालके षड्०
सामायिक वहुवार करी पाचवे हो लाल करी०
'नमोचरित्त'पद जाप सत्तर अथ पांचनो हो लाल सत्तर०
करे काउसग्ग दश सामाचारी संचनो हो लाल सामा० ॥४७॥
निरतीचारे भक्ति करे चारित्रनी हो लाल करे०
सर्वविरति देशविरति करे चित्त चित्रथी हो लाल करे०
अरुणदेवभूपालपरे ते जिन होये हो लाल परे०
वारसमुं हवे ठाण शीलव्रतनुं कहे हो लाल शील० ॥ ४८ ॥
चिंतामणिपरे लील शील जे आदरे हो लालके शील०
नवविधवाडी विशुद्ध अढार भेदे धरे हो लाल अढार०
व्रतधारीनी भक्ति साधुश्रावकतणी हो लाल साधु०
लोगस्स नव वा अढार काउसग्गे भणी हो लाल काउ० ॥ ४९ ॥
'नमो वंभवयधारिणं' पाठ जपे सदा हो लालके पाठ०
चंद्रवर्मनृप जेम लहे जिनपद मुदा हो लाल लहे०
तेरमे थानके एह प्रमाद क्षण नवि करे हो लाल प्रमाद०
'नमोकिरियाणं' जाप करी भवजल तरे हो लालके करी० ॥ ५० ॥
वळी पिंडस्थ पदस्थ रुपस्थ रुपातीतनु हो लालके रुपा०
ध्यान धरे वळी धर्म शुकलनी रीतिनुं हो लाल के शुकल०
करे प्रमादपरिहार आचार अनुमोदना हो लाल आचा०

काउसग्ग सेर पणवीस अक्रिय भास्वादना हो लाल अक्रि० ॥५१॥
निरविचार क्रिया साधे विकयापापिने हो लालके विकया०
हरिवाहनतृप षेम ते जिनपद साधीने हो लालके जिन०
चौदमे स्थानके बार अभ्यंतरतप धरे हो लाल अभ्यं०
'नमोतवस्स' गणे पाठ लोगस्स द्वादश करे हो लाल लोग० ॥५२॥
मनाशंस भनिदान करी चित्त निर्मलु हो लाल करी०
कंचनकेतुनृप षेम लहे जिनपद भलु हो लाल लहे०
पनरमे थानके एह उचित अशनादि ए हो लाल उचित०
शुद्ध अतिथिसंविभाग करे पूजादिके हो लाल कर० ॥ ५३ ॥
सेर भणी 'नमोगोयम' गणीये काउसग्गे हो लाल गणी०
एकादश लोगस्स सुपात्रादिक घगे हो लाल सुपात्रा०
रत्नकनकरूप ताम्र ने मृन्मय पात्र छे हो लाल के मृन्म०
जिनमुनिश्रावक समकिति मिथ्यात्विपात्र छे हो लाल मि० ॥५४॥
एणिपरे पात्र विचार संविभाग व्रत धरे हो लाल सवि०
नरवाहननृप षेम यइ जिन भव तरे हो लालके यइ०
मन वच काय विशुद्ध एहवुं चे आदर हो लाल एह०
ज्ञानविमलगुणराशि भुवनमां विस्तर हो लाल भुव० ॥ ५५ ॥

ढाळ ५ मी

राग—मुनि मन सरोवर हंसलो—ए देशी

वैयावच्चपद सोलमुं, भवि तुमे भावे आराधो रे;
जिनसूरिवाचकमुनि गुणी, देशविरत भेदथी साधो र ॥ ५६ ॥

श्रीजिनवर एम उपदिशे ॥ ए आंकणी ॥

उपसर्गादिक टाळवे, वैयावच्च विशेष रे;
ते भणी अपडिवाइ कह्युं, मवचने उचित संपेख रे ॥श्रीजि०॥५७॥
जिन उत्कृष्ट गुणीमांहि, ते 'जिणाणं' गणीयेरे;
काउसग्ग पांच लोगस्सनो,अधिगत गुरुमुखे सुणीयेरे॥श्रीजि०॥५८॥
जिमूतकेतुनृपतिपरे, तीर्थंकरपद फरसे रे;
राणीयशोमती तेहनी, गणधरपदे भव तरसे रे ॥ श्रीजि० ॥ ५९ ॥
पद समाधि हवे सत्तरमुं, द्रव्यभावे उपजावे रे;
सूरिमुख चउविह संघने, सुपरेशुं सुविधि सिखावेरे ॥श्रीजि०॥६०॥
संघमां उत्तम मुनिवरा, ते भणी 'नमोचारित्र' जपीए रे;
विघननिराकरवे करी, पण लोगस्स कर्म खपीएरे ॥श्रीजि०॥६१॥
श्रीपुरंदरनृपनी परे, जिनपद लहे सुखकार रे;
बंधुमती तेहनी मिया, होशे तस गणधार रे ॥ श्रीजि० ॥ ६२ ॥
पद अढारमे आदरो, अपूर्व ज्ञाननुं ग्रहण रे;
अंगानंग आवश्यके, भणीये करी योगोवहाण रे ॥ श्रीजि० ॥ ६३॥
तत्त्वज्ञाननी चिंतना, 'नमोनाणस्स' पद जाप रे;
काउसग्ग पण अथ वारनो, ज्ञानथी टळे सवि पापरे॥श्रीजि०॥६४॥
सागरेंदुनृपनी परे, तीर्थंकरपद पामे रे;
आदर करीने आशातना, टाळतो सवि दुःख वामे रे॥श्रीजि०॥६५॥
हवे श्रुतपद ओगणीशमुं, श्रुत ते गणधरे रचियु रे;
चौदपूरवी दशपूरवी, मत्येकबुद्धबुद्धि खचिउ रे ॥ श्रीजि० ॥ ६६॥

विधिशुं अवेखुं देयखुं, मत्यनीकता टाळे रे;
संग अनेक स्त्वाधीए, भक्ति शासन अनुआळेरे; ॥ श्रीजि०॥६७॥
'नमोसुयस्स' पद ध्याइए, घर भय पणयालीश रे;
लोगस्स काउसग्ग कीजिये, धरीये भक्ति अशेष रे ॥श्रीजि०॥६८॥
सतक अध्ययनपद पाडुडा, उद्देशादिक भूला रे;
धारीये अंगने पूर्वना, तो पाप प्रवलीला रे ॥ श्रीजि० ॥ ६९ ॥
रत्नचूडरूपनी पर, स्याद्वादे नहीं शंका रे;
जिनपद लही शिवगति लहे, पावे पुण्यनी टंका रे ॥श्रीजि०॥७०॥
प्रवचनवीयेप्रभावना, वीसमुं स्थानक जाणो रे;
विद्यानिमित्त उपदेश तपे, उन्नति करे सुमजाणो रे ॥श्रीजि०॥७१॥
वीयप्रविष्ठायात्रा, साहम्मिवत्सल आदि रे;
धर्मकथा विधिशुं करे, टाळी सयलप्रमाद रे ॥ श्रीजि० ॥ ७२ ॥
'नमोतीर्न्यस्स' पद चिंतिये, काउसग्ग लोगस्स चार रे;
मेरुप्रभनरपतिनी पर, पामे जिनपद सार रे ॥ श्रीजि० ॥ ७३ ॥
पूर्वस्थानक सवि परमां, मासे विधे करी भाख्यिो रे;
एक एकमां अपता विधे, करता पातिक दख्यिो रे ॥श्रीजि०॥७४॥
अमे न आवे वेहले, वीश असमाधिना ठाम रे;
वीशस्थानकतप सेवतां, श्रीज्ञानविमलप्रभु धामेरे ॥श्रीजि०॥७५॥

ढाल ६ ठी

राग—शांतिजिन भामणे जाउ—ए देशी

स्थानक वीशे इम आराधो, पोसह करी भवि प्राणीजी;

सूरिवायगमुनि चरितपदे चउ, सर्वविरति सहीनाणीजी. ॥ ७६ ॥
वलिहारी ए जिनतणी ॥ आंचळी. ॥
एहनो पार न पामीए, कांइ कहेतां गुणसमुदायजी;
उजमणां उलट धरी कीजे, निजधनने अनुसारेजी;
धन लही तप नवि उजमे, कांइ तेहनो अफल जमवारोजी॥व०॥७८॥
सूरतवंदर सुंदर श्रावक, स्थानकतप आदरताजी;
नेहतणो विधि जाणण हेते, प्रवञ्च पुण्य अनुसरताजी ॥व०॥७९॥
ग्रंथ विचारामृतथी निसुणी, ज्ञानविमल गुरुवाणीजी;
समकितअनुभव उल्लसे एहथी, अवर न एह समाणीजी ॥व०॥८०॥
संवतरसऋतुमुनिविधु(१७६६) मासे, पोषवदी आठम बुधवारेजी;
भणवा काजे स्तवन कर्यु ए, नितु नितु मंगळचारजी ॥व०॥८१॥

---

## अथ श्रीसत्तरिसय (१७०) जिन स्तवन.

राग—गोडी.

ढाल १ ली.

जंबूद्वीप विदेहमां एकेकी विजये;
वत्रीश जिनवर विचरता, उत्कृष्टे समये ॥ १ ॥
प्रेम धरीने प्रणमीए, ॥ आंचली० ॥
श्रीजयदेव कर्णभद्रजी, लक्ष्मीपति अनंत
विशाल गंगाधरूं प्रियंकर अमरदत्त ॥ प्रेम० ॥ २ ॥
कृष्णनाथ गुणगुप्त छे पद्मनाभ जलधार;

युगादित्य वरदधमी चंद्रकेतु महाकाय सार ॥ प्रेम० ॥ ३ ॥
अरण्यवास हरिहर नमुं अमरकेतु रागेंद्र
भोक्तिदेव अनंतकृत गर्भेत्प्रम सागरचंद्र ॥ प्रेम० ॥ ४ ॥
लक्ष्मीचंद्र महेश्वर ऋषभधमी सोमकांति नेमिभद्र;
अजितभद्र महिमाधर श्रीराजेश्वरचंद्र ॥ प्रेम० ॥ ५ ॥
अभिवनाथ इहां भरतमां, ऐरवते सुचंद;
चोवीस जंबूद्वीपना, जिन ज्ञानदिणंद ॥ प्रेम० ॥ ६ ॥

## ढाळ २ जी

### राग—वीरजिणेसर चरणकमल —ए देशी

प्रथमविदेहे धातकीखंडे जिन कहीए,
विचरता ए जिनवरा प्रणमी शिव लहीए;
वीरसेनने वज्रसेन नीलकांतिक सहीए,
सुंजकेशी रुक्मिकनाथ खेमंकर लहीए;
श्रीमृगांक मुनिमूर्ति विमल आगमिक दुष्कृतहर,
वसुधाधिप महेंद्र धर्मदेव वलमित्र सुंकर ॥ १ ॥
अमृतवाहन पूर्णिमेन्दु रेवांकि कल्पशास्त्र,
नलिणीदत्त विद्यापति सुपार्श्व भानुनाथ विशेष;
विशिष्ट धर्मजन वत्सप्रभ मुनिचंद्र ऋषिपाल,
कुडग महावीर भूतानंद तीर्थेश दयाल ॥ २ ॥
बीजे विदेहे धातकीखंडे जिनचत्रीस,
धर्मदत्त भूमिपती मरुदत्त मुनीश;

सुमित्र नंदीषेण प्रभानंद पद्माकर नामे,
महाघोष चंद्रप्रभ भूमिपाल प्रणाम ॥ ३ ॥
सुमतिसेन अच्युतदेव तीर्थभूत ललितांग,
अमरचंद्र समाधिदेव मुनिचंद्र एकांग;
श्रीमहेंद्रने शशांक जगदीश्वर देवेंद्र,
श्रीगुणनाथ नारायणेंद्र उद्योतजिनेंद्र.
श्रीकपिल प्रभाकरु जीनदीक्षित सकल,
श्रीशिलारजिन वज्रधार सहस्राक्ष जिन अमल;
अशोकाख्य वत्रीशमा ए त्रीजीविजये जाणो,
कर्पटनाथ सिद्धांतनाथ भरते दोइ आणो ॥ ५ ॥
श्रीजयनाथने पुष्पदंत ऐरवते दोय कहीए,
एम अडसठजिनवरा धातकीमांहे लहीए;
महसमे प्रेमे प्रणमतां होय समकित शुद्ध,
साते सुख सहेजे मळे ज्ञानविमलनीदृद्धि. ॥ ६ ॥

ढाळ ३ जी.

राग—भैरवी.

मेघवाहन जीवरक्षकस्वामिरे,
श्रीमहापुरुषने पापहर नामरे;
श्रीमृगांक सूरिसिंह जगत्पूज्य वंदीरे,
सुमति महामहेंद्रने अमरभूति वंदीरे. ॥ ७ ॥
कुमारचंद्र वीरषेण श्रीरमणनाथरे,

स्वयंभू अचल मकरकेतु सिद्धार्थरे,
श्रीसकर विजयदेव नरसिंह महानंदरे,
हदारक चंद्रासप चित्रगुप्ति वंदीरे ॥ ८ ॥
ददरप महायश वज्राक मयुम्ननाथर,
महासेन पुष्पकेतु कामदेव सनाथर;
समरकेतु व पुष्करवरमार्द्धरे,
प्रथम विदेहे करे धर्मनी वृद्धिरे ॥ ९ ॥
श्रीमसभचंद्र महसेन वज्रनामर,
सुवर्णबाहु कुरुचंद शीर्षनामर;
विमलचंद्र यशोधर महाबल सारर,
वयरसेन विमलघोष श्रीमनाथ सारए ॥ १० ॥
मेरुप्रभ भद्रगुप्त दृढसिंह सुव्रत धारर,
हरिचंद्र प्रतिभिय मतिमाधर धारर;
कनककेतु अजितवीर फल्गुमित्र धार्णीर,
ब्रह्मदत्त हितकर वरुणदत्त आणिर ॥ ११ ॥
यसकीर्ति नागेंद्र श्रीमहिमधरदमर,
कृतब्रह्म महेंद्र वर्द्धमान सुरेंद्रदत्त सेवीर;
बीजे विदेहे पुष्कर अर्धी श्रीचंदेनर,
प्रमाप्त प्रमावक दोय भरतमां सेवर ॥ १२ ॥
श्रीमप्रादि वळभद्रजिन दोयरे,
ऐरवते दोय एम अडसठि होयर,
समय वस्तुएमां वंदीये क्षेमर ॥ १३ ॥

ढाळ ४ थी.

कडखानी देशी.

प्रहसमे जिनतणां नाम संभारीये, वारीए कर्मनी कोडि हेला;
विघ्नसंघात्त सवि दुश्मन दरद सवि, दूर जेम पवनथी अर्कतूला;
॥ प्र० ॥ १४ ॥
जिनतणा नामनो यंत्रविधि पूजता, शुद्ध समकित होइ सुयश वाधे;
संकट निकट आवे नहिं तेहने, ज्ञानचारित्रना योग साधे
॥ प्र० ॥ १५ ॥
ज्ञानविमलाजिगुणरयणरयणायरा, सुगुरुपसायथी एह पामी;
भावना पावना करो तुमे भविजना,सिद्धिसुंदरीतणा थाओ स्वामी
॥ प्र० ॥ १६ ॥

---

अथ श्रीशाश्वतीजिनप्रतिमास्तवन.

विधुमंडल परे निर्मली, श्रतदेवी गुणखाण;
प्रणमी जे आगम धुरे, बंभीलीपि जिनवाण. ॥ १ ॥
ते आगममां भाखीया, त्रिहुं लोके सुखदाय;
जिनपडिमा जिनघर वळी, सासयभाव कहाय. ॥ २ ॥
उर्ध्वलोक मांहे चैत्य छे, निर्मल अंक के शंख;
त्रिहुं द्वारे करी सोहीए, सवि विमानना संख. ॥ ३ ॥

## ढाल १ ली

### राग—सामेरी अयो मयोनी देशी

सौधर्मदेवलोक पहेलुं भाण, बत्रीशलाख विमान चैत्य जाण;
तिहां प्रतिमा परिमाण तो, भविक वदो उत्कट भाण ॥ आंचली० ॥
कोडि सत्तावनने साठलाख, इशाने अठावीसलाख,
चैत्य विमाननी शाखतो, ॥ भवि० ॥ ४ ॥
पचासकोडि चालीसलाख प्रतिमा, श्री जीनवरनी सोहे सुखमा;
सुरवर कृत बहु महिमातो, ॥ भवि० ॥ ५ ॥
बारलाख चैत्य सनत्कुमारे, एकवीसकोडि साठलाख उदार;
जिनप्रतिमा सुखकारतो, ॥ भवि० ॥ ६ ॥
माहेन्द्रे चैत्य आठलाख, बिंब चउदकोडी चालीसलाख;
वंछित सुरतरुशाखतो, ॥ भवि० ॥ ७ ॥
चारलाख चैत्य ब्रह्मदेवलोके, सातकोडि बीसलाख विवेके;
प्रतिमा वंदु छेकतो, ॥ भवि० ॥ ८ ॥
सहसपचास लांतके जिनभवन, नेवुंलाख पडिमा गुणसदन;
देखी हरखित मनतो, ॥ भवि० ॥ ९ ॥
शुक्रे चालीससहस्स जिनगेह, बहोंतेरलाख प्रतिमा नमुं नेहे;
सासयभावे जेहतो, ॥ भवि० ॥ १० ॥
चैत्य सहस्सषट छे सहस्रारे, बत्रीसलाख दशलाख उदार;
प्रतिमाने करुं जुहारतो, ॥ भवि० ॥ ११ ॥
आनत प्राणत दो देवलोक दीसे, दो दो शत चैत्य जिनबिंब दीसे;
छत्रीस छत्रीस सहस्सतो ॥ भवि० ॥ १२ ॥

दोढशो दोढशो आरण अच्युते, चेइबिंब सगवीशसहस्स युत;
दीशे अति अद्‌भूतत्तो, ॥ भवि० ॥ १३ ॥
चारदेवलोके एकसोअेंशी, बिंब चैत्यप्रते छे सुजगीशी;
उपरे एकशोवीशतो ॥ भवि० ॥ १४ ॥
प्रथम ग्रैवेयकत्रिके चैत्यसार, एकशोअग्यार तिहां बिंब उदार;
त्रणशेंवीश तेरहजारतो (१३३२०) ॥ भवि० ॥ १५ ॥
मध्यत्रिके चैत्य एकशोसात, बारसहस्स अठशत विख्यात;
चालीश अधिक बिंब जाततो ॥ भवि० ॥ १६ ॥
एकशत चैत्य उपर त्रिके आण, बारसहस्स तिहां बिंब प्रमाण;
ग्रैवेयके इम जाणतो, ॥ भवि० ॥ १७ ॥
पंचानुत्तरे पांच प्रासाद, छसय बिंब प्रणमुं आल्हाद;
नमतां टळे विषवादतो, ॥ भवि० १८ ॥
लाखचोराशी सहसत्ताणुं, त्रेवीश उपरे चैत्य प्रमाण;
उर्द्धलोक मांहे जाणुंतो, ॥ भवि० ॥ १९ ॥
एकशोबावनकोडि लाखचोराणुं. सहस्सचुंमालीश उपरे आणुं;
सातसेंसाठ बिंब जाणुं तो, ॥ भवि० ॥ २० ॥
उर्द्धलोके ए संख्या लहीए, तेह तणी आणा शिरवहीए;
प्रणमी भवभयगमीएतो ॥ भवि० ॥ २१ ॥
उंचा बहोंतेरयोजन जेह, लांबा शत विस्तारे तेह;
पचासयोजन जिनगेहतो ॥ भवि० ॥ २२ ॥
सवि वैमानिके जिनवर गेहि, प्रतिमा सगकर माने देहि;
अद्य पणमय धनपि तेहतो ॥ भवि० ॥ २३ ॥

रायपसेणी मगुल धुम सास्ती, जिनमतिमा जिनसरीखी दाखी;
ज्ञानी गणधरे भाखी यो || भवि० || २४ ||

ढाल २ जी

उलालानी देशी भाष एकवीशो

तिर्यग्लोकेरे सासयजिनघर जिनवरु,
दस संख्यार भाखु सुणजो सुखकरु;
पंचमरुपरे पंच्याशी प्रासाद छे,
दससहस्समरे वसें अधिक प्रतिमा वसे || २५ ||
गजदंतारे विषे वीस प्रासाद छे,
चोवीसशयरे बिंब नमो (जेम) भवछेद छ,
वखारगिरिरे अेंशीप्रासाद सोहामणा,
उत्तरकुरुरे बिंब नमी सहु भामणा || २६ ||
यमकाचलेर दश प्रासाद कह्या तिहां,
जिनपडिमारे बारसें वंदी घे तिहां;
कंचनगिरिरे शीस चैत्य बिंब छत्रीसशें,
चित्रविचित्रेरे पण पण चइ बिंब छसें छसें || २७ ||
कुरुद्रहेरे दशचैई प्रतिमा बारसें,
इक्षुकारेरे चउ चइ बिंब अेंशी धारसें;
दीर्घवैताढयेरे शीसप्रासाद नमीजीए,
जिनपडिमारे चोवीसशें मली लीजीये || २८ ||
दीर्घवैताढयरे चैत्य एकसोसत्तरि कह्या,

वीशसहस्सारे चारशें बिंब जिननां कह्यां;
चैत्य चालीशरे दिग्गजकूटे जाणीए,
चारसहस्सारे आठशें बिंब वखाणीए ॥ २९ ॥
दशतरुरे जंबूप्रमुख जे शाश्वता,
अग्यारशेंसत्तरिरे प्रासाद तिहां मनभावता;
तिहां प्रतिमारे एकलख चालीशसहस्सरे,
चारशें उपरेरे प्रणमीजे सुजगीशरे. ॥ ३० ॥
कंचनगिरिरे सहस्सएक छे देहरां,
तिहां एकलखरे वीशसहस्स वळी जिनवरा;
त्रणशेंअेंशीरे कुंड तणा प्रासाद छे,
पणयालीशरे सहस्सछसय जिन बिंब छे ॥ ३१ ॥
द्रहे अेंशीरे जिनघर सुंदर सोहीए,
तिहां प्रतिमारे छन्नुसय मनमोहीए;
महानदीएरे सत्तरि (७०) जिनघर दाखीए,
तिहां प्रतिमारे सहस्स चोराशी भाखीए ॥ ३२ ॥
सखालेरे मनुष्यलोके चेइहरा,
एकत्रीशशतरे ओगण्याशी उपरे वरा;
तिहां प्रतिमारे त्रणलख एकाशीहजाररे,
चारशेंअेंशीरे उपरे होइ सुखकाररे ॥ ३३ ॥
चार प्रासादरे मानुषोत्तरगिरि जाणीये,
तिहां प्रतिमारे चारशें एंशी वखाणीये.

घारकुंडलेर चारसें छन्नु पिभर,
घार रुचकर घारसें छन्नु भचिर्लंघर ॥ ३४ ॥
न्दीश्वरेर दीपे बावन जिनहरा,
चोसठसयर बिंब अडतालीस मनोहरा;
राजधानीर सोल प्रासाद छे सुन्दरा,
बिंब एकसहस्सर नवसतनीस उपर धरा ॥ ३५ ॥
नंदीश्वरर आठ इम जिणघर कह्या,
आठसहस्सार अणसत अडसठि बिंब लह्या;
सरवाळेर जिणगर कह्यां तिर्च्छालाकनां,
बत्रीसअसयर ओगणसाठ सवि रत्ननां ॥ ३६ ॥
तिहां प्रतिमारे प्रणलक्ख सहसएकाणुया,
अणसत बत्रीर बीस उपर परमाणुया;
इवे रुचकेर कुंडलनंदीसर जिनघरा,
चउबारार साठे ए अवर त्रिबार धरा ॥ ३७ ॥
त्रिबाररे एकसोवीस प्रतिमा कही,
बार इसद्धर एकसतआठ मांहे लही,
एकसो बावीस्सें सोल हुवे बार बारणे,
अठोत्तरसोरे मध्यसिद्धसिंहासणे ॥ ३८ ॥
तिर्च्छालोकरे पांचसे चनुप प्रतिमा हुवे,
धन्य ते नर पूजे मणमेने शुभे;
गजदंतारे वक्खारा कुरु मेरुवने,
इक्षुकारेरे मानुषोत्तरे जिनभवनने ॥ ३९ ॥

पचासजोयणरे दीर्घ विस्तारे पचवीश छे,
छत्रीश जोयणरे उंचा सवि भविमने रुचे;
एम असुरनीरे जेह निकाये जिनघरा,
सवि जाणोरे एह प्रमाणे भविवरा. ॥ ४० ॥
मेरुचूलारे यमक कंचन नदी कुंड द्रहे,
दोइ वैताढयेरे दिग्गजकूट तरुवर जहे,
कोशदीहारे अर्द्धकोश विस्तार छे,
चौदशेंचालीशरे धनु उंचा सवि चेइअ छे. ॥ ४१ ॥
कल्याणकरे श्रीजिनना सुरवर करे,
अट्ठाइमहोत्नवरे नंदीश्वर हर्षभरे;
इंद्राणीरे राजधानीए आवी मली,
करे नाटकरे भावना भावे मनरुली. ॥ ४२ ॥
शाश्वतचैत्यरे षट्स्थानक हुवे अतिभला,
रंगमंडपरे मुखमंडपमणिपीठ भला;
थूभ अशोकतरुरे वापी निर्मलजल भरी,
चैत्यध्वजरे प्रतिचैत्ये होइए खरी. ॥ ४३ ॥
एम महिमारे विस्तारे आगमे घणा,
जीवाभिगमेरे जंवुपन्नत्तीप्रमुखे सुण्या;
बहु देवारे देवी भक्ति करे घणी,
हित सुख निवृत्तिरे धर्मकाजे समकितधणी. ॥ ४४ ॥

ढाल ३ जी

देशी ललनानी

अधोलोके जिनभवन जे, भवनपतिमां सार ललना;
भेद चोसठलाख छे, असुरनिकाय मझार ललना
॥ शाश्वता जिनवर वंदीए ॥ ४५ ॥
एकसोपंदरकोडि उपर, बिंब अछे बीसलाख ललना
चुलसीलक्ख नागकुमारमां, चैत्य ए भवनसाख ल० ॥ शा० ४६ ॥
बिंब तिहां वळी जाणीये, एकसोएकावनकोडी ललना
वीसलाख वळी साधिका, नमणीजे करजोडि ल० ॥ शा० ॥४७॥
बहोंतेरलाख सुवर्णकायमां, जिनघरनेइ प्रमाण ललना
एकसोबोगणीसकोडि छे, साठलाख उपर जाण ल० ॥शा०॥४८॥
विद्युत् अग्नि द्वीप उदधिमा, दिशि थणीयकुमार ललना
ए पद् असुरनिकायमां, सरीखा भेद उदार ल० ॥ शा० ॥ ४९ ॥
बहोंतेरलाख जिनघर भला, प्रत्येक सुखकार ललना
एकसोछत्रीशकोटि बिंब भला, एसीलाख मनोहार ल०॥शा०॥५०॥
छन्नुलाख जिनघर भला, वायुकुमारनिकाय ललना०
एकसोबहोंतेरकोडि बिंब छे, अंशीलाख सुखदाय ल० ॥शा०॥५१॥
सातकोडिबिंहुंतेरलख्खा, सविचेइ अहोलोक ललना०
तेरसेंनव्यासीकोडि छे, साठलाखबिंबनो थोक ल० ॥शा० ॥ ५२ ॥
चैत्य चैत्य प्रतिबिंब छ, एकसोअंशी प्रमाण ललना
सातहाथ उचा उत्सेधांगुले, ब जे सुविहाण ल० ॥ शा० ॥ ५३ ॥

नवनिकाय नागादिके चेइ, पचवीश योजनदीह ललना.
साढावार पहुलपणे, अठदस उंचा लीह ल० ॥ शा० ॥ ५४ ॥
तास अर्द्धमाने कह्या, व्यंतरमां जिनगेह ललना.
असंख्यात ते जाणीये, प्रणमुं आणी नेहं ल० ॥ शा० ॥ ५५ ॥
असंख्यात जिनघर अछे, ज्योतिषीमां गुणधाम ललना.
मान तेहनुं नवि कह्युं, पूरव ग्रंथ प्रमाण ल० ॥ शा० ॥ ५५ ॥
व्यंतर ज्योतिषी भवनमां, शाश्वत चैत्ये होय ललना.
अशीअधिकएकशतवली, विंव सभा मिली जोय ल० ॥शा० ॥५७॥
उत्पाद अभिषेक अलंकृते, व्यवसाय सुधर्मा नाम ललना,
सभा पांच त्रिवारणे, चउ चउ प्रतिमामान ल० ॥ शा० ॥ ५८ ॥
साठविंव सभा पांचना, एकशोवीश प्रासाद ललना,
एम मली एकशोएंशी हुवे, प्रणमुं मन आल्हाद ल० ॥ शा०॥५९॥
वैमानिक जिनघर परे, दीर्घपृथु उच्चमाण ललना.
रुचककुंडलनंदीसरे, चैत्यतणा परिमाण ल० ॥ शा० ॥ ६० ॥
ऋषभचंद्रानन नामथी, वारिषेण वर्द्धमान ललना.
षड्द्रव्यतणी पेरे शाश्वती, जिनप्रतिमा परिमाण ल० ॥ शा० ॥६१॥

ढाल ४ थी.

राग—माइ धन सुपनांतरे ए देशी.

हवे सघला शासय चैत्य संख्या कहुं सार,
त्रिभुवनमां जे छे दीठे जयजयकार;
आठकोडिसत्तावनलाखविसयने व्यासी,

वंदे वली पूजे जे होइ समकितवासी ॥ ६२ ॥

पन्नरसयकोडि बेंतालीस वली कोड,
तेम लाखअठावन छत्रीससहस्स तेम जोडि;
ऐंशी वली साधिक प्रतिमा त्रिभुवनमांहि,
ए शासयभाषे भणतां मन उच्छाहि ॥ ६३ ॥

एहथी वली अधिक कुट नदी द्रह शैले,
मसुस वली संभव वृद्ध कहे परी शील;
तिहां हवे नहीं कोइ बहुश्रुतवचनप्रमाण,
पण गाथासंख्या ए सवि स्थानक जाण ॥ ६४ ॥

वली समकिम तीरथ अपरमिजे केइ नामी,
शत्रुंजय अष्टापद समेत अबुर्दगिरि नाम;
जिहां जिनकल्याणक थपा पावा नाम,
सावत्थी गजपुर राजगृह अभिराम ॥ ६५ ॥

पुरपट्टण गामे नामे विविधप्रकार,
भक्ति (१) मंगल (२) निश्राकृत (३) अनिश्राकृत (४) चार;
त्रिभुवनमां वली छे जिनवरना आकार,
तस वंदन करतां बोधिबीज विस्तार ॥ ६६ ॥

समकितशुद्ध करवा मोटा एह उपाय,
शुभयोग निमित्ते जिनपूजा चित्लाय;
निक्षेपा चार जिनना एकणिरूप,
ध्याता भवि होवे निरावरण निज रूप ॥ ६७ ॥

वीतरागनी बुद्धि वीगरागता आणी,
जिनप्रतिमा जाणो जिनसरीखी भविप्राणी;
श्रीज्ञानविमलप्रभु प्रणमे जे जनवृंद,
तस उदय अनोपम अनुभव परमाणंद ॥ ६८ ॥

---

## अथ श्रीसिद्धचक्रनुं चैत्यवंदन.

श्रीसिद्धचक्र आराधतां, सुखसंपत्ति लहीए;
सुरतरु सुररमणी थकी, अधिकज महिमा कहीए. ॥ १ ॥
अष्टकर्म हाणी करी, शिवमंदिर रहीए;
विधिशुं नवपद ध्यानथी, पातिक सवि दहिए. ॥ २ ॥
सिद्धचक्र जे सेवशे, एक गना नरनार;
मनवांछित फळ पामशे, ते सवि भुवन मजार. ॥ ३ ॥
अंगदेश चंपापुरी, तस केरो भूपाल;
मयणा साथे तपतपे, ते कुंवर श्रीपाल. ॥ ४ ॥
सिद्धचक्रजीना नमणथी, जस नाठा रोग;
तत्क्षण त्यांथी ते लहे, शिवसुख संजोग. ॥ ५ ॥
सातसें कोढियाहंता, हुवा निरोगी जेह;
सोवनवाने जलहले, जेहनी निरुपम देह. ॥ ६ ॥
तेणे कारण तमे भवि जनो, प्रह उठी भक्ते;
आशो मास चैतर थकी, आराधो जुगते. ॥ ७ ॥
सिद्धचक्र त्रण कालना, वंदो वळी देव;

परिक्रमणुं करी उभयकाळ, जिनवर मुनि सेव ॥ ८ ॥
नवपद ध्यान हवे धरी, मतिपाळो भवि शील;
नवपद आंबिल तपतपो, जेम होय लीलम लील ॥ ९ ॥
पहेलुं पद अरिहंतनुं, नित्य कीजे ध्यान;
बीजुं पद वळी सिद्धनुं, करीए गुणग्राम ॥ १० ॥
आचारज त्रीजे पदे, जपतां जय जयकार;
चोथुं पद उवज्झायनुं, गुण गाउं उदार ॥ ११ ॥
सर्व साधु वंदु सही, अढीद्वीपमां जेह;
पंचमपदमां ते सही, धरजो धरी सनेह ॥ १२ ॥
छठे पदे दर्शन नमुं, दर्शन अजवाळुं;
ज्ञानपद नमु सातमे, तेम पाप पखाळुं ॥ १३ ॥
आठमुं पद रुडे जपुं, चारित्र सुसंग;
नवमेपद बहु तप तपो, जिम फल लहो अभंग ॥ १४ ॥
एही नवपद ध्यानथी, जपतां नाठे कोढ
पंडित धीरविमल तणो, नय वंदे करजोड ॥ १५ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीसिद्धभगवाननुं चैत्यवंदन

सिद्ध सकल समरुं सदा, अविचल अविनाशी; थाश्ये छे वळी थाय छे, थया अडकर्म विनाशी ॥ १ ॥ लोकालोकप्रकाश भास, कहेवा कोण शूरो; सिद्ध बुद्ध पर पारगत, गुणथी नहि अधूरो ॥ २ ॥ अनंत सिद्ध एणीपेरे नमुं ए, वळी अनंत अरिहंत; ज्ञानविमल गुण संपदा पाम्या ते भगवंत ॥ ३ ॥ इति० ॥

अथ श्रीअतीतचौवीशीजिनचैत्यवंदन.

अतीतचौवीशी प्रथम देव, जिन केवलज्ञानी; निर्वाणी सागर हा-जस विमल अभिधानी ॥ १ ॥ सर्वानुभूति श्रीधर सुदत्त, दामोदर सुतेजा, स्वामी सुव्रत सुमतिने, शिवगती सुहेजा ॥ २ ॥ अस्ताघ नेमीश्वर अनिल, यशोधर कृतार्थ जिणेश; शुद्धमति ने शिवंकरो, स्यंदन संप्रति कहेश ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीवर्तमानचोवीशीजिनचैत्यवंदन.

ऋषभ अजित संभव अभि-नंदन, आराधुं सुमति; पद्मप्रभने सुपास चंद्र-प्रभ ध्याउं सुविधि ॥ १ ॥ शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, विमलनाथ अनंत; धर्म शांति ने कुंथुनाथ, अर मल्लि भगवंत ॥ २ ॥ मुनिसुव्रत नमि नेमजी, पार्श्व वीर चोवीश; धीरविमलपंडित तणो, कहे ज्ञानविमलसूरीश ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीअनागतचौवीशीजिनचैत्यवंदन.

पद्मनाभ पहेला जिणंद, श्रेणिक नृपति जीव; सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक जीव ॥ १ ॥ श्रीसुपास त्रीजा वली, जीव कोणिक उदाइ; स्वयंप्रभ चोथा जिणंद, पोट्टिलमुनि भाइ ॥ २ ॥ सर्वानुभूति जिन पांचमा, दृढायुश्रावक जाण; देवश्रुत छठ्ठा जिणंद, कार्तिकशेठ वखाण ॥ ३ ॥ श्रीउदयजिन सातमा, शंख श्रावक जीव; श्रीपेढाल जिन आठमा, आनंदमुनि जीव ॥ ४ ॥ पोटिल नवमा वं-

विप, जीव जेह सुनंद, शतकीर्त्ति दशमा जिणंद, श्रावकभाव ए मा
णंद ॥ ५ ॥ सुव्रतजिन अगीयारमा, देवकीगणी जाण, अममजिन
वर बारमा श्रीकृष्ण गुण खाण ॥ ६ ॥ निष्कषाय जिन तेरमा,
सत्यकीविद्याधर; निष्पुलाक जिन चौदमा, बलभद्र सोहंकर ॥ ७ ॥
श्रीनिर्मम जिन पंदरमा, जीव सुलसा श्राविका; चित्रगुप्त जिन सो
लमा, रोहिणी जीव भाविका ॥ ८ ॥ श्रीसमाधि जिन सत्तरमा,
रेवती श्राविका जाण; श्रीसंवर जिन अढारमा, जीव सताली वखाण
॥ ९ ॥ श्रीयशोधर ओगणीशमा, जीवकृष्णद्वीपायन; विजयनाम
जिन वीशमा, जीवकर्ण सहायण ॥ १० ॥ एकवीसमा श्रीमल्लिनाथ
कृष्ण नारद कहीए; अंबड श्रावक जीव देव, बावीसमा लहीए ॥
११ ॥ अनंतवीर्य तेवीशमा, जीव अमरनो जेह; श्रीभद्र जिन चोवी
शमा, स्वातिबुद्ध गुणगेह ॥ १२ ॥ ए चोवीशे जिणवरा, होशे आ
वते काले; भाव सहित ते वंदिए, करजोडी आले ॥ १३ ॥ लंछन
वर्ण प्रमाण आयु, अंतर सवि सरिखा; समति जिन चोवीशी पर,
चढते सवि निरखा ॥ १४ ॥ पंच कल्याणक तेहना ए, होशे पर्व
ज दिवस; श्रीरविसमगुरुना कहे, ज्ञानविमलसूरीश ॥ १५ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीवीशविहरमानजिनचैत्यवंदन.

पहेला जिनवर विहरमान, श्रीसीमंधर स्वामी, युगमंधर बीजा
नमुं; तुम अंतरजामी ॥ १ ॥ त्रीजा बाहु जिनेसरु, प्रणमुं मनरंग;
चोथा जिन श्रीसुबाहु, वंदु भली जुगते ॥ २ ॥ श्रीसुजात पंचम

जिन ए, छट्ठा स्वयंप्रभ स्वामी; ऋषभानन जिन सातमा, हुं प्रणमुं शिरनामी ॥ ३ ॥ अनंतवीर्य जिन आठमा, सूरप्रभ छे नवमा; श्री-विशाल दसमा जिणंद, जस मोटो महिमा ॥ ४ ॥ श्री वज्रधर अगीयारमां, बारमा चंद्रानन; चंद्रबाहु जिन तेरमा, जसवर्णो कंचन ॥ ५ ॥ भुजगस्वामी जिन चौदमा, वंदु उलट आणी; श्रीइश्वर जिन पंदरमा, नमीए नित्य सुविहाण ॥ ६ ॥ नेमिप्रभ जिन सोलमा, सुखदायक जेह; सत्तरमा श्रीवीरसेन, वंदु धरी नेह ॥ ७ ॥ महाभद्र अढारमा, देवजशा ओगणीस; अजित वीर्यजिन वीशमा, ज्ञानविमल-सूरीश ॥ ८ ॥ इति० ॥

---

## अथ श्रीसाधारणजिनचैत्यवंदन.

चउजिन जंबुद्वीपमां, अडधातकी खंडे; पुष्कर अर्ध आठ जाण, एम विशेष अखंडे ॥ १ ॥ अडपणवीस चउवीस नवम, विजये विचरंताः बाल तरुण नृप पद पणे, वळी अपर अरिहंता ॥ २ ॥ सित्तेरसो उत्कृष्टथी ए, भरहेरवय प्रमाण; ज्ञानविमळ जिनराजनी, शिर धरीये शुभ आण ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

## अथ श्रीशाश्वतजिनचैत्यवंदन.

लाख बहोत्तेर कोडी सात, अधो लोक प्रासाद; तिहां प्रतिमा वळी वंदिए, मनमां धरी आल्हाद ॥१॥ तेरसेकोडि नव्याशी कोड, साठ लाख सोहावी; व्यंतर ज्योतिषीमा प्रासाद, तस सख्या भावी

॥ २ ॥ भवनपतिमां ए कह्यां ए, सासय जिनवर गेह; ज्ञानविमलथी जाणीए, आगम निःसंदेह ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीशाश्वतजिनप्रतिमासंख्याचैत्यवंदन

तिर्च्छालोके त्रण सहस, बेसय ओगणसाठ; जिनघर ए छे शाश्वतां, सिद्धां बिंब तपाठ ॥ १ ॥ सहस एकाणुं लाख त्रण, त्रणसय ने चेवीश; भणमुं अवर अशाश्वता, वहुलां पे दीशे ॥ २ ॥ अ धोलोके सगकर मिलिए, मनुज पंचसय मान; त्रिच्छा लोक वंदिए, ज्ञानविमल चित आण ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीऊर्ध्वलोकस्थितशाश्वतजिनचैत्यवंदन

ऊर्ध्वलोके सोधम आदि, अनुत्तर जारेह; सहससताणुं चुलसी, लख तेवीस जिनगेह ॥ १ ॥ एकसोकोड बावनकोडि, वली चोराणुं लाख; सहस चुमालीस सातसें, उपर साठ भाख ॥ २ ॥ सगकर माणे अच्चुत लगे, एकसयवीशी जिन बिंब; एक सयवीस अनुत्तर लगे, ज्ञानध्यान अविलंब ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीशाश्वतजिन चैत्यवंदन

लाख सतावन कोडिने, अडसय व्यासी निस्य; चैत्य सुहाक शाश्वतां, प्रतिमानी भरखे ॥ १ ॥ कोडिपनरसय उपर, बेंतालीस कोडि; अडावनसहस छत्रीस, उपर एंशी जोडि ॥ २ ॥ एम त्रिभु-

वनमां शाश्वता ए, चैत्यविंब जिनराय; भाव धरीने प्रणमतां, ज्ञानविमल सुख थाय ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीपंचतीर्थादि चैत्यवंदन.

शत्रुंजय रैवतगिरि समेत, अर्बुद अष्टापद; पावा चंपा राजगेह, मथुरादिक जिनपद ॥ १ ॥ जिहा जिन पंच कल्याणक, स्थानक सुविशेष; लघु अंगुठ प्रमाण विंब, जिनना जिहां लेखे ॥ २ ॥ नाम स्थापना द्रव्यथीए, भाव निक्षेपे सार; ते सविओने वंदना, ज्ञानविमल जयकार ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीचौवीशजिनगणधरादिसंख्यामय चैत्यवंदन.

एकसहसने चारसें, वावन वळी जाणो; सविजिनना पुंडरीक आदि, अंते गौतम आणो ॥ १ ॥ अडवीशलख अडयालसहस, मुनि जिनकर दीशा; लखचुंमालीस सहसछियाल, चउसय षट शिष्या ॥ २ ॥ ए साहुणी जिनवर तणी, ए सविहुंती जाण; शुद्धसंयम आराधता, ज्ञानविमल गुणखाण ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीउत्कृष्टकालना केवलिसाधुओनी संख्यामय चैत्यवंदन.

उत्कृष्टे काले हुवे, केवली नव कोड; साधु वली नवसहसकोड, संप्रति नवि खोड ॥ १ ॥ वेकोडि केवलधरा, मुनि दोय कोडि सहस; संयम गुणमणि ज्ञान ध्यान, जे हुवा ने होशे ॥ २ ॥ ते स-

थिव ने वदना ए, ज्ञानविमल करि भाव; गुणिजन मुनिजन वदना भवभव तरवा नाव ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीअढारदूषणवर्जनगर्भित जिनचैत्यवंदन

दान लाभ भोगोपभोग, वल पण अंतराय; हास्य अरति रति भय दुगछा, शोक पन्च कषाय ॥ १ ॥ काम मिथ्यात्व अज्ञान निद्रा, अविरति ए पांच; राग द्वेष दोय दोष, ए अढारस संच ॥ २ ॥ ए जेणे दूर कर्या ए, तेने कहीये देव, ज्ञानविमलप्रभु चरणनी, कीजे अहनिश सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीअढारदोषवर्जनगर्भित जिनचैत्यवंदन

क्रोध मान मद लोभ माया, अज्ञान अरति रति, हिंसाश्रिक अनंग ते, मत्सर अप्रीति ॥ १ ॥ चोर भी तणे प्रीति रति, क्रीडा प्रसग; ढाप अढार प्रकार निकर, नहि जेणे अंगे ॥ २ ॥ देव सवे ज्ञिर सहरो ए, ते कहिए निरधार; ज्ञानविमलप्रभु सेवना, पुण्य तणा भंडार ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीआठमाविहार्यगर्भितजिन चैत्यवदन

वार गुणो तनुथी अशोक, देव दुंदुभी वाजे; चामर विस चिहु दिशा, वार छवि राजे ॥ १ ॥ सिंहासन सपादपीठ, भामडल दीपे त्रिभुवनमनि मीठासथी, अमृतरस भीप ॥ २ ॥ कुसुम वृष्टि पचवर-

णनीए, प्रातिहार्यअड एह; ज्ञानविमलसूरि इम कहे, छे तेहशुं मुज नेह. ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीअतिशयगर्भितजिनचैत्यवंदन.

अतिशय चार अति भला, होय जन्मथी साथे: रोग शोग मल खेद रहित, जस अंग सनाथ ॥ १ ॥ पंकज परिमल सासोश्वास, गोखीर सरिखा; रुधिर मास आहारनिहार, नहि केणे निरखा॥२॥ घातिकर्मक्षयथी हुवे ए, अतिशय वली अगीयार; ओगणीस सुरकृत इम चोत्रीस, अतिशय ज्ञान भंडार ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीपंचपरमेष्ठिगुणगर्भितजिनचैत्यवंदन.

बार गुण अरिहंत देव, प्रणमी जे भावे; सिद्ध आठ गुण समरतां, दुख दोहग जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण छत्रीस, पचवीश उवज्झाय; सत्तावीस गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सय गुणमली ए, इम समरो नवकार; धीरविमलगुरुनो कहे, ज्ञान विमल सुखकार ॥ ३ ॥ इति० ॥

---

अथ श्रीशरीरवर्णगर्भितजिनचैत्यवंदन.

पद्मप्रभने वासुपूज्य, दोय राता कहीये; चंद्रप्रभने सुविधिनाथ, दोय उज्वल लहीये ॥ १ ॥ मल्लिनाथने पार्श्वनाथ, दोय नीला निरख्या; मुनिसुव्रतने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥ २ ॥ सोले जिन

कचन समा ए, एहवा जिन चउवीस; धीरविमल गुरुराजनो कहे ज्ञानविमलसूरीस ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीशरीरप्रमाणगर्भितजिनचैत्यवंदन

पचसया धनुमान जाण, श्रीप्रथम जिणंद; पंचास उणा करो; यावत सुविधि जिणंद ॥ १ ॥ दश उणा करतां हुवे, आ अनंत प चास; पंचोणुं दश धनुष तेम, नव करे छे श्रीपास ॥ २ ॥ सात हाथ तनु वीरनी ए, एहवा जिन चोवीश; भाव धरीने वंदना करे ज्ञानविमलसुरीश ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीलांछनगर्भितजिनचैत्यवंदन

वृषभ गज हय कपि क्रौंच, कमल स्वस्तिक शशि मच्छ; श्रीव च्छ सहिग श्रीप महिष, सुयर तिम अच्छ ॥१॥ सेण वज्र मृग छा गलो भाखि नंदावर्त; कुंभ कच्छप नीलु कमल, शंख फणि सिंह अ हंस ॥ २ ॥ ऋषभादिक जिनवर तणाए, एहवा जिन चउवीस; ज्ञान विमल प्रभु सेवतां, सुख लहे विश्वावीस ॥ ३ ॥

---

अथ श्रीभवगणनागर्भित जिन चैत्यवंदन

प्रथम जिणंद तणा भवा, भव तेर कहीजे; शांति तणा भव बार सार, नव भव नेम लहीजे ॥ १ ॥ दश भव पास जिणंदना, स त्तावीश श्रीवीर; शषतीर्थंकर त्रिहुं भव, पाम्या भवसमुद्रतीर ॥ २ ॥

जिहांथी समकित फरसीयुं ए, तिहांथी गणीए एह, धीरविमल पंडित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीभवगणनागर्भितजिनचैत्यवंदन.

सत्तरिसय ठांणे कह्या, ए भव जिनवरना; वीजे ग्रंथे दाखिया, नव मुनिसुव्रतना ॥ १ ॥ चंद्रप्रभना आठ भव, नव भव सुविधिजिणंद, ऋषभ तेर ने शांति वार, नवभव नेमिजिणंद ॥ २ ॥ दश पास शेष ने त्रिहुं. वीर तणा सगवीश; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, वंदो जिन चउवीश ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीदीक्षातपगर्भितजिनचैत्यवंदन.

सुमतिनाथ एकासणुं, करी संयम लीध; मल्लि पास जिनराय दोय, अट्ठमे सुप्रसिद्ध ॥ १ ॥ छठ्ठ भक्ते करी अवर सर्व, लीये संयम भार; वासुपूज्य करी चोथ भक्त, थया श्रीअणगार ॥ २ ॥ वर्ष अंने पारणुं करे ए, इक्षु रसे रिसहेश; परमान्ने वीजे दिने, पारणुं अवर जिनेश ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीदीक्षास्थानगर्भितजिनचैत्यवंदन.

विनीता नगरीए लीये, दीक्षा प्रथमजिणंद; द्वारामतीए नेमिनाथ सहसावन वृंद ॥ १ ॥ शेषतीर्थंकर जन्मभूमि, लीये संयम भार; अणपरण्या श्रीमल्लिनाथ, तेमज नेमिकुमार ॥ २ ॥ वासुपूज्य पास वी-

रचीए, रूपं थया नमि एह; अवर राज्यमोगवी थया, ज्ञानविमल गुणगेह ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीदीक्षापरिवारगर्भितजिनचैत्यवंदन

चार सहस्सथी ऋषभदेव; श्रीवीर एकाकी; त्रण सत साथे मल्लि पास, सहस्स साथे बाकी ॥ १ ॥ षट्‌सत साथे वासुपूज्य, लीये संयम भार; मणपज्जव तिहां ऊपजे, मविने सुखकार ॥ २ ॥ एम चउवीशे जिनवराए, समार सुख थाय; ज्ञानविमलसुरि एम कहे होजो जिनसुपसाय ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीमोक्षगमनपरिवारगर्भितजिनचैत्यवंदन

एकाकी श्रीवीर पास, तेत्रीस मुनि साथे; पचशया छत्रीस नेमि नवसत शुं शांति ॥ १ ॥ पणसय शु मल्लि सुपास, अडसय शु धर्म; षट्‌सत मुनि शुं वासुपूज्य, लह्यां ते शिव मर्म ॥ २ ॥ अनंतनाथ-जिन सहस्सशु ए, ऋषभ ने दस हजार; पद्मप्रभने आठशें, उपर त्रण उदार ॥ ३ ॥ विमलनाथ षट्‌सहस्सशु, सिद्धा सुखकार; ऋष-भदेव अष्टापदे, नमीश्वर गिरनार ॥ ४ ॥ चंपा वासुपूज्य वीर-पा-वापुरी सार; अष्टकर्मनो क्षय करी, पाम्या भवजल पार ॥ ५ ॥ शेष वीश संमेत गिरिए, शिवसुख लह्यां उदार; ज्ञानविमल सुख संपदा, जेन अमम अपार ॥ ६ ॥ इति ॥

---

## अथ श्रीसीमंधरजिनचैत्यवंदन.

पहेला प्रणमुं विहरमान, श्रीसीमंधर देव; पूर्व दिशे इशान कुणें, वंदु हुं नित्यमेव ॥ १ ॥ पुख्खलवइ विजया तिहां, पुंडरीकिणी नयरी; श्रीश्रेयांस राजा भलो, जीत्या सवि वयरी ॥ २ ॥ देहमान धनुष्य पाचशें, माता सत्यकी नंद; रुकिमणी राणी नाहलो, वृषभ लंछन जिनचंद ॥ ३ ॥ चौराशीलाखपूरव आय, सोवनवरणीकाय; वीश लखपूरव कुमार वासि, तेम तेसठ राय ॥ ४ ॥ गणधर चोराशी कह्या ए, मुनिवर एकसो कोडि; पंडितधीरविमल तणो, ज्ञानविमल कहे करजोडी ॥ ५ ॥ इति. ॥

---

## अथ श्रीनवपदनुं चैत्यवंदन.

दर्शन ज्ञानचारित्र भेदे, पण पण पण पंदर; तप सग पण वावीश ए, शत एक अठ अवर ॥ १ ॥ तेरसहस्य गुणुणुं गणी, नवपद आराधो; लब्धि सिद्धि विद्या निधान, सहेजे शिवपद साधो ॥ २ ॥ बांधो एम भवकर्मने, पामो सिद्धपर्याय; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, शुद्धद्रव्य होइ जाय ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

## अथ श्रीमेरुगिरिचैत्यवंदन.

जंबु पूर्व कुरुक्षेत्र माहि, वडो मेरु सुदर्शन; लाखजोयण उन्नत प्रमाणे, शत सघळो वनि कंचन ॥ १ ॥ भद्रशाल नंदनवने, सुमनस पांडुक नाम; चार चार जिनगेह त्यां, चूलाए एक धाम ॥ २ ॥

सत्तर प्रासाद एम शाश्वताए, पासे मेरु मझार; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, ते वंदो निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीधातकीखंडपुष्करार्द्धगतमेरुगिरिचैत्यवंदन

धातकीखंडे मेरु दोय, एक विजय बीजो अचल; पुष्करार्द्धे पण जोय मेरु, मंदर विद्युन्मम ॥ १ ॥ सहस्स चाराशी जोयणमान, मेरु सघळा जाणु, सत्तर प्रासाद छे एम मळी, पंचाशी मस्तार्णु ॥२॥ कंचनवर्णेए शाश्वता ए, जीवाभिगमविचार; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, धन्य जे करे दीदार ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीज्योतिश्चक्रस्थितजिनचैत्यवंदन

समभूतलथी उपर, ज्योतिश्चक्र कहीये; आठ प्रदेशनो मच्यो, मध्यसमभागमहीजे ॥ १ ॥ सगसयनवति ( ७९० ) जोयणे, उंचा छे तारा; आठसये पुरा थया, रविमंडल सारा ॥ २ ॥ अेंशीजोयण उपर ए, शशि भस्त बुध गुरु मंद; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, ए ज्योतिश्चक्र अमंद ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीज्योतिश्चक्रस्थितशाश्वतजिनचैत्यवंदन

नवसें जोयण ज्योतिश्चक्र, पुष्करार्द्धे कहीये; पुष्करार्द्धथी ज्योतिश्चक्र, स्थिरभावे कहीए ॥ १ ॥ असंख्यद्वीप अने समुद्र, शाश्वती जिनप्रतिमा; जीवाभिगमे ए विचार, मोटो जस महिमा ॥ २ ॥

नामाकारद्रव्यभावथीए सवि क्षेत्रे सर्वकाल; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, जिनबिंबु ए सवि आल ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीजन्माभिषेकस्थानगर्भितजिनचैत्यवंदन.

पांडुकंबल चारे शिला, एक दक्षिण उत्तर; दोय शिला वली जाणीये, एक पूरब एक अपर ॥ १ ॥ पूर्व पश्चिम दोय दोय, सिंहासन होय; दक्षिण उत्तर एक एक, सिंहासन जोय ॥ २ ॥ जन्म समय दशवीशनो ए, अेकण समये जन्म; ज्ञानविमलसूरि एम कहे, ते वंदु शुभसद्म ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीबीजतिथिनुं चैत्यवंदन.

दुविध धर्म आराधवा, भविजन बीज आराधो; जेम अंतर परमातमा, संप्राप्ति फल साधो ॥ १ ॥ अभिनंदन जिन सुमतिनाथ, वली शीतलस्वामी; इत्यादिक बहुजिनवरे, केवलसिरि पामी ॥ २ ॥ जन्म दिवस पण केइकनाए, केइक लह्या निर्वाण; ज्ञानविमलगुणथी वधे, जो कीजे तप मंडाण ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

अथ श्रीबीजतिथिनुं चैत्यवंदन.

दुविधबंधनने टालीए, जे वली रागने द्वेष; आर्त्तरौद्र दोय अशुभ ध्यान, नवि करो लवलेश ॥ १ ॥ बीजदिने वली बोधि बीज, चित्त ठांणे वावो; जेम दुःख दुर्गति नवि लहो, जगमां जश चावो

॥ २ ॥ भावो रुडी भावना ए, भावो शुभ गुणठाण; ज्ञानविमल वरतेजथी होय कोडिकल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीज्ञानपंचमीतिथिनुं चैत्यवंदन

त्रिगडे बेसी श्री नेमिजिन, बोल्या धर्म सुजाण; सोहम विस्तारे सुगुरु, पंचमी दिन कल्याण ॥ १ ॥

ज्ञानसमाने सोहामणा, श्रीनेमिजिणेसर; समवसरण बेठा कहे, उपदेश सोहंकर ॥ १ ॥ पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण; पांच वरस साडा तथा, ए छे तपपरिमाण ॥ २ ॥ प्रेम वरदत्तगुण मंजरीए, आराध्यो तप एह; ज्ञानविमलगुरु एम कहे, धन्य धन्य जगमां तेह ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीअष्टमीतिथिनुं चैत्यवंदन

आठत्रिगुण जिनवर तणी, नित्य कीजे सेवा; वहाली मुज मन अतिघणी, जिम गज मन रेवा ॥ १ ॥ प्रातिहारज आठ शुं, ठकुराइ छाजे; आठे मंगल आगले जेहने वली राजे ॥ २ ॥ भांजे भय आठ मोटकांए, आठ करम कर दूर; आठमदिन आराधतां, ज्ञानविमल भरपूर ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीअष्टमीतिथिनुं चैत्यवंदन

राजसिद्धारथ कुलतिलो, त्रिशलादे मात; हरिलंछन कंचनवाने, सात हाथ सोहात ॥ १ ॥ आयु बहोंतेर वरस मान, सफलारथ साधी, त्रिपद पाम्या वरीय ध्यान, संजम आराधी ॥ २ ॥ आठे

मद छंडी करीए, प्रणमो वीरजिणंद, ज्ञानविमलप्रभु सेवतां, नित्य नित्य आनंद ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

### अथ श्रीअग्यारशतिथिनुं चैत्यवंदन.

अंग अग्यार आराधीए, एकादशीदिवसे; एकादशप्रतिमा वहो, समकित गुण विकसे ॥ १ ॥ एकादशी दिवसे थया, दीक्षाने नाण; जन्म लह्या केइ जिनवरा, आगम परिमाण ॥ २ ॥ ज्ञानविमल गुण वाधतां ए, सकलकलाभंडार; अग्यारश आराधतां, लहीये भवजल पार ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

### अथ श्रीअग्यारशतिथिनुं चैत्यवंदन.

आज ओच्छव थया मुज घरे, एकादशी मंडाण; श्रीजिननां त्रणशें भला, कल्याणक घर जाण ॥ १ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरघट, कल्पवेली फळी माहरे; एकादशी आराधतां, बोधिबीज धणुं चित्त ठारे ॥ २ ॥ श्रीनेमिजिणेसर पूजतांए, पहोंचे मनना कोड; ज्ञानविमळगुणथी लहो, प्रणमो बे करजोडी ॥ ३ ॥ इति. ॥

---

### अथ श्रीचौदशतिथिनुं चैत्यवंदन.

चउसुपन लहे मावडी, सवि जिनवर केरी; ते जिन नमतां चौदराज–लोके न होय फेरी ॥१॥ चौदरत्न पति जेहनां, प्रणमे पद आवी; चौदविद्याना थया जाण, संजमसिरि आवी ॥ २ ॥ चौदरा

जसिर उपर, सिद्ध सकलगुणठाण; ज्ञानविमल प्रभुध्यानथी, होय अचल अठिठाण ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीचौदशतिथिनुं चैत्यवंदन

चौदसुपन वरकारणे, त्रिशलावर्द्धमान, वर्द्धमान सुख आपवा, एह परमनिधान ॥ १ ॥ वर्धमानजिनराजनो, करो भविका ध्यान; चौदपूरव भेद भीषना, ए वखना प्रधान ॥ २ ॥ चौद पूरवनो सार छे ए, चौदशीए जिनराज; ज्ञानविमलथी जाणीए, एना सकल दीदाज ॥ ३ ॥ इति ॥

---

अथ श्रीचंदकेवलिना रासमांथी चैत्यवंदन

श्रीरागण गीयते

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेसर श्रीजिनराज नमो; प्रथम जिनेसर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अरिहंत० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परममहोदय, अविनाशी अकलंक नमो; अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि प्रवचनजलधिमयंक नमो ॥ अरिहंत० ॥ २ ॥ तिहुयण भवियण जणमण वंछिय–पुरण देवरसाल नमो; ललि ललि पाय नमु हुं भावे–करजोडीने त्रिकाल नमो ॥ अरिहंत० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तुं जगजन सज्जन–नयनानंदन देव नमो; सकलसुरासुर नरवरनायक, सार अहनिश सेव नमो ॥ अरिहंत० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तुं निष्कारण बंधु नमो; शरणागत जीवन हित

वत्सल, तुंहि कृपारससिंधु नमो ॥ अरिहंत ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो; नाशित सकळकलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अरिहंत० ॥६ ॥ जग चिंतामणि जगगुरु जगहित—कारक जगजननाथ नमो; घोर अपार भवोदधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अरिहंत० ॥ ७ ॥ अशरण शरण निरागी निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो; बोधि दीयो अनुपम दानेसर, ज्ञानविमलसूरीश नमो ॥ अरिहंत० ॥ ८ ॥

---

अथ श्रीचतुर्विंशतिजिन चैत्यवंदन.

आदिनाथप्रभु प्रथमदेव, सेवे सुखकारण,
बीजा अजितजिणंददेव, भवपापनिवारण ॥ १ ॥
त्रीजा संभव सुखकरु, ए वांछितदातार;
अभिनंदन चोथा नमुं, जिम पामुं भवपार ॥ २ ॥
सुमतिनाथ सुपरिं नमुं. जिन पंचम कहीए;
पद्मप्रभ छट्ठा जिणंद, जपतां सुख लहीए ॥ ३ ॥
जिनसुपाससामी सातमा ए, सेव्ये संपत्ति कोडि;
श्रीचंद्रप्रभप्रभु आठमा, नमता नावे खोडी ॥ ४ ॥
सुविधिनाथ शिवतणो साथ, नवमा भगवंत;
दशमा शीतलनाथसामी, सेव्ये भवअंत ॥ ५ ॥
श्रेयांसजिन अग्यारमाए, जगजंतुजयकार;
बारमा श्रीवासुपूज्य, पूज्ये सुख सार ॥ ६ ॥

तेरमा श्रीविमलनाथ, भवपावठ भंजे;
अनंतनाथजिन चउदमा, दुर्गति दुःख गंजे; ॥ ७ ॥
धर्मनाथप्रभु पन्नरमाए, प्रणम्ये परमानंद;
शांतिजिणेसर सोलमा, समरये नित आणंद ॥ ८ ॥
सत्तरमा भावे नमो; भवि कुंथुकृपाल;
अढारमा अरनाथदेव, अरिहंत दयाल ॥ ९ ॥
मल्लीनाथ ओगणीसमाए, शिवसंपद्दातार;
मुनिसुव्रतजिन वीसमा, विश्वतणो आधार ॥१०॥
एकवीशमा नमिनाथजी निरख्ये निधि सहीए;
नेमिनाथ बावीशमा, जस ध्याने रहीये ॥११॥
पार्श्वनाथ तेवीसमाए, जस नामे दुःख जाय;
वर्द्धमानजिन चोवीसमा समरंता सुख थाय ॥१२॥
अतीत अनागत वर्त्तमान, जे जिनवर कहीए;
स्वर्गमर्त्यपातालमांहे, जिनप्रतिमा सहीए ॥१३॥
ते सवि वंदो भावशुं ए, भविका मन उल्लास;
ज्ञानविमल प्रभुनामथी, जिम लहो शिवपुरवास ॥१४॥

---

अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन

नमद्देव नागेंद्र मंदार माला, मरंद च्छटाधौतपादारविंदं ॥ परा
नंद सदर्भ लक्ष्मी सनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ १ ॥
क्षमो राजिवि शासन पासरसं, हवरक्षेवलेर्श्वं जियांसं जिपेसं ॥ क्षमा

त्रीन पद्मावती प्राणनाथं, स्तुवे देव चिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ २ ॥ नव श्री निवासं नवां भोदनीलं, नतानां श्री दानदानेसलीलं, त्रीलोकस्यपूज्यं त्रीलोकस्यनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ३ ॥ हृत व्याधि वेतालभूतादि दोषं, कृताशेषपुण्यावली पुण्यपोषं ॥ मुख श्री पराभूत दोषाधिनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ४ ॥ नृपस्या श्वसेनस्य वसेवतंस, जना नामन्गो मानसेगाज हंसं ॥ प्रभाव प्रभावाहिश्री सिंधुनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ५ ॥ कलो-भाविनी कल्पवृक्षोपमानं, जग त्यालने संतति सावधानं ॥ चिरंमद-धार स्थितं विश्वनाथं, स्तुवे देवचिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ६ ॥ इति नांग्रेद्रनरामर, वंदित पदांभोज भवर्त्तितेजा ॥ देवपाल कुटकस्थः, सजयति चिंतामणि पार्श्वनाथं ॥ ७ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तोत्र समाप्तः ॥

---

॥ अथ पर्युषणनुं चैत्यवंदन ॥

सकल पर्व श्रृंगारहार ॥ पर्युषण कहीए । मंत्रमांही नवकार मंत्र ॥ महिमा जग लहिए ॥ १ ॥ आठ दिवस अमार सार ॥ अट्ठाइ पालो ॥ आरंभादिक परीहरी । नरभव अजुवालो ॥ २ ॥ चैत्यपरिपाटी सुद्ध साधु ॥ विधी वंदन जावे । अट्ठम तप संवत्सरी । पडि-क्कमणुं भावे ॥ ३ ॥ साधर्मिक जन खामणांए ॥ त्रिवीधिशुं कीजे ॥ साधु मुख सिद्धांत कान ॥ वचनामृत रस पीजे ॥ ४ ॥ नव व्या-ख्याने कल्पसूत्र ॥ विधी पूर्वक शुणीए ॥ पुजा नव प्रभावना ॥

निजपातक हणीए ॥ ५ ॥ प्रथम वीर चरित्र बीज ॥ पार्श्वचरित्र अंकुर ॥ नेमि चरित्र प्रबंध संघ ॥ सुख संपत्तिपूर ॥ ६ ॥ ऋषभ चरित्र पवित्र पत्र ॥ शाखा समुदाय ॥ स्थविरावली बहु कुसुमपुर ॥ मरिखो कहिवाय ॥ ७ ॥ सामाचारी शुद्धताए ॥ परगंधवखाणो ॥ शिव सुख प्राप्तीफल सही ॥ सुरतरु समजाणो ॥ ८ ॥ चौद पूर्वधर श्री भद्रबाहु ॥ जीणेकल्प उद्धरियो ॥ नवमा पुर्वथी युग प्रधान आगम जल दरिआ ॥ ९ ॥

सामवार श्री कल्पसूत्र ॥ जे सुणे भविप्राणी ॥ गौतमने कहे वीरजीन ॥ शीवराणी ॥ १० ॥ कालिक सूरि कारणेये ॥ पजुसण कियां ॥ परणे भाद्रवा सुदि चोथमां ॥ निज कारज सिद्धां ॥ ११ ॥ पंचमीकरणी पोथमां ॥ जीनवर वचन प्रमाणे ॥ वीर थकी नवसेंअेंसी ॥ वरसे ते आणे ॥ १२ ॥ श्री लक्ष्मीसागर सुरीश्वरसंघ ॥ प्रमोदसागर सुख-कार ॥ पूर्व पजुसण पालतां ॥ होये जयजयकार ॥ १३ ॥ इति पजुषणा चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

---

॥ अथ पर्युषणानुं चैत्यवंदन बीजुं ॥

॥ देशी विमल केवलज्ञानी ॥

पुण्योदयथी आवीयां ॥ पर्व पजुसण सार ॥ उछव रंग वधा-मणां ॥ मंगल हरख अपार ॥ १ ॥ महीधरमां सुरगिरीवडो ॥ तरु-मां सुरतरु जेम ॥ सुरगणमां सुरपति वडो ॥ पर्व पजुसण तेम ॥२॥ अमरपडो वजडावीए ॥ जीव दयाने काज ॥ सत्य वचन मुख भांखीए ॥ चोरी मैथुन त्याग ॥ ३ ॥ आरंभ मूर्छा छांडिए नवी रमीए जुगार ॥ कनीओ कलह न कीजीए ॥ हांसीनो परिहार ॥४॥

द्रव्य भावजीन पूजीए ॥ निरमल करी निज गात्र ॥ विनती करी गुनीराजने ॥ दीजे दान सुपात्र ॥ ५ ॥ सद्गुरु पासे सांभलो ॥ कल्पसूत्र मनोहार ॥ तीजा औषधनी पेरे ॥ पुण्य पुष्टी करनार ॥ ६ ॥ एकवीसवार जे सांभले ॥ कल्पसूत्र सुखकंद ॥ सात आठ भवमां लहे ॥ पदवी परमानंद ॥ ७ ॥ जीनवर चैत्य जुहारीए ॥ मुनि वंदन हितकार ॥ वरसी पडिक्कमणुं करी ॥ आलोइए अतिचार ॥ ८ ॥ साधर्मिकने खांमणां ॥ करिए सवि नरनार ॥ क्षायक आ-राधक कह्यो ॥ अवर विराधकधार ॥ ९ ॥ अष्टम तप वली कीजीए ॥ सामी वच्छल रंग ॥ लाभ अनेक तो पांमीए ॥ वरीए शिव सुख चंग ॥ १० ॥ इण विध्रपरव आराधिए ॥ थीर करी मन वचकाय तो गुण माणेकसे वधा थइ ॥ आतम शीव जाय ॥ ११ ॥ इति चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

---

॥ इती श्री जन्म नमस्कार लिख्यते ॥

श्रीसेत्रूंजय मंडणो ॥ श्रीआदी जीणंद ॥ पद अरविंद न मइ ॥ जास सुर असुर नरिंद ॥ काया घणुसय पंचउंच ॥ वृषभ विराजे ॥ गोमुख जक्ष चक्रेस्वरी ॥ शाशन सुरां छाजे ॥ नाभिनर स्वर वंसमां, जाग्यो अभिनवसुर ॥ त्रिकरण शुद्धि पुजतां ॥ लछी लहो भरपुर ॥१॥ पुरव पून्ये पामीए ॥ पजुसण पर्व पूजा ॥ पोसह करो भावे ॥ मुको मनि गर्व ॥ जीव अमारी तणो पडह । भावे वजडावो । नव निधि मंगल मालिका ॥ जीम संपति पावो ॥ पूजाने प्रभावनाए ॥ पचखाण उदार । पडिकमणु वली कीजीए । साहमी वच्छल सार

॥ २ ॥ छठ करो भवि भावसुं ॥ मान हुआ रखीजे ॥ अठोपरने सखर भद ॥ भक्तशक्ति करी जे ॥ परई कल्प कल्पसूत्र ॥ ओच्छवसु आणी ॥ नाणे सोना रुप्यने ॥ पुजी सुणो प्राणी ॥ प्रथम चरीत्र श्रीवीरनु ॥ जग जनमन सुखकार ॥ कल्प अछेरा दस कह्या ॥ भव रुसावीस सार ॥ ३ ॥ चउद सुपन भवि सांभलो ॥ लक्षण संयुक्त ॥ जन्म हुव श्रीवीरनुं ॥ त्रिहु भाषा सूत ॥ छपनदिसि कुमरि करें ॥ ओछव अभिराम ॥ इंद्र सेवे उछव कर ॥ कर जीन गुणग्राम ॥ श्री सिद्धारथ नृपतिए ॥ जन्मोछव करय ॥ इंद्र आणइधनद देव ॥ द्रव्ये घर भरय ॥ ४ ॥ जीन क्रिडा शीसातणो ॥ छे बहु अधिकार ॥ केवलनाण लेइ करी ॥ पाम्या भव पार ॥ वीजे दीन श्रीइंद्रभूति ॥ परनीण संपय ॥ इत्यादिक सुणा विस्तर ॥ श्रीवीर चरीत ॥ तेला घर दिवसे करोए ॥ अठम तप मनुहार ॥ नामकेतु श्रावक परें ॥ जीम हुइ जयजयकार ॥ ५ ॥ पुरिसादाणी पार्श्वनाथ ॥ श्री नी चरीत्र ॥ जीनपति केरा आंतरा ॥ सुणो थइ ए पवित्र ॥ ऋषभ चरीत्र थिरावली ॥ यति समाचारी ॥ भावि सुणतां भाव समुद्र ॥ तरस्य नरनारी ॥ कनकरी दिनकराए ॥ महा महोछवसार ॥ कल्प सूत्र सतभार मित ॥ सुणीए सुखकार ॥ ६ ॥ बार बोल पट्टधरनी ॥ सुरी साहम स्वामी ॥ पाट परंपर विजयमान ॥ सुरीस सुधांमी ॥ कीजे चल्य परिपाटका ॥ स्वामी खामा जे ॥ पडिक्कमणु करो भावसुं ॥ बहु दानज दीजे ॥ श्रीविजय आणंद सुरीश्वरुए ॥ तपगच्छ वि भाक समान ॥ पंडित हंस विजयतणो ॥ वीर वद गुणगांन ॥ ७ ॥

इति जन्म नमस्कार समाप्त ॥

# अथ श्री आदीजीन स्तवन.

श्री आदीनाथ आगले बेरे स्तुति करी ते स्तवन ॥

॥ हरियो चालिरे ॥ ए राग ॥

नमो नमो श्रीआदि जीणंदने । करी त्रिविध प्रणाम ॥ पंचाभि गमने नमन करंति । केवलज्ञानि नामे । प्रभुजी प्यारारे ॥ पुन्यथकी में दीठा ॥ प्राण आधारारे ॥ सरस सुधाथी मीठा ॥ १ ॥ राज पुरुष उपयोग करावे, कोलाहलने समावे ॥ साचि वाणी ए भावना भावे । सहुने अचरिज थावे ॥ वार्जीत्र नाद वजावे ॥ प्र. ॥ २ ॥ हुंतो कावरी वावर द्वीपनी ॥ सास भरीए देही ॥ स्वामी वरोबर को नवी दिठो ॥ तुंहि अने हो उदाही ॥ प्र. ॥ ३ ॥ तुं निकलंक अने निरमोही ॥ तुं अद्रोही उदासी ॥ माहाग मनमाहेथी केणीपेरे ॥ कहो हवे केम फरी जासी ॥ प्र. ४ ॥ जीम पंकजमां मधुकर पेसे ॥ तिम मनकजमा पेठा । तुम दरशन पामे नवि हरखे ॥ ते निरगुणीने धिठा ॥ प्र. ५ ॥ हुं तिर्यचणीने वली पक्षिणी ॥ लाखेणी तुम सेवा ॥ पामि एतो अनोपम भावे ॥ जीम भुख्या वरमेवा ॥ प्र. ॥ ६ ॥ भवभव तारी आणाशिर चहिए ॥ होजो अविचल भावे । तेहथी गोरस समकित सुधु । ज्ञानने चरणे जमावे ॥ प्र. ७ ॥ जेम घृत आप स्वभावे निर्मल रस ॥ सोध्यो कहो किम जाण ॥ तिम तुम हेते सुध स्वरुपनुं ॥ निरावरण प्रगटावे ॥ प्र. ८ ॥ इंद्र अनंता जो समकाले । भगति करे जो कवही । तोपण प्रभु गुण समतान

आपे । तो हुं विर्पेषणी केही ॥ प्र ९ ॥ सारिकार्णणि पर आदि
देषनि । गुण स्तुति करवा लागी । सहु प्रसंग जुवा ए अपरिज ।
ज्ञान चिमसम्मति भागी । प्रभुजी प्यारार ॥ १० ॥ इति आर्द्री
जीन स्तवन

---

## अथ श्री गोडी पार्श्वनाथ जीन स्तवन

### दूहा

प्रणमीनीत परमेसरु, आपो अविचल मन ॥
लघुतायी गुरुता कर, हुं सारद सरसत ॥ १ ॥
मुज उपर मया करो, दीपे दोम्रत देव ॥
गुण गावुं गीरुवा तणा, भवे भवे भगवान ॥ २ ॥
चपल पेंग गोडि धणी, सहुको आवे संघ ॥
महीमदावादी मोटको, नारंगो नवरंग ॥ ३ ॥
प्रतीमा त्रणे पासनी, प्रगटी पाटण मांहि ॥
भगति करु पे प्रभीमना, कुण ते ए कहेवाय ॥ ४ ॥
उत्पत्ति तेहनी उच्चरुं, शास्त्र तणी करि साख ॥
मोटा गुण मोटा तणा, भासे कवीजन भाप ॥ ५ ॥

---

## ढाल पहेली.

### नदि जमुनाके तीर ॥ ए देशी ॥

कासि देस मझारके नगरि वणारसी, एह समोवड कोय नहि लंकाजसी ॥ राज करे तिहां राजके अश्वसेन नरपति, राणी वामा नामके तेहनी दीपति ॥ १ ॥ जन्म्या पास कुमारके तेणे राणीए, ओच्छव कीधो देवके इंद्र इंद्राणीए ॥ जोवन परण्या प्रेमके कन्या प्रभावती, नीत नीत नवञा वेस करि देखावती ॥ २ ॥ दीक्षा लेइ वनवास रह्या काउसग्ग जिहां, उपसर्ग कर‌ा काजके मेघमाली आव्यो तिहां ॥ कष्ट देइने तेह गयो ते देवता, पाम्या केवल ज्ञान आवी नर सेवता ॥ ३ ॥ वरस ते सोनो आउखो भोगवी उपन्यां, जोति मांहे मली जोत तिहा केइ सपनां ॥ पाटण माहि मुरत त्रिण्ये पासनी, भरावी भूहरा माही राखी केइ मासनी ॥ ४ ॥ कदि न मेतमो तेह गोर्डीनी लेइ करि, पोहोत्या आवास मांहे, तरके लेइ धरी ॥ खाडखणीने माहि तरके घालि जिहां, सुपनीत प्रते तेह सज्यावाली तीहा ॥ ५ ॥ एक दीन सूहणां मांहि आविने एम कहे, तिणे अवसर ते तरकडिया मांहि सद्दहे ॥ नहितर मारी समरडी सहवेहूं तुजने, ते माटे घर माहेथी काढ मुजने ॥६॥ पारकर मांहेथी मेघोसा इहां आवसे, ते तुज देसे टका पाचजो लावसे ॥ देजे मुरत एहके काढि तेहनी, मत कहेजे कोइ आगल वात केहने ॥ ७ ॥ थासे क्रोड कल्याणके ताहरे आजथी, वाधसे पंचामाहाके नाम ते लाजथी ॥ मनसुंवीहीनोतरक थाय ते आकलो, आगले जे थाए वात ते भवियण सांभळो ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ माहरा मधुर सवाइ ढोला ॥ ए देसी ॥

लाख जोयण जंबुपरमान, तेहमा भरत क्षेत्रपरधान ॥ माहरा सुगुण सनेहि सुणजो तिहां पारकर देस छे रुडो, जेम नारीने सोने चूडो ॥ १ ॥ मा० ॥ सास्त्र मांहे जीम गीता, तेम सतियो मांहे जेम सीता ॥ मा० ॥ वाजित्र मांहि जेम भेर, तिम परवत मांहि मोटो मेर ॥ मा० ॥ २ ॥ देव मांहि जेम ईद्र, ग्रह गुण मांहि जीम चंद्र ॥ मा० ॥ बत्रीस सहस ते देस, तिम पारकर देस वीसेसरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तिहां सुवेसर नामे नगरी, तिहां रहेवा नथी कोइ वयरी ॥ मा० ॥ तिहां राज करे खेंगार, ते तो जात तणो परमाररे ॥ मा० ॥ ४ ॥ तिहां वणीज करे व्यापारी, जेहने अपच्छरा सरखी नारी ॥ मा० ॥ तिहां मोटा मं िर मधान, ते तो चवदस बावन ॥ मा० ॥ ५ ॥ तिहां काजमसा व्यवहारी, सह संघमांही छे अधिकारी ॥ मा० ॥ दस पुत्र कलत्र परिवार, जस मानिव छे दरबाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ ते काजमसानी वाइ, सा मेघोफीष जमाइ ॥मा०॥ एक दिन सासो वनेवी, बेठा वातो करे एहवी ॥ मा० ॥ ७ ॥ इहांथी धन तुमे घणो लइ, मालो वस्तु कइ ॥ मा० ॥ गुजरात मांहे तुम जाजो, घेरमां लाभ आवे त लेजो ॥ मा० ॥ ८ ॥

---

॥ ढाल ॥ वे घडाने ए देसी ॥

सा काजम कहेवात, मेघा भणी दीनरात ए सांभली सहदेए, व्यसवो इम कहे ए ॥ १ ॥ जाइस हुं गुजरात, साथ करि परभात ॥

सकुन भला सहिए, तो चालु वहिए ॥ २ ॥ धन घणो लेइ हाथ, परिवारे कर्यो साथ ॥ कंकु तिलक कीओ ए, सीफल हाथ दीओ ए ॥ ३ ॥ लेइ उंठ कतार, आव्यो चहुटामझार ॥ कन्या सनमुख मलीए, करति रंग रलीए ॥ ४ ॥ मालण आवितताम, छाब भरी छे दाम ॥ वधावे सेट भणीए, आशीस दे घणीए ॥ ५ ॥ मच्छयुग ममलया खास, वेद बोलंतो व्यास ॥ पत्र भणीजोगणीए, वृषभ हाथे धणीए ॥ ६ ॥ डाबो बोले सांड, दधिनो भरीओ भांड ॥ खरडावो खरोए, लोक कहे हैये धरो ए ॥ ७ ॥ आगल आव्या जाम, मारग वूंठाताम ॥ भेरव जमणी मलीए, देवडावी वलीए ॥८॥ जीमणी रुपारेल, तारी बांधी तिणवेल ॥ नीलकंठ तोरण कीओ ए, उलस्यो अति हीओ ए ॥ ९ ॥ हनुमंत दीधी हांक, मधुरो बोले काक ॥ लोक कहे सहुए, काम होसे वहुए ॥ १० ॥ अनुक्रमे चाल्या जाय, आव्या पाटण मांहे ॥ उतारो भलो कीयाए, सेठजी आवीयाये ॥ ११ ॥ नीसभर सुता जीहां, जक्ष आविने त्यांही सुहणुं एम कहे ए, ते सघलो सदहे ए ॥ १२ ॥ तरकतणो छे धांम, तेहने घरे जइ जइ ताम ॥ पांचसे रोकडा ए, तुज देसे दोकडा ए ॥१३॥ देसे प्रतिमा एक, पास तणी सुविवेक ॥ तेहथी तुज थासे ए, चिंता दुर जसे ए ॥ १४ ॥ संभलावी जक्षराज, तरक भणी कहे साज ॥ प्रतिमां तुं देजे ए, पांचसे धन लेजे ए ॥ १५ ॥ इम करतां परभात, तरक भणी कहे वात ॥ मनमां गहगहे ए, अचरीज कुण लहे ए ॥ १६ ॥

॥ ढाल ॥ आसणाराजोगी ॥

तरक मणी दीए पावसे दाम, मतिमा आणी नीज ठामरे पा सजी मुने सुठा ॥ पुजी मतिमा हरख मराणो, माम आणीने खरच नाणोर ॥ १ ॥ पा० ॥ मुज रखत ए मुरती आवी, मुज आपसे दाम उपाडर ॥ पा० ॥ दाम पेइनेरु तिहां लीधो, मन मान्यो कारज किधो र ॥ २ ॥ पा० ॥ रुना भरीया उंट ते वीस, आगल रायण पुर सहु आव्या ॥ ठाण सेघा दाणि मसी आव्या र ॥ पा० ॥ गणे उंटने मुले बेसे, एक ओछो अधिको देखर ॥ ४ ॥ पा० ॥ मसी सहु दाणी वीचार मनमां, ए कौतक दीसे छे ए मांर ॥ पा० ॥ मघा माने दाणी मसी पूछे, कहो सेठजी कारण सुं छे र ॥ पा० ॥ ५ ॥ सा मेघो कहे सामलो दाणी, अमे मुरत गोडीनी आणीर ॥ पा० ॥ ते मुरत ए थरकी माहे, कीम जाम्बुदीप पीधे वांदर ॥ पा० ॥ ६ ॥ पारसनाथ तणे सुपसा ये, दाणी मसी ठाण घर जा यर ॥ पा० ॥ मात्रा करि सहुनीज घर आवे, मीन पुर्मी आनंद पावेर ॥ पा० ॥ ७ ॥ अनुक्रमे पारकर मांहे आप, सुरेसर नगर छे ज्यांहीर ॥ पा० ॥ सपामणी दीधी जेणे पुरुष, थयो रलीयात पण हरखेर ॥ पा० ॥ ८ ॥

---

॥ ढाळ ॥ राणकपुर रलीयामणोर मान्य ए देशी ॥

संघ आवे मसी सामगेर साम, दरीसण करवा काम भवि आणीर ॥ ढोल नगारा धडदडेरे, नादे अंबर गाज ॥ भ० ॥ १ ॥

सुणजो वात सोहामणीरे लाल, ओच्छव मोहोच्छव करि घणोरे लाल ॥ भेटया श्री पारसनाथ ॥ भ० ॥ पुजा प्रभावना करि घणी रे लाल, हरख पाम्या सहु साथ ॥ भ० ॥ सु० ॥ २ ॥ संवत चउदस त्रीसमांरे लाल, कार्तिक सुदनी बीज ॥ भ० ॥ थावर बारे थापीयारे लाल, नरपति पाम्या रीज ॥ ३ ॥ भ० ॥ सु० ॥ एक दिनकाजलसा कहेरे लाल, मेघा साने वात ॥ भ० ॥ नाणुं अमारुं लेइ करीरे लाल, गया हुता गुजरात ॥ ४ ॥ भ० ॥ सु० ॥ ते धन तुमे कींहा वावरयुंरे लाल, तेघो लेखो आज ॥ भ० ॥ तव मेघो कहे सेठजीरे लाल, खरच्या धरमने काज ॥ भ० ॥ सु० ॥ ५ ॥ सामीजी माटे रुपीआरे लाल, पांचसे सिद्धा दाम ॥ भ० ॥ काजल कहे तमे सु कर्युरे लाल, ए पथ्थर कीण काम ॥ भ० ॥ सु० ॥ ॥ ६ ॥ काजल भणी मेघो कहेरे लाल, ए व्पापार सौ भाग ॥ ॥ भ० ॥ ते पांचसे सीर माहरेरे लाल, तेमां नहि तुम लाग ॥ ॥ भ० ॥ सु० ॥ ७ ॥ मेघा सानी भार्या रे लाल, मरगा दे छे नाम ॥ भ० ॥ मेरोने महिओ सारिखोरे, वहु रति जसना काम ॥ भ० ॥ सु० ॥ ८ ॥

---

॥ ढाल ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

सा काज मेघा भणी, वीहुं जण माहे संवाद ॥ मोरा लाल ॥ तिहा मेघो धनराजने, एक दीन कीधो साद ॥ मो० ॥ सुणजो वात सोहामणी ॥ १ ॥ आ प्रतिमा [illegible]

मो० ॥ बार बरस लग तिहां, पुजी प्रतिमा नीत ॥ मो० ॥ २ ॥ सु० ॥ एक दीन मूरणे इम कहे, मेघासाने भाव ॥ मो० ॥ तु मम साथे आवजे, परघारि प्रमाव ॥ मो० ॥ ३ ॥ सू० ॥ वहील लेजे भावल तणी, चारण भाव छ देह ॥ मो० ॥ दक्षार्णन्ट राइका तणा, दोर इपम छे पेह ॥ मो० ॥ ४ ॥ सू० ॥ बहल लेहे तु एकलो, मत लेजे कोइ साथ ॥ मो० ॥ वाडायल भणी हांकजे, प्रभने रा- खजे हाय ॥ मो० ॥ ५ ॥ सू० ॥ एम मेघाने सीखवी, कस गया निज ठाम ॥ मो० । रवी उगमते तीहा, करवा मांड्यो काम । मो० ॥ ६ ॥ सु० ॥ वहिल सीधी भावल तणी, इपम आण्या दाय ॥ मो० ॥ जोतरी वहल सामी तणी, आणे छे सप काय ॥ मो० ॥ ७ ॥ एम मेघो ते वहेलने, लेही चाल्यो जाय ॥ मो० ॥ अनुक्रमे मारग चालतां, आव्या वलवाडा मांहे ॥ मो० ॥ ८ ॥

---

॥ ढाल ॥ अमम्मीसा रगाभो परमोलीया ॥ ए देशी ॥

तिहा छोगने मोटा वन घणा, दीसे रुप तणो नहि पारोर ॥ तिहां भूवने भेत व्यंतर घणा, देखी सेठ कर विचारोर ॥ १ ॥ सा मेघो मन मांहि चिंतवे, इम कुण करस माहरी सारोर ॥ तव प्रभ आवीने इम कहे, तु मत कर फीकर लगारोर ॥ २ ॥ सा० ॥ तवं वहेल्ल हांकीने चालीओ, आव्यो वजह गोडिपुर गामर ॥ तिहां थाव कुवा सरोवर नहि, नहि माहल मंदिरना ठामर ॥ ३ ॥ क० ॥ तिहां वहेल थंभाणी चाल नहि, एवे सेठ हुवो दिलगीरोर ॥ माहरी

पासे नथी कांइ दोकडा, कुण जाणे पराइ पीरोरे ॥ ४ ॥ सा० ॥
तिहां रान पडी रवी आथम्यो, चिंतातुर थइने सुतोरे ॥ तव मेघाने
आवी इम कहे, सूहणा मांहे जक्ष एकंतोरे ॥ ५ ॥ सा० ॥ हवे सां-
भल मेघा हुं कहुं, आवसे गोडीपूर गामरे ॥ माहरो देहरासर करजे
जीहां, उत्तम जोइने ठामरे ॥ ६ ॥ सा० ॥ तुं ज्याजे दक्षिण दिस
भणी, तिहां पडयूं छे नीलं छाणरे ॥ तिहां कुवो उमटस्ये पाणीनो,
वलि प्रगटसे पाणीनी खाणरे ॥ ७ ॥ सा० ॥ पासे उग्यो छे उज्वल
आकडो, ते हेठल धन छे वहुलोरे ॥ तिहां पुरचो छे चोखा तणो
साथीओ तिहां पाणी तणो कुओ पोहलोरे ॥ ८ ॥ सा० ॥

---

॥ ढाल ॥ सीता तो रुपे रुवडी ॥ ए देशी ॥

सीलावट सीरोही गामे, तिहां रहे छे चतुर छे कामे हो, सेठजी
सांभलो ॥ रोग छे तेहने शरिरे, नमणुं करी छांटो नीर हो ॥ १ ॥
सेठ ॥ रोग ज्यासेने सुख थासे, वेठो इहां काम कमासे हो ॥ सेठ.
॥ ज्योतीकनीमीत जीवरावे, देहरा सरपाइओ मंडावे हो ॥ २ ॥
॥ से० ॥ ते जक्ष गयो इम कहिने, करे सेठजी उध्यम वहिने हो ॥
से० ॥ सीलावटने तेडावी, वली धननी खाण खणावी हो ॥ से०
॥ ३ ॥ गोंडीपुर गाम वसावे, सगा साजनने तेडावे हो ॥ से० ॥
इम करतां वहु दिन वीतां, थयो मेघो जगत्र वदीता ॥ ४ ॥ से०॥
एक दीन साकाजल आवी, कहे मेघाने वात वनावी हो ॥ से० ॥
ए काममां भाग अमारो, अर्ध ताहरो हो ॥ से० ॥ ५ ॥ इम करि

चेहरा सरकरिए, ओ मगमां अस परीए हो ॥ से० ॥ तब मेघो कहे तेहने, हवे दाम भोइए छे केहने हो ॥ से० ॥ ६ ॥ पारसनाथ वर्ने सुपसाये, घणा दाम छे घसी मांही हो ॥ से० ॥ एक दिन केहेतां सुमे, आवे ए पथर कीणे कामे हो ॥ स० ॥ ७॥ क्रोध घसे पाणा घसीओ, आपणापानगरमां मसीओ हो ॥ से० ॥ सा कानक मन चिंते, मारुं मेघो तो निश्चिंते हो ॥ से० ॥ ८ ॥

---

॥ ढाल ॥ नेमीसर मगजय करूं लोस ॥ ( ए देशी )

परणाउं पुत्री माहरीरे लोल, वेरीने लेणीधाररे ॥ चतुरनर ॥ नात जमाडुं आपणीरे लोल, खरचीने धन अपाररे ॥ च० ॥ १ ॥ सांभलजो श्रोताजनोरे लोल, जो मेघो मारु तो सहिर लो, तो सुम उपजे काराररे ॥ च० ॥ देवल करावुं हु धर्मीर लो, तो नाम रहे नीरधाररे ॥ च० ॥ २ ॥ इम चित चिंतवी वीवाहनोरे लोल, कर का जस ततकालरे ॥ च० ॥ मगा साजनने तेडावीयार लो, गोरीमा गावे धमालरे ॥ च० ॥ ३ ॥ सा०॥सा मेघा मणी नोतरूंरे लोर, मोकले कागल साहर ॥ च० ॥ वीवाह उपर आवज्योर लो, अब श्य करिने आहिर ॥ च० ॥ ४ ॥ सा० ॥ इम सामली मेघो चिंत वेरे लो, किम करि भइए त्यांहिर ॥ च० ॥ काम भमारे छे घणुर लो, देहरासरनुं आहिरे लो ॥ च० ॥ ५ ॥ सा० ॥ तब मेघो कहे तेहनरे लो, तेडी जाओ परिवारर ॥ च० ॥ काम मेली कीम आवीयेर लो, ते जाणो नीरधारर ॥ च० ॥ ६ ॥ सा० मरगा दन तेडीनेर लोल, पुत्र कलत्र परिवारर ॥ च० ॥ मेघाना सहु साथनर

लो, तेडी आव्यो तेणीवाररे ॥ च० ७ ॥ सा० ॥ सांभल काजल कहे मेघो कीहांरे लो, इहांना आव्या सामाटरे ॥ च० ॥ तो मेघ वीण कीम सरेरे लो, नात तणी ए वाटरे ॥ च० ८ ॥ सा० ॥

---

॥ ढाल नंद सलूणा नंदनारे लो. ॥ ए देशी ॥

जक्ष कहे मेघा भणीरे लो, ताहरे हवे आवी बनीरे लो ॥ काजल आवसे तेडवारे लो, कुड करी तुने छेतडवारे लो ॥ १ ॥ तु मतजाजे तिहां कणेरे लो, जेहेर देइ तुजने हणेरेलो ॥ तेडया वीण जाये नहिरे लो, तो प्रभू नमण लेजे सहिरे लो ॥ २ ॥ दुध मांहे देसे खरूरे लो, नमण पीधे जासे परूरे लो ॥ ते माटे तुजने कहुंरे लो, माने वचन सूहामणुंरे लो ॥ ३ ॥ गयो जक्ष कहि ते हवेरे लो, काजलसा आव्या ए हवेरे लो ॥ कहे काजल क्रमे सांभलोरे लो, आवो मेली आमलोरे लो ॥४॥ तुम आव्या विण कीम सरेरे लो; नात जातमां सोभीए किणी परेरे लो, तुम सरीखा आवे सगारे लो; तो अम मन थाए उमगारे लो ॥ ५ ॥ हुं आव्यो धरती भरीरे लो, तो कीम जाउं पाछा फरिरे लो ॥ जो अमने कांइ लेखवोरे लो, तो आडो अवलो मत देखवोरे लो ॥ ६ ॥ हठ करी बेठा तुमेरे लो, खोटी थइ ए छे अमेरे लो ॥ मेघो मन चिंतवेरे लो, अतीताणुं कीम पुखेरे लो ॥ ७ ॥ काजल साथे चालीयोरे लो, सुदेसरमां आवीयोरे लो ॥ नमण वीसारयुं तिहांकणेरे लो, भावीवस्य आवी बनेरे लो ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ काचीकं रोपाणी साणो ॥ ए देशी ॥

नात जमाई आपणी, देईने बहु मान ॥ वर कन्या परणावीयां, दीधां बहुलां दान ॥ १ ॥ कामल कहे नारी भणी, मघो अमे बेसां ॥ विसम देजे विष भेळीने, दुधमां मांहिण वेल्हा ॥ २ ॥ दुध लणी छे आसडी, तुमने हुं कहि मरीसे ॥ भेघाने भेलवो नहि, मीस्यु अमण पीरस्ये ॥ ३ ॥ तव नारी कहे मीठमी, भेघाने मत मारो ॥ कुसमां लाछन लागस्ये, जास्ये पांच माफारो ॥ ४ ॥ कामल ते माने नही, नारि कहीने हारी ॥ मन भाग्यो मोठी आव्यो, तेहन ना लाग कारि ॥ ५ ॥ एम सीखवी नीम नारीने, वीमवा बहु बंठा ॥ भेगा एकण थालीए, हैडे हरसे हेठा ॥ ६ ॥ दुध आण्यु तिण राणीए, मीस्युं थाली माहि ॥ कामल कहे सुन आस्यडी, पीयो बेचे स्याहि ॥ ७ ॥ भेघाने इये ततखीणे, विष व्याप्यु अंग ॥ स्वासोस्वास रमी गया, पाम्यो गति स्यु रगे ॥ ८ ॥

---

॥ ढाल ॥ कीहांर गुणवंतीरे माहरियोगणीरे ॥ ए सभा ॥

आवी मृगादे पीउन देसवर, रोति करे विमवार ॥ था महीयोने सेरो ते पण पेहु जणार, अति घणु करे पोकाररे ॥ १ ॥ कीहकुल हिमा ए तेसु करयु र, नामी लाज लगाररे ॥ सुसरकिम भेंसादिस सोकमार, तुजने पडो धिकाररे ॥ २ ॥ की० ॥ वीरहा म न नाम मन पहसुं र, लाहरी भगनीजु कुणस तुसरे ॥ पाहर ना करस ए छाम्युं नहि र, पहि नीसे छे सुन मांसूकरे ॥ ३ ॥ की० ॥ एहना

लखीया ए छठी अक्षरारे, तो हवे दीजे केहने दोसरे ॥ नीरधारि मेली गयो नाहलोरे, कहिए न कीधो मुजने रोसरं ॥ ४ ॥ फी० ॥ इम विलवंती मृगादे कहेरे, वीरडा ते तोडि माहरीरे आसरे ॥ तुजने किम उलल्युं एहवुंरे, जीवीस तीन पंचासरे ॥ ५ ॥ फी० ॥ कुड करिने मुजने छेतरीरे, ते कीधो मोटो अन्यायरे ॥ माहरा नानकडा वालुअडारे, केहने मीलस्ये जोइ ध्यायरे ॥ ६ ॥ फी० ॥ अधविच देहरा रह्या आजथीरे, जगमां नाम राख्यु नीरधाररे ॥ नगरमां घरोघर वातो वीस्तरीरे, सहु कोना दील माहि आव्यो खाररे ॥ ७ ॥ फी० ॥ वेश राखीने सेघो मारीओरे, ए तो काजल कपट भंडाररे ॥ मननो मेहेलो दिठो एहवोरे, दुम भणे नरनाररे ॥ ८ ॥ फी० ॥

---

॥ ढाल ॥ पुरव मात पुण्ये पामीए ( ए देशी. )

बेहनी अगनि दाह देइ करी, आव्या सहु निज ठामहो ॥ बेहनी काजल कहे तु मत रोए, न करुं एहवो काम हो ॥ १ ॥ बेहनी लेख लख्यो ते लाभीए, तो दीजे केहने दोमहो ॥ बेहनी जन्म जरा मरणे भर्यो, तो राखवो शो सोसहो ॥ २ ॥ बे० ॥ ए संसार छे कारमो, खोटो माया जालहो ॥ एक आवे ठाली भरी, जेहवी अरहटनी मालहो ॥ ३ ॥ बे० ॥ सुख दुःख सरज्या पामीए, नहि कोइने हाथहो ॥ बे० ॥ मत करे फीकर तुं आजथी, वहुली आपणी हाथहो ॥ ४ ॥ बे० ॥ खावो पीवो सुख भोगवो, मफलो

पीकर स्मार हो ॥ चे० ॥ जे भोइए ते मुजने फहो, न फरो डिसमां विचारहो ॥ चे० ॥ ५ ॥ चे० ॥ भीननो मासाद करावसूं, महिवल गस्सहु नामहो ॥ इजत आपणा घर सगी, कीम करिओ सुं कामहो ॥ चे० ॥ ६ ॥ चे० ॥ सोढाने हाथे सुपसुं, गोडिपुर गामहो ॥चे०॥ चालो आपण सहु मली, हुं लेइ आवु दामहो ॥ चे० ॥ ७ ॥ चे० ॥ अनुक्रमे आव्या सहु मली, गोडिपुर गाम मोझारहो ॥ भीननो मासाद करावीओ, काजलसा तिणवारहो ॥ चे० ॥ ८ ॥ चे० ॥

---

॥ ढाल ॥ कोरेसणो चटदेरे ॥ ए देशी ॥

देहरे सीखर चढावीओ, थिर न रहे तिणवार ॥ काजल मनमां चिंतवे, हवे करसुं मकार ॥ १ ॥ भविकमन सांभलोर ॥ बीजी वार चढावीआ, पड हेठा ततकाल ॥ सुहणा माहे मस आवीन मराने कहे सु वीसाल ॥ २ ॥ भगा सु चढाव आहून, थिर रहस्ये सीर चेह ॥ काजल्न मस कीम होय, मेघो मारयो तेह ॥ भगा ॥ ३ ॥ सेहर सीखर चढावीओ, नाम रास्युं जगमांहि ॥ सुरति थापी पासनी, संघ आव उछाहे ॥ भ० ४ ॥ संवत चौद चौआलमां, प्रतिष्टा कीध ॥ महिमा महरो मेघा तणो, तेणे जगमां जस लीध ॥ भ० ॥ ५ ॥ देशी परदेशी घणां, आव लोक अनेक ॥ भाव धरि भगवंतने, आणी अधिक विवेक ॥ भ० ॥ ६ ॥ खरचे द्रव्य घणां तिहा, राय राणा तिणवार ॥ मानत माने स्वामनी, टाले कष्ट अपार ॥ भ० ॥ ७ ॥ नीरधनीयाने धन दीए, अपुत्रीयाने पुत्र आप ॥ रोगीने निरोग रोगी, टाले दारीद्र दे सुत्र ॥ भ० ॥ ८ ॥

---

॥ ढाल ॥ अम घर आंवो मोरीओ ॥ ए देशी ॥

आज घर रंग वधामणां, आज त्रुठा श्री पारसनाथ ॥ आज चिंतामण आवी चढयो, आज सफल फली सवीआस ॥ १ ॥ आ० ॥ आज सुरतरु फलीओ आंगणे, आज प्रगटि मोहनवेल ॥ आज वीछडीया वालां मल्या, आज अम घेर हुइ रंगरेल ॥ २ ॥ आ० ॥ आज अम घर आंवो मोरीओ, आज त्रुठो सोवन धार ॥ आज दुधे वूठां मेहुला, आज गंगा आवी घरवार ॥ ३ ॥ आ० ॥ आज गायो गोडिपुर धणी, आ नगर ते महियल मांहे ॥ चोमासो कीधो चुपसु, श्री संघ केरे उछांहे ॥ ४ ॥ आ० ॥ श्री हिरविजयसूरिसरु, तेहनां शुभविजय कविसीस ॥ तेहना भावविजय कवी दीपतां, तस सीस नमुं नीस दीस ॥ ५ ॥ आ० ॥ तेहना रुपविजय कविराजनां, तेहना कव्र नमुं करजोड ॥ वली रंगविजय रंगे करी, हुं तो प्रणमुं प्रणत करजोड ॥ ६ ॥ आ० ॥ आगा संवत अढारसतलोतरे, भाद्रवमास उदार ॥ तिथि तेरस चंद्र वासरे, इस नेम विजय जयकार ॥ ७ ॥ आ० ॥

॥ इति गोडी पार्श्वनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

---

॥ अथ श्री पर्युपणनी स्तुति लि० ॥

पर्व पजुसण पुण्ये पांमी ॥ परिघल परमाणंदजी ॥ अति आडंबर ओच्छव सबला ॥ घरी घरी बहु आणंदजी ॥ सासन अधिपतिजीन पति विरइ ॥ पर्व तणा फल दाख्याजी ॥ आमरति तणा ढंढेरा फेरी ॥

माली ॥ वचन वदे टकसालीजी ॥ पुरवनोवा मनोरथ माहरां ॥ निरुपम पर्व निहालीजी ॥ विवध भांत पकवांन करीने ॥ संघ सयल सतोपोजी ॥ चोवीस जीनवर पूजा रचावी ॥ पुन्य पवित्र पद पो पोजी ॥ २ ॥ सकल सुत्र सिर मुगट नगीनो ॥ कल्पसूत्र जग जा णोजी ॥ वीर प सनेमीसर अंतर ॥ आदी चरीत्र वखांणोजी ॥ थीरावलीने सामाचारी ॥ पटावली गुण गेहजी ॥ इणी पेरेसुत्र स विस्तर सुणता ॥ वांन सवन्न निज देहजी ॥ ३ ॥ इणीपरें पव पजु सण पाली ॥ पाप मवि परहरीएजी ॥ छमछरी पडिकमणु करी ॥ कल्याण कमला वरीएजी ॥ यक्ष गोमघ्य चक्रेसरी देवी ॥ मांण भद्र अघाइजी ॥ श्री शुभविजय कवि शिष्य अमरने ॥ निसि दिन करो वधाइजी ॥ ४ ॥ इती पजुसण स्तुति समाप्त ॥

---

॥ अथ पजुसणनी थोइ लिख्यते ॥

जीन आगममें चोपरवी गाइ ॥ त्रिण्य चोमासा चार अठाइ ॥ पजुसण सवाइ ॥ ते ए सुभ दिन आव्या भाणी ॥ छठो आलस छांडो प्राणी ॥ धर्मनी नीक मंडाणी ॥ पचास पडीकमणां करो भाइ ॥ मासखमण पासखमण अठाइ ॥ कल्प अठम सुख थाइ ॥ दान दया पुजा देवगुरुनी ॥ वाचना सुणीए कल्पसुत्रनी ॥ भाखा वीर जीनवरनी ॥ १ ॥ सामली वीरनु चरीत्र विशाल ॥ चउद स्वप्ने जन्मा उजमाल ॥ जनम महोछव उजमाल ॥ आमलकीड सुरने ने हराव्या ॥ दीक्षा लेइ केवल उपजायो ॥ गवीयल ठामसें भाव्यो

॥ पासनेमी संबंध साभलीए ॥ सहु जीननां आंतरां सांभलीए ॥ आदी चरित्रमां भलीए ॥ वीर तणा गणधर इग्यार ॥ थीवरालीनो सुणो अधिकार ॥ एकरणी भवपार ॥ २ ॥ आसाढिथि दिन पंचास ॥ पजुसण पडिकमणुउ दत्रास ॥ एकउणु पणीभास ॥ सांमाचारी साधुनो पंथ ॥ वरतै जयणा एनि ग्रंथ ॥ पाप न लागे अक्षय ॥ गुरु आणाए मुनिवर राचे ॥ रागी घरे जइ वस्तु न जाचे ॥ चाले मारग साचे ॥ विगय खावानो संचआणै ॥ आ मम सांभलतां सर्व जाणै ॥ श्री वर्धमांन वखाणै ॥ ३ ॥ कुभार कांनमां कांकरी चंपै ॥ वीडाइ क्षुदत्रक तणु कंपै ॥ मीछामी दुकडुं जंपै ॥ इम जे मन आंमलो न वीछोडे ॥ आ भव परभव दुःख बहु जोडे ॥ पडे नरकने खाडे ॥ आराधीक जे खमये खमावे ॥ मन सुद्धे अधिकरण समावै ॥ ते अक्षय सुख पावै ॥ सिद्धा एकासुरीनीध्यकारी ॥ श्री महीमा प्रभ-सुरी गछधारी ॥ भाव रतन सुखकारी ॥ ४ ॥ इति श्री पजूसणनी थोय समाप्त ॥

---

॥ अथ श्री पजुसणनी थोय लीख्यते ॥

पुन्यवंत पोसाले आवो ॥ परव पजुसण आवी वधावो ॥ धर्म-ना पंथ चलावो ॥ घाचीनी घांणी छोडावो ॥ जीव बंधणनी जाल छोडावो ॥ बंधीवानना बंध खोलावो ॥ आठ दिवस लगि अमर पलावो ॥ स्वामी वछल मेहेल कढावो ॥ जीन सासन दीपावो ॥ पोसा पडिकमणां सक्ति भावो ॥ कांम कषाय अंतरथी टालो ॥ श्री

वीरमीणंदनी पुजा रचावो ॥ १ ॥ पुस्तक लेइ रात्रि जगो किजे ॥ गामींत्र वार्जीत्र गुरुने दीजे ॥ गहुंली सेवक गाइजे ॥ कल्प सुत्र आरंभ वखाणु ॥ वीर जन्म दिन सडको माणुं ॥ निशाले गरणुं थयुं ॥ खांडपडा पेंडा पतासां ॥ खांडना रेखडिआना लीपोरीलासां ॥ परमावना वखास्या ॥ वीर तणो पहिलो अधिकार ॥ पासे नेमी-जीन अंतर स्यार ॥ आद चारित्र सुमे चारो ॥२॥ जंबुनी पाटे प्रभ-व्य गुणमन वरिये ॥ श्री संभव गुण उचरीये ॥ शुगल वकीर वच-रीये ॥ स्या घेरें चोमासु रह्या ॥ अवलद सियल दवामण दिधां ॥ थुल्ली भद्र नाम पण लीधां ॥ पारण गाथु हालरीया ॥ सांभल्तां सुखपातक परिया ॥ वीर स्वामि शुं वरीयां ॥ इम वीरासमी भापी जेह ॥ सहस समिसतानु तेह ॥ कल्प मांह सुणीये एह ॥ ३ ॥ जक्षमस रुपावाद माहालो ॥ पुंभी पोथी ज्ञान विचारो ॥ ठवणी सांज संमालो ॥ इम पुजा कीजे गुरु अगे ॥ छमछरीमां मन सु रंग ॥ वारसें सुणो एक अंग ॥ सासु जमाइने अली चांदलीआं ॥ छमछरी माहे सामलीआ ॥ श्रवणे पापज टलीआं ॥ प मव पर-भव किजे करणी ॥ स्वीपद मेहेल चहडणने चडणी ॥ सीभाग्यादा दुःख हरणी ॥ ४ ॥ इति थोय संपूर्ण ॥

---

॥ अथ कलावतीनी सझाय लीख्यते ॥

नगरीकोसंबीना राजा कहीए ॥ नाम जे संपराय ॥ मेन भणी जेने मेरखडा मोकल्या ॥ कर्मे ते मार न करचायर ॥ कला-

चतीरे शीरोमणी नार ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पेलीने रयणी राजा मोले पधारा ॥ पुछे बेरखडानी वात ॥ कहो ने स्वामी तमे बेरखडा गमाव्या ॥ सरखी न राखी नाररे ॥ २ ॥ कलावती० ॥ बीजीने रयणी राजा मोले पधारा ॥ पुछे बेरखडानी वात ॥ कोने तमने बेरखडां गमाव्या ॥ तु नथी सीयलवती नाररे ॥ कला० ॥ ॥ ३ ॥ गणुं जीवोरे जेणे बेरखडां घडाव्या ॥ अवसर आव्यो तेह अवसर जाणी ॥ जेने बेरखडां मोकल्यां ॥ तेमे पेरां छे एजरे ॥ ४ ॥ कलावती ॥ मारे मन तेहने हु तेने मन ॥ तेने मोकल्यां छे एज ॥ रातदीवस मारे हैडे नविसरे ॥ दीठे हरखन मायरे ॥ ५ ॥ कलावती ॥ एणे वचने राजा रोषे भराणो ॥ तेडाव्या सुभट बेचार सुकी नदीमां जइ छेदन कराव्या ॥ कर लइ वेलोरो आयरे ॥ ६ ॥ कलावती ॥ बेरखडां वांची राजा मनमां वीसे ॥ मे कीधो अपराध ॥ वीण अपराधे मेतो छेदन कराव्यां ॥ मे किधो अन्यायरे ॥ ७॥ कलावती ॥ एणे अवसरे राजा धान न खाय ॥ तेडाव्या राय बेचार ॥ रात दिवस राजा मनमां विमासे ॥ जो आवे सीयलवंती नाररे ॥ ८ ॥ कलावती ॥ सुकां सरोवर जळ लेहेरे जाए ॥ वृक्ष नव पलव थाय ॥ करनव आवे ने मा बेटो धवरावे ॥ इमने सीयल तणो महीमायरे ॥ क० ॥ ९ ॥ एणे अवसर महावीरजी पधारा पुछे पुरव भवनी वात ॥ स्यास्या अपराध कीधा हो प्रभुजी ॥ तेमने कहोने आजरे ॥ कलावती० ॥ १०॥ तुंरे हती वाइ राजानि कुंवरी एहतो सुडानी जात ॥ सेजे सेजेरे तेंतो वाणज मार्यु ॥ भागी सुडानी पांखरे ॥ कलावती० ॥ ११ ॥ तमे तमारी वस्तु संभारो

॥ मारारे संजम केरो भाव ॥ दीक्षा लेशुं माहावीरनी पासे ॥ पोच सु मुक्ति मोसाररं ॥ फलामती० ॥ १२ ॥ पुत्र हता ते रायने दीयो ॥ पोते लीधो संजम भार ॥ समय सुंदर मुनी एणी पेरे भणसे ॥ भव माया गमण निवाररे ॥ उतारो भव पाररं ॥ फलावती० ॥ १३ ॥

इति संपूर्ण

---

॥ इति चंदन बाला गीत लिख्यते ॥

कौसाम्बिते नगरी पधारीआ ॥ महोरषा ते श्री महावीर ॥ अभीग्रहोर इम चींतवो ॥ तमे शुं जाणो जगदीश हो स्वामी ॥ १ ॥ भांमणी एम चहा सठगुरु ॥ कोरतान दाहाडले ॥ मुनि ममता घर घरबार ॥ सुलडी गवर हांकी मेल्ला ॥ एतो मनमा न आणे संसार था ॥ स्वा० ॥ २ ॥ राजाना मोल लुन्टाइ गया ॥ लुन्टी ते चंपापोल ॥ निज थानिक आवी रह्या ॥ त्यांतो हाथी घोडाना गम हो ॥ ॥ स्वा० ॥३॥ राजाना मोल लुन्टा गया ॥ लुन्टी करी घेर जाय ॥ सोपाय कमेटी चड्युं ॥ त्यांतो दीठा छे चंदन बाल हो ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चदनबाला धारणे बेठां उतरां तो सेंघे पदाबीने छइ गयो ॥ एतो बोले छे कडवो बोल हो ॥ ५ ॥ स्वा० ॥ बाइ सुमार घेर घोडल्यी ॥ हुं छुं तारो नाथ ॥ एवा वचन ज्यारे सांभल्यां ॥ एल्ले धारणीं कीधो काल हो ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ जीभ कचरीने मरी गया ॥ मरतां न लागी वार ॥ एतो मरी गया ततकाल हो ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ सवेयी बेठा पड्या ॥ टप्कले ते चंदनबाल ॥ बाइ तुं मारे

घेर वेटडी ॥ हुं छुं तारो तात ॥ बाइ न करीस आपज घात हो ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ खंधे चढावी लेइ गयो ॥ गेर छे मेतानार ॥ जाउरे वजारमां वेचवा ॥ नकर जाइराज पोकार हो ॥ स्वा० ॥९ ॥ खंधे चढांवी लेइ गयो ॥ वेचे ते वजार मांही उभी करी ॥ एतो मुलवे चेइयां नार हो ॥ स्वा० ॥ १० ॥ लाख टका बाइ मुलवे ॥ मो माग्यां ते आपां मुल ॥ लाख टकाना वइ अधलाख ॥ वाइ तम घेर केवो आचार हो ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ राग ठाठ बनाववा ॥ करवा ते सोल सणगार ॥ हींचोला खाडे हींचवा ॥ अम घेर चाववा लेइ पान हो ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ मारो भठ पडयो अवतार हो ॥ मे स्यां करां तां पाप हो ॥ पेला समर्या भगवंत हो ॥ मेना आराध्या अरिहंत हो स्वा० ॥ १३ ॥ में तोडी पुन्यनी पाल हो ॥ आकास उभा देवता ॥ साभले ते एवा बोल ॥ एने उलटीआ व्यंतर वानहर हो ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ आंख नाक वलुरीयां एतो ॥ एतो नासी गइ ततकाल हो ॥ खांधे चढावी लेइ गया ॥ वेचे ते वजार मांही ॥ चौटामां उभी करी ॥ एने मुलवे सुदरशन शेठ हो ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ लाख टकारे वाइ मुलवे ॥ मो माग्या ते आपे मुल ॥ लाख टकाना वाइ अधलाख ॥ भाइ तमघर सो आचार हो ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ पोसा प्रतीक्रमणा अती घणा ॥ आंवीळनो नही पार ॥ अपवास एकासणा नित करवां ॥ अमघर पाणी गलवां त्रणवार हो ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ मे आराध्या अरिहंत ॥ में समरा श्री भगवंत हो ॥ मे वांधी पुन्यनी पालहो ॥ शेठ वखारमाथी आवीआ ॥ स्वा० ॥१८॥ धुये ते सेठना पाप ॥ मुल ए मनमां चितव्युं एतो नीस्व करीने रा-

स्वी हो ॥ हाथे ते घाल्या हसफला ॥१९॥ स्वा० ॥ पगे ते घाली हेड ॥ मस्तके मुंडया वेणीना केश ॥ अनेया गुप्त द्वार हो ॥ पेहेलु सो दाहाडो वीहा थयु ॥ क्यां गइ ते चंदनबाल ॥ सरखी सैयरो ॥ एतो घरमा न आवे लगार हो ॥ २० ॥ स्वा० ॥ बीजु ते दाहाडो त्या गयो ॥ क्या गइ ते चंदनबाल ॥ तने एन बोले बहापी मेली ॥ एतो क्यु न माने लगार ॥ २१ ॥ स्वा० ॥ त्रीजो दाडो तिहा थयो ॥ क्यां गइ चंदनबाल ॥ रामे एने लाडकाइ करी मेली ॥ एतो सातरमां नमोने लगार हो ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ चोथो ते दाडो त्यां थयो ॥ क्यां गइ चंदनबाल ॥ शेठे ते कान्यो कलारलो ॥ एवे मारीक्षमांरे पेट हो ॥ स्वा० ॥ २३ ॥ मुलानाथ गइ तत्काल हो ॥ शेठे पाडोसीने पुछीयुं ॥ क्यां गइ ते चंदनबाल ॥ हाथे ते भाला दसफल्यां ॥ पगे घाली हेड ॥ मस्तकें मुडयारे वीणीस केश हो ॥ एमने घाल्यां गुप्त द्वार हो ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ शेठे ते ताला भागी भां ॥ काढया ते चंदनबाल ॥ एने बेसारां उमरा माही हा ॥२५॥ स्वा० ॥ सुपड खुणे बाकुला बेसारा ते उंबरमांहा ॥ जेम्मी जाय स्वारने वेडचा हो ॥ २६ ॥ स्वा० ॥ छमासीने पारणे ॥ मुनी भमे ते घरेघरे भात ॥ सघली जोगवाइ दीठां मली ॥ पण न दीठी आ मुनी धार हो ॥ २७ ॥ स्वा० ॥ त्यांथी ते प्रभु पाछा वल्या ॥ चींतवे ते चंदनबाल ॥ मारो मठ पडो अवतार हो ॥ मे स्या कीधा तां पाप ॥ स्वा० ॥ २८ ॥ मेना आराध्या अरिहंत हो ॥ मेना समरा भगवंत हो ॥ मे तोडी पुन्यनी पाल हो ॥ स्वा० ॥ २९ ॥ मुनी पाछु वली जोयुं दीठो ते आसु धार ॥ सघली जोगवाइ तिहां

मली ॥ त्यांतो वोरावे चंदनवाल हो ॥ स्वा० ॥ ३० ॥ अठम केरे पारणे ॥ वोरावे ते चंदनबाल ॥ वोरावी करो तमे पारणुं ॥ तमारो सफल हुओ अवातार हो ॥ ३१ ॥ स्वा० ॥ हाथे ते थयो सोना चूडलो ॥ पगे थइ सोनानी हेड ॥ मस्तके थया वेणीना केश हो ॥ सेथो थयो मोतीनी सेरो हो ॥ स्वा० ॥३२॥ शेठ लवार तेडी आविया शुं थयुं ते चंदनवाल ॥ पीता तुं मारे पसाय हो ॥ एटले आव्या मुनी माय हो ॥ शुं थयुं चंदनवाल ॥ माता तुमारे पसाय हो ॥ स्वा० ॥ ३३ ॥ दश देशना राजवी ॥ चंदनवालाने त्यां जाय ॥ त्यां कणे वार करोड वत्रीसनी व्रष्टी हो स्वा० ॥ ३४ ॥ त्यां कणे अठाइ महोच्छव थाय हो ॥ त्यां कने देवताइ वाजां वाग हो ॥ त्यां तो नाटारंभ हो थाय हो ॥ त्यां लब्धि विजयगुण गाय हो ॥ स्वा० ॥ ३५ ॥

॥ इति चंदनबाला गीत समाप्त ॥

---

## ॥ सज्झाय ॥

गुरु सन मुख रही विनय विवेके ॥ इरिआ वहि पडिकमिएजीरे ॥ आ भव परभव पातिकहणीए ॥ गुण श्रेणीए चढीए सुत अनुसरीएजी रे ॥ तरिए आ संसार पातिक हणीएजीरे ॥ सद् गुरुने आधार पार उतरीएजीरे ॥ १ ॥ खट अक्षरनो अर्थ सुणीने ॥ जाणीयुं मस्तक डोलेजीरे ॥ मिछामी डोकडंनि युक्तिए ॥ भद्र बाहु गुरु बोले ॥ सुत ॥ २ ॥ पुठवी अप तेंउ वाउ साधारण ॥ तरु

बादर सूक्ष्मसमूजीरे ॥ प्रतेक तरु विगल त्रीपजता ॥ अपजता अडत्रीस ॥ सुत ॥ ३ ॥ हवे पंचेंद्री जल थर खेचर ॥ उर पर भुज परिविसेजीरे ॥ गरभ समुछी भेद पजता ॥ अपजता ए वीस ॥ सुत ॥ ४ ॥ नारकी साथे पम अपजा ॥ चउद भेद मन धारोजी रे ॥ कर्म भुमी अकर्म भुमीना ॥ पनरतिस बीचारो ॥ सुत ॥ ५ ॥ छपन अंतर दीपना माणस ॥ गर्भ सम्मुर्छम भेदेजीर ॥ ते अपजता पजता गर्भज ॥ त्रणसे सपमीमेदे ॥ सुत ॥ ६ ॥ भवन पती दश दश त्रीजंभक ॥ पन्नर परमा धामीजीर ॥ व्यंतर सोलने जोतिष्क दस तण ॥ किल्ब सिखीपा सुर पामि ॥ सुत ॥ ७ ॥ बार सरगने नव लोकांतिक ॥ नव ग्रैवेक पंच अनुतरनामीरे ॥ ए नवाणु पजता अप जता ॥ एकसो अठाणु सुरना ॥ सुत ॥ ८ ॥ अभिया आवे दस पद साथे ॥ पांचसेने त्रेसेठ गणवांजी रे ॥ छपनसे ने त्रीस थया ते ॥ रागने व्देसे एणवां ॥ सुत ॥ ९ ॥ अगियार सहसने बसे सठि ॥ मन वचन काया तिगुणाजी रे ॥ तेत्रीसहस अने सातसे एसि ॥ ते वली आगळथि गुणा ॥ सुत ॥ १० ॥ करे करावे ने अनुमोदे ॥ एक लाख तेरसे चालीसजी रे ॥ त्रण काळ गुणग तािग लख ॥ बार हजारने विष ॥ सुत ॥ ११ ॥ केवल सीध मुनी सुगुरु आतम ॥ छगुणा लाख अठारजी रे ॥ चोवीसहसने एकसो वीस ॥ सरवाले मन धारो ॥ सुत ॥ १२ ॥ छठे वरसे दीक्षा लीधी ॥ नवमे केवल धारवांजी र ॥ जल क्रीडा करतां अइमतो ॥ नीपरनी बलीहारी ॥ सुत ॥ १३ ॥ इम करी साधु भावक पाथि-

क ॥ टाली लहे भव पारजी रे ॥ श्री सुभवीरनुं सासन वरते ॥ एकवीश वरस हजार ॥ सुत ॥ १४ ॥ ईति.

---

॥ अथ चंद्रावतिनी सझाय ॥

जस मुख सोहे सरसति माय ॥ प्रणमी वीर जीनेश्वरराय ॥ साधु सहुको सुंणज्यो एह ॥ मंत्र यंत्र तंत्रादिक तेह ॥ १ ॥ वैधक पोतीक कूटी कर्म ॥ मूखथी न कहिये एहनो मर्म ॥ अनरथ उपजे तेहथी घणां ॥ जेम एहथी मूवां पांचे जणां ॥ २ ॥ कुंडलपुर खत्री एक ठांम ॥ भीमसेन छे तेहनो नांम नारी तेहनी चंद्रावति ॥ दोसन दीसे तेहमां रती ॥ ३ ॥ चंद्रावती मूकी घरबार एक दीवस ते थयो असवार ॥ चाल्यो चतुर ते कींक मझार ॥ चंद्रावती ते करे वीचार ॥ ४ ॥ एक मने जो किजे धर्म ॥ तो नीकाचीत छूटे जे कर्म ॥ घर पासे तिहां मुनिवर रहे ॥ चंद्रावतीने धर्मज कहे ॥ ५ ॥ प्रतिबोधि कीधि श्राविका ॥ थई ते जिन शासन भाविका ॥ वहोरण गया तेह मुनिराय ॥ चंद्रावती ते प्रणमी पाय ॥ ६ ॥ नयणे नीर झरे ते घणुं ॥ दुख देखी दूहवे आपणुं ॥ घणा दीवस पीउ चाले थया ॥ खर्चि बजे मेली नवी गया ॥ ७ ॥ दीन वचन तेहनुं जब सुंण्यो ॥ दुख थयो ते मुनीवरने घणो ॥ जोस जोइने कर्यो विचार ॥ दीवस सातमे आवे भरतार ॥ ८ ॥ जोस जोइने मुनीवर बोल्यो ॥ कहेल दिवसे कंतज मल्यो ॥ त्यारे खूसी थई चंद्रावती मंन ॥ तेणे रांध्युं सुंदर अंन्न ॥ ९ ॥ प्रथम प्रतिलाभो मुंनीराज ॥ नीमित कहो सारो मुज काज ॥ भीमसेन मन

मन्के घोस्यो—ए पार्सेवी एहने मरयो ॥ १० ॥ एहने एहवुं आप्युं भन्न ॥ जो ए मेहु ने एकम मंन ॥ सदग कारी मारवा धस्यो ॥ देखी मुनीवर मनमा हस्यो ॥ ११ ॥ नारी कहे नवि कीजे रोस ॥ ईणे मकास्यो ताहरो भोस ॥ ते माटे में आप्युं भन्न ॥ सुणी वचन शुम्के वाल्यो मन ॥ १२ ॥ ऊबो भोस मुनिसर तवकाल ॥ आ घोडी स्यु जणसे बाल ॥ भोस भोइने कहे ततकाल ॥ तो मेवने चपजसे काम्ल ॥ १३ ॥ भोस भोइने मुनीवर भण्यो ॥ उदर बचे रह्यो घोडी तणो ॥ घोला पगने रातुं अंग ॥ सीसवट टीलु छे तुरंग ॥ १४ ॥ सुणी वाग तेणे ततकाल ॥ उदर बपेरी काढयो बाल ॥ मनरख देखी पेड्रावती ॥ वीसे स्लाप मूह महा सती ॥ १५ ॥ भीमसेन मन पडीयो फास ॥ आपे हु तो करियो काम्ल ॥ हत्या पारे हुइ भे तले ॥ दुख करवा लागो तेटले ॥ १६ ॥ हे हे मे सु कीधुं काम—मन रय वार कीधा भाग ॥ अन्न पांणी मुनीमर परीहरी ॥ काल किधो निश्चल मन करी ॥ १७ ॥ एहमादोस कह्यां छे घणा—मंत्र यंत्र तंत्रादिक तणा ॥ मूके माया ममता मोह ॥ चारित्र नहि करस्यो सोह ॥ १८ ॥ जेमां दोष न होय रती ॥ ते करो मुनने सुभिपती ॥ एणी परे सतको मुनिमर भणे ॥ दोष रहित ते मीष्ठुर बर ॥१८॥ वाधीक नाम सहो रुप हुवो ॥ पछ मदो त निमित कह्यो ॥ कुल मा सुमो नीमीत भ मणे ॥ धुम पाडी छ्ई दुर गति गणे ॥ २० ॥ तपगछपतिश्री हिरसु रिंद ॥ पटोधर बिजयसेन सुरिंद ॥ हरख्या आनंद पंडीत वरसीस ॥ हरसबिमयकहे भणोमनीस ॥ सपुर्ण समाय

## ॥ अथ भीलडीनी सझाय लिख्यते ॥

मरसामि सासण वीनउ ॥ मागुं एक पसाओ । सतीय शीरो-मणी गायशुं ॥ डीगामणराउ ॥ वनो सै अती रुयडो ॥ १ ॥ तुमें साहस धीरो ॥ भीली चाली खेलवा ॥ इह वनय मजारो ॥ वनो ॥ २ ॥ भीली कहे स्वामी सुंणो ॥ मारो वचन विचारो ॥ फल खावा अमे जाइशुं ॥ इह वनय मजारो ॥ वनो ॥ ३ ॥ भील कहै गोरी सुंणो ॥ इह वनय मत जावो । कोइ पुरुष तने देखशे ॥ डीगामणरावो ॥ वनो ॥ ४ ॥ अंग अमारो नही आभडुं ॥ जैसो वसीओ हारो ॥ अवर पुरुष मारे बांधवो ॥ मारे भीलज राहो ॥ ॥ ५ ॥ सामी तणो आदेश लही ॥ भीलडी रमण चाली ॥ देखी वन रलीआमणो ॥ भीलडी रमण लागी ॥ वनो ॥ ६ ॥ डीगामण राय पालक चढयो ॥ आव्यो वन मोझारो ॥ फल खावै तिहा रस भाखै ॥ देखै एकज नारो ॥ वनो ॥ ७ ॥ डीगामणराय दृष्टे पडयो । जव भीली नाठी ॥ खमण खमण गुफा माहे ॥ भीली तर पैठी वनो ॥ ८ ॥ कैतु अपसरा देव कन्या ॥ कै तुं देवल पुतली ॥ एक अचंभो मोहने । दीशै रुपस स्वरुप ॥ वनो ॥ ९ ॥ नहुं अपसरा देव कंन्या ॥ नही देवल पुतली ॥ जनम दीयो मोरी मावडी ॥ रुप दीयो कीरतार ॥ गज गज गैले छातीआंरा दुखसै पायो ॥ जमननी वाली पदमणी ॥ वोलै अमृत वांणी ॥ वनो० ॥ ११ ॥ भला भुंडा मारा जुंपडा ॥ देखो अधिक वासो ॥ मोह स-रीखा राजवी कांइ ॥ मुंको निरधारो ॥ वनो० ॥ १२ ॥ भले भले

मेरा मुपदा ॥ नहीं सप समार ॥ वचनकु वचन तमे कहेवो लागशे पाप ॥ घनो० ॥ १३ ॥ साल दाल घृत भोमन ॥ निव नवलां तमोल ॥ पैरण पीत पटोलडां ॥ बेसो चकडोल ॥ घनो० ॥ १४ ॥ भोजननो काइ सरावीओ ॥ राभा भरथ भजाणो ॥ पैरण पान पटोलडां ॥ मुज भीम्रम राणो ॥ घनो० ॥ १६ ॥ भीम इण्या के फर इण्या ॥ महु मग संसारी ॥ सेहस पुरुष सेव्या घणा ॥ नहीं पापना पायोरा ॥ घनो० ॥ १७ ॥ राय कहे परधान सुणो ॥ ए रुपै रुडी येगरीने ॥ भीलडीने मार मंदीर आणो ॥ घनो० ॥ १८॥ परधान घडी नह आवीओ ॥ लागो भीलडीने पाय ॥ राय कहे प्राण तजु ॥ मुं करु मोरी माय ॥ घनो० ॥ १९ ॥ तु छे पृथवी राभीओ ॥ तुन कहीशु पाप ॥ वचनकु वचन तमे कह्यो ॥ तुमन लागशे पाप ॥ घनो० ॥ २० ॥ मेरु डगे तु हुं डगुं ॥ पश्चिम उग भाण ॥ सील हमारुं नहीं खंडु ॥ भो जास मुम प्राण ॥ घनो० ॥ २१ ॥ राय तु रंगथी उतर्यो ॥ लागो भीलडीने पाय ॥ वचनकु वचन घणा कह्यां ॥ घणा ते समज्यो मोरायो ॥ घनो० ॥ २२ ॥ भेर वाज्यां भुगल वाज्या ॥ वाजा मृदंग ताल ॥ भीलडी मंदिर सांचरी ॥ वरत्यो जय जयकार ॥ घनो० ॥ २३ ॥ आनंद घन पसापर्थी ए ॥ वाडाले रुडी ॥ सीयलस कोइ पालजो ॥ नहीं काइ भीलडीने तोल ॥ घनो० ॥ २४ ॥

॥ इति भीलडीनी सझाय संपूर्ण ॥

---

## ॥ अथ दीवालीनी सजाय लिख्यते ॥

वंदी वीरजीनेस्वर पाय ॥ गुरु गोयम गणधर राय ॥ तस निर्वाण अने वली नाण ॥ ते आराधे श्रावक जाण ॥१॥ मुक्ते पोतो वीरजीणंद ॥ ओछव करे सुरासुर वृंद ॥ कल्याणी कदी न भणीए एह ॥ तपे करी आराधे तेह ॥२॥ श्रावक मलीआ राय अढार आराधे पोशह आचार सोल पहोर साभले वखांण ॥ छंडे रोग भोगते जाण ॥३॥ जीर्णी राते जीन मुक्ते गया ॥ अणु धरी कंथु आ वहु थया ॥ तीणे कारण गुरु आ रीपिराज अणसण लइने सरां काज ॥ ४ ॥ जीणवर साधु साध्वीतणो ॥ पडयो विरह ते कारण घणो ॥तेह दीवस आवे जेणीवार ॥ कहो केम थाय हरख अपार ॥ ५ ॥ तेजे कारण कीजे तप ॥ घणो संभारीने कुल आपणो ॥ पुजा करीए धरीए ध्यान ॥ राग भीग परहरीए पान ॥ ६ ॥ कोइ जीव अज्ञानी जाण ॥ हरख धरे पापने ठाण ॥ मांडे मुल थकी आरंभ ॥ खावा पीवानो प्रारंभ ॥ ७ ॥ गहु पलालोवणविसेव ॥ दीवाली आवे छे हेव॥ करे लाडु ने सांकली । इंद्री रस वाहल फली ॥ २ ॥ तेम सुले माटी छाण ॥ जगनाथनी भागे आण ॥ दले खांडे नवी जयणा करे ॥ खाटकी साला पाचे वावरे ॥ ९ ॥ चोमासा माहि वहुला जीव ॥ नील फुल कंथुआ अतीव ॥ कंगारी कीडी करोलीआ ॥ राते अंधारे रेलीआ ॥ नाठी सान वासीओ करे ॥ सामायक पोशापरी हरे ॥ पानफळ साडी सणगार ॥ अधीका करे तेह गमार ॥ ११ ॥ धनतेरस न्हाण उल्लास ॥ जीव हणीने वांधे पास ॥ सेवो लाडवा हरखे

जमे ॥ सील न पाले जुगटे रमे ॥ १२ ॥ घर लींपे कारे सा-
थीआ ॥ सान्या तस्या जे केइ आथीमा ॥ पर्वतणी नवी लामे सार
॥ पखवृस अमावास्या धर्म समार ॥ १३ ॥ वली जो जो
अधिको पाप ॥ कुल फस्म कर संताप ॥ भागो टाल
जेवु करे ते गम्ल ॥ आमि मजाल्लिने मागे तेल ॥ १४ ॥
घर घर दीवा कीधे फरे ॥ बहुला जीव ते माही मरे ॥ मेराइयांनु
मोटे नाम ॥ घर घर फरता कर प्रणाम ॥ १५ ॥ पाखी पडीकम-
णांनो काल ॥ ते इविसार मुरसमाल्ल ॥ मुद कहावे श्रावक नाम ॥
नवी जाणे सासन दुलभ ठाम ॥ १६ ॥ असहम दीवा पछमराते ॥
काढे मम्लछीने अम ममाते ॥ घउला कुर विना नवी जमे ॥
वेलो लोक अज्ञाने भमे ॥ १७ ॥ गौतमस्वामी पाम्या ज्ञान ॥ ते
इतणु तमीने नाम ॥ जुहार भगरा करवो फर ॥ सांजे सानन
भणी सचरे ॥१८॥ पहेर ओढे बहु सणगार, काम भोग पुर्यो परि-
वार ॥ हांसी भाजी फर रकोम्म॥ बांधे फर्मन भय रह बोल ॥१९॥
पछी वली फर मायीज ॥ खावा पीवां आवे रीम ॥ मुल मंत्र घणा
साधे जेह ॥ धर्म न आराधे प्राणी तेह ॥ २० ॥ दीवालीनुं कल्पी
नाम सगां साजनने जमाडे तमाम ॥ अभ केमली करे आहार ॥
जोजो लोफतणो व्यवहार ॥ २१ ॥ माव्यो पर्व दीवस जेह ॥
पापे करी विराधे तेह ॥ कर्म निकाचित बांधे बाल ॥ एणी रीते
रुल अनंतो काल ॥ २२ ॥ पेने मुक्ति मढे दुकरी ॥ तेनी मली
संमरमो घडी ॥ संसारीक सुख दुःख स्वरूप ॥ एहनी समाधे आ-

तम श्रुप ॥ २३ ॥ दोहीलो दीसे नरभव जेह ॥ तेहमांही दुर्लभ जीन धर्म तेह ॥ जीन वाणी ते दुर्लभ सुणे ॥ मीथ्या मतीने दुर्लभ हणे ॥ २४ ॥ तपगछ गयण विभासण भाण ॥ श्री हीरविजय सुरी जाण ॥ वाचक भानुचंदनो शीष्य ॥ देवचंद्र प्रणमे नीसदीस ॥

इति दीवालीनी सज्झाय संपूर्ण ॥

---

॥ अथ पडिक्रमणानी सज्झाय लिख्यते ॥

गोयम पुछे श्री महावीरनेरे ॥ भाखो भाखो प्रभुजी संबंधरे ॥ पडिकमणाथी स्युं फल पामीएरे ॥ स्युं स्युं थाय प्राणीने बंधरे ॥ गो ॥ १ ॥ सांभलो गोयम जे कहुं पून्यथीरे ॥ करणी करतां पुन्य नो बंधरे ॥ पुन्यथी दुजो अधिकोको नहिरे ॥ जेथी थाय सुख संबंधरे ॥ गो ॥२॥ इछा पडिकमणु करी पामीएरे ॥ प्राणीने पुन्यनुं बंधरे । पुन्यनि करणी जे उवेखस्येरे ॥ परभवे थास्ये अंधोअंधरे ॥ गो ॥ ३ ॥ पाच हजारने उपर पांचशेरे ॥ द्रव्य खरची लखावे जेहरे ॥ जीवाभिगमइपजावणारे ॥ मुंबके भंडारे पुन्यनि रेहरे ॥ गो ॥ ४ ॥ पांच हजारने पांचशेरे ॥ गायो गर्भवंति जेहरे ॥ तेने अभयदान देतां थकांरे ॥ मुहपत्ती आप्यानु पुन्य एहरे ॥ गो ॥५॥ दसहजार गोकुल गायो तणारे ॥ एकेको दशहजार प्रमाणरे ॥ तेहने अभयदान देतां थकांरे ॥ उपजे प्राणीने विरवांणरे ॥ गो ॥ ६ ॥ तेथी अधिकुं उतम फळ पामिएरे ॥ परने जे उपदेश देधानुं जाणरे ॥ उपदेश थकी संसारी तरेरे ॥ उपदेशे पामे परिमल नाणरे ॥ गो

पा ७ ॥ श्री सीनमंदीर अभिनव सोभतारे ॥ सिखरनु स्वरच कराये खेहरे ॥ एकेको मंडप बावन चैत्यनोर ॥ घरमलो भाष्यानु पुन्य पहरे ॥ गो ॥ ८ ॥ मासखमणनि तपस्या कररे ॥ अथवा पंनर कराये पेहरे ॥ एहवा कोड पन्नर करता थकारि ॥ कांबलीच भापानु फल एहर ॥ गो ॥९॥ सहस अठासी दांन साका तणुरे ॥ तपथे भाणीने पुन्यनु पंथरे ॥ स्वामि सगाथे गुरुने थान केर ॥ भवेस थाए पुन्पनु पंथर ॥ गो ॥ १० ॥ जीन प्रतीमा सोवनमय कररे ॥ सहस अठासीजु प्रमाणर ॥ एकेकी प्रतीमा पांचसें अनुपनीरे ॥ इरीयावही पडिकमणानो ए प्रमाणरे ॥ गो ॥ ११ ॥ आवश्यक पमर श्रुगवे प्रथ प्यार ॥ भाम्यो पडिकमणानो संचपरे ॥ जीवाभिगवइ आवस्यक मोहमोर ॥ स्वयंमुख भाखे वीर जीणंदर ॥ गो ॥ १२ ॥ पापक मल करे भद्रा परर ॥ पालस्ये पडिकमणानो व्यवहारर ॥ अनुघर सम सुख पामे माण्कुर ॥ पामस्ये भविजन भवजल पाररे॥गो॥१३॥

इति पडिकमणानी सझाय संपूर्ण ॥

---

॥ अथ श्री मरुदेवीमातानी सझाय लिख्यते ॥

एक दिन मरुदेवी आइ ॥ कइ भरतने अवसर पाइर ॥ १ ॥ सुणो प्रेम धरी ॥ तुंतो षटखंड पृथवी माणे ॥ माहारा सुतनुं दुःख नवी जाणेर ॥ २ ॥ सुणो० ॥ तु चामर छत्र धराये ॥ माहारो ऋषभ पंथे जायर ॥ ३ ॥ सु० ॥ तुंतो सरसा भोजन भासी ॥ माहारो ऋषभ नीत उपवासीर ॥ ४ ॥ सु० ॥ तुंतो मंदीर मांहे सुख

विलसे ॥ मारो अंगज धरती फरसेरे ॥ ५ ॥ सु० ॥ तुंतो सजन कुटंबमां माले ॥ मारो ऋषभ एकवडो चालेरे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तुंतो विषयतणां सुख सूचे ॥ मारा सुतनी वात न पुछेरे ॥ ७ ॥ सु० ॥ इम कहती मरुदेवी वयणे ॥ आंसु पडलागी नयणेरे ॥ ८ ॥ सु० ॥ इम सहस वरसने अंते ॥ लह्यो केवल ऋषभ भगवंतेरे ॥ ९ ॥ सु० ॥ हवे भरत भणे सुणो आइ ॥ श्रुत देखी करो वधाइरे ॥ १० ॥ ॥ सु० आइ गज अंथ बेसार्यां ॥ श्रुत मलवाने पउधार्यांरे ॥ ११ ॥ सु० ॥ कहे एह अपुरव वाजां ॥ किहां वाजे छे ए ताजांरे ॥१२॥ सु० ॥ तव भरत कहे सुणो आइ ॥ ए तुम सुतनी ठकुराइरे ॥१३॥ ॥ सु० ॥ तुम सुत ऋषि आगे सहुनी ॥ त्रण तोले सुरनर बहुनीरे ॥ १४ ॥ सु० ॥ हरखे नयणे जल आवे ॥ तव पडल बेहु खरी जावेरे ॥ १५ ॥ सु० ॥ हु जाणती दुःखीओ कीधो ॥ सुखीओ सहुथी छे अधीकोरे ॥ १६ ॥ सु० ॥ गयो मोह अनीत्यता आवे ॥ तव सिद्धस्व रुपीआयोरे ॥१७॥ सु० ॥ तव ज्ञान विमल वधु नारी तव परगटी अनुभव सारीरे ॥ १८ ॥ सु० ॥

॥ इति मरुदेवीनी सज्झाय संपूर्ण ॥

---

॥ अथ श्री सोल सुपनानी सज्झाय लिख्यते ॥

सुपन देखेपेलडे ॥ भांगी कल्प वृक्षनी डालरे ॥ राजा संजम लेशे नही ॥ दुःखम पंचम कालरे ॥ चंद्र गुप्त राजा सुणो ॥ १ ॥ अकाले मरज आथम्यो ॥ तेहनो शो [illegible] ॥ [illegible]

काम्या ॥ तेने केवलज्ञान नही होसेरे ॥ च ॥ २ ॥ त्रीजे चंद्रमा चारणी ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ सामाचारी शुद्ध शुद्ध होसे ॥ चार चाटे धर्म होसेरे ॥ चं ॥ ३ ॥ भूत भुतडी दीठां नाचतां ॥ चोथा सुपन विस्ताररे ॥ कुदेवक गुरु कुधर्मनि ॥ मानता घणीर होसेर ॥ चं० ॥ ४ ॥ पांचमे नाग दीठो बार फेणो ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ वरस थोडाने आंतरे ॥ होसे बार दुकालर ॥ चं० ॥ ५ ॥ देव विमान छठे वल्यो ॥ तेहनो सो विस्तारर ॥ विद्या ते जघाचारनी ॥ लब्धि ते निसेध होसेरे ॥ चं० ॥ ६ ॥ उग्यु ते उकरडा मध्ये ॥ ॥ सातमे कमल विकासरे ॥ एका नही ते सर्व वणीया ॥ जुदा जुदा मत होसेरे ॥ थापना थापसे आप आपणी ॥ घणी वीर अर्थीक थणु होसेरे ॥ चं० ॥ ७ ॥ सुपन देखी आठमे ॥ आगीआनो च मत्कार होसेरे ॥ उद्योत होसे जैन धर्मनो ॥ पछे मिथ्यात्व घोर अंधारूरे ॥ च० ॥ ८ ॥ सुका सरोवर दीठां त्रण दीसें ॥ दक्षिण दीस डोला पाणीर ॥ त्रण दीसे धर्म होसे नहीर ॥ दक्षिण दीसे धर्म होसेर ॥ चं० ॥ ९ ॥ सोनानीर थाली मध्ये ॥ कुतरो खाय छे खीररे ॥ ऊंचतणीरे लक्ष्मी ॥ नीचतणे होसेरे ॥ च० ॥ १० ॥ हाथी माथे बेठो वांदरो ॥ तेहनो सो विस्तारर ॥ मले छ राजा ऊंचा होसे ॥ असली हिंदु हेठे होस्येर ॥ चंद्र० ॥ ११ ॥ समुद्र मरजादा मुकी चारमे ॥ तेहनो स्यो विस्ताररे ॥ शिष्य चेलाने पुत्र पुत्रिठ ॥ नवि रासे मरजादा लगाररे ॥ चं० ॥ १२ ॥ राजकुमर चडो पोठीए ॥ तेहनो सो विस्तारर ॥ उंचा ते जीन धर्म छांडीने ॥ राजा ते निच धर्म आदरसेरे ॥ चं० ॥ १३ ॥ रत्न झांखारे दिठा

चउदमे ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ भरतक्षेत्रना साधु साधवी ॥ तेहने हेत मेलावो थोडो होशेरे ॥ चं० ॥ १४ ॥ महारथे जुता वाछडा ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ वालक धर्म करसे सही ॥ वुढा प्रमादमा पडया रसेरे ॥ चं० ॥ १५ ॥ हाथी लडे मावत विना ॥ तेहनो सो विस्ताररे ॥ वरस थोडाने आंतरे ॥ माग्या नही वरसे मेघरे ॥ चं० ॥१६॥ व्यवहार सूत्रनी चूलिका मध्ये ॥ भद्रवाहु मुनि एम भाखेरे ॥ सोले ते सुपननो अर्थ ए ॥ सांभलो राय सुधिरोरे ॥ चंद्र० ॥१७॥

॥ इति सोल सुपनानी सझाय समाप्त ॥

---

गौतम स्वामीनी सझाय.

गौतम स्वामी पृछा करे ॥ कहोने स्वामी वर्द्धमानजीरे ॥ केणे कर्मे निर्धन निर्वंशी ॥ केणे कर्मे निःफल होय स्वामी ॥ परधर भांगे ने परदमे ॥ तेणे कर्मे निर्धन होय ॥ गौतम ॥ १ ॥ गौतम ॥ थापण मोसो जे करे ॥ तेणे कर्मे निर्वंशी होय ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे वैश्याने ने विधवा ॥ केणे कर्मे नपुंसक होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ २ ॥ दुर गंछा करे जैन धर्मनी ॥ तेणे कर्मे वैश्या होय ॥ गौतम ॥ शियळ खंडीने भोग भोगवे ॥ तेणे कर्मे विधवा होय ॥ गौतम ॥ ३ ॥ गौतम ॥ वेश्यानो संग जे करे ॥ तेणे कर्मे नपुंसक होय ॥ गौतम ॥ ४ ॥ केणे कर्मे गर्भ पीगळी जाय ॥ केणे कर्मे पीठी भइ त्या जाय ॥ स्वामी ॥ वाडी वेडे कुणा मोगरा ॥ तेणे कर्मे गर्भथी जाय ॥ गौतम ॥ ५ ॥ गौतम ॥ फूल विंधीने कर्म वाधीया

॥ तेणे कर्मे पीठी मर्या आय ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे दुगाने पागला ॥ केणे कर्मे जाति अंध होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ ६ ॥ पांसो फाटे परजीवनो ॥ तेणे कर्मे पागुला होय ॥ गौतम ॥ कच्च करे पर जीवनो ॥ तेणे कर्मे जाति अंध होय ॥ गौतम ॥ ७ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे शोकपज उपजे ॥ कणे कर्मे कलंक चडंत ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ ८ ॥ पेरो बसो जे कर ॥ तेणे कर्मे शोकप उपजत ॥ गौतम ॥ खोटी थाल धुरीने कम बांधीया ॥ तेणे कर्मे कलंक चडत ॥ गौतम ॥ ९ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे विपभर उपजे ॥ केणे कर्म जस हीण होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १० ॥ रिख भर्या भर मण-पोसीया ॥ तेणे कर्मे विपभर होय ॥ गौतम ॥ जे जीव रागे थापी या ॥ तेणे कर्मे जरा हीण होय ॥ गौतम ॥ ११ ॥ गौतम ॥ केणे कर्म जीव निगोद्मां ॥ केण कर्मे तिर्यचमां जाय ॥ स्वामि ॥ गौतम ॥ १२ ॥ जे जीम मोहे व्यापीयो ॥ तेणे कर्मे निगोदमां जाय ॥ गौतम जे जीप मायाए व्यापीयो ॥ तेणे कर्मे तिर्यचमा जाय ॥ गौतम ॥ १३ ॥ गौतम ॥ कणे कर्मे जीप एकींद्रीमां ॥ कणे कर्मे पचेंद्रीमां जाय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १४ ॥ पांच इंद्रीयवस नवी कर ॥ तेणे कर्मे एकींद्रीमा जाय ॥ गौतम ॥ पांच इंद्रीयवस पे करे ॥ तेणे कर्मे पंचेंद्रीमा जाय ॥ गौतम ॥ १५ ॥ गौतम ॥ कणे कर्मे जीवडा बहु भमे ॥ कणे कर्म थोडोप ससार ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १६ ॥ पे जीव मोह मछर कर ॥ तेणे कर्मे ससार भमंत ॥ गौतम जे जीव सतोप पामीया ॥ तेणे कर्मे थोडोप संसार ॥ गौतम ॥ ॥ १७ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे जीवडा ऊंच कुले ॥ केणे कर्मे जीव

कुळ होय ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ १८ ॥ दान दीधा सुपात्रमां ॥ तेणे कर्मे उंच कुळे जाय ॥ गौतम ॥ दान दीधा अणसुजता ॥ तेणे कर्मे नीच कुळ जाय ॥ गौतम ॥ १९ ॥ गौतम ॥ केणे कर्मे जीवडा नरकमां ॥ केणे कर्मे स्वर्ग विमान ॥ स्वामी ॥ गौतम ॥ २० ॥ जे जीव लोभे व्यापीयो ॥ तेणे कर्मे नरकमा जाय ॥ गौतम ॥ दान शियळ तप भावना ॥ तेणे कर्मे स्वर्ग विमान ॥ गौतम ॥ २१ ॥ गौतम ॥ राजगृही प्रभु आविया ॥ श्रेणीक वंदवा जाय ॥ गौतम ॥ चेलणा करे अति गहुं अली ॥ हयडे हर्ष न माय ॥ स्वामी ॥२२॥ गौतम ॥ गौतमे केवल मागीयुं ॥ दीयो ते वीर वर्द्धमान ॥ स्वामी ॥ जो वछ गौतम सांभलो ॥ मोहे न होय निर्वाण ॥ गौतम ॥२३॥ गौतम ॥ रुप विजय कवि इणीपरे ॥ भाखे श्री भगवान ॥ गौतम ॥ जे नर भणे जे साभले ॥ तस घर मंगळ माळ ॥ गौतम ॥२४॥

संपूर्ण.

---

## ॥ जीवरासीनी सझाय. ॥

मोह मीथ्यातकी निंदमे ॥ जीवा सुतो काल ॥ अनंत भव माहे तुं भटकीयो ॥ जीवाते सांभल वीरतंत ॥ जीवा तुंतो भोलोरे ॥ प्राणी इम रुलीयोरे संसार ॥ १ ॥ एसा केइ अनंत जीन हुवा ॥ जीवा उतकृष्टो ग्यान अगाध ॥ इण भवथी लेखो लीयो ॥ जीवा कुण बतावे तारी जात ॥ जीवा ॥ २ ॥ पृथवी पाणी अगनमे ॥ जीवा चोथी वायुकाय ॥ एकर काया मधे ॥ जीवा काल असंख्यातो जाय ॥ जीवा ॥ ३ ॥ पंचमी काय वनस्पती ॥ जीवा साधारण

मस्पेक ॥ सापारममां हुं वस्पो ॥ जीवा ते सांमली सुवीवेक ॥ जीवा ॥ ४ ॥ सुई अग्रनी गोदम ॥ जीवा एण मसंस्याती माण ॥ असंस्याता मकर एक सेभम ॥ मीवा एम गोला मसस्या प्रमाण ॥ मीवा ॥ ५ ॥ माण एक शरीरम ॥ मीवा मीव अनंता प्रमाण एक गोला मपे ॥ मीवा शरीर असंस्याता माण ॥ एकर एक शरीरमे ॥ जीवा मीव अनंत प्रमाण ॥ जीवा ॥ ६ ॥ वेमांथी अनादी मीवडा ॥ मीवा मोक्ष आये मीरा थाल ॥ एक स्वासी शरीर न हुवो ॥ मीवा म हुवे अनंते काल ॥ मीवा ॥ ७ ॥ एकर अमवी सग ॥ मीवा भव अनंता होय ॥ कर्मा वीसरवे वेदने ॥ जीवा मन्म मरण सुं जोय ॥ मीवा ॥ ८ ॥ दोय घडी काची मपे ॥ मीवा पेसट सहस सो पांच ॥ बत्रीस अधीका भाणम्यो ॥ मीवा ए कर-पनी स्वाच ॥ मीवा ॥ ८ ॥ छेदन मेदन वेदना वेदना ॥ मीवा मरण सही बहु वार ॥ नीण सहीनीगोदम ॥ मीवा मनसुणी वीचार ॥ मीवा ॥ १० ॥ एकींद्रीमांथी नीकल्यो ॥ मीवा इंद्री पाम्यो दोय ॥ तव पुन्याइ वाहगी ॥ मीवा तेथी अनंती होय ॥ मीवा ॥ ११ ॥ इम तेरंद्री चोरंद्री जीवमा ॥ मीव मे वे लास ए जात ॥ दुस दीठा संसारमे ॥ मीवा सुणता असरिम पात ॥ मीवा ॥ १२ ॥ मलचर थलचर सेचर ॥ मीवा उर पुर सुम पुर जात ॥ सीत ताप त्रसा सही ॥ मीमा दुस सह्या दीनरात ॥ मीवा ॥ १३ ॥ इम भमंतो मीवडो ॥ मीवा पाम्यो नरमव सार ॥ गर्भावासमे दुस सह्या ॥ मीवा ते भाखे कीरतार ॥ मीवा ॥ १४ ॥ मस्तक तो हेठो होये ॥ मीना उपर रहे वेहु पाय ॥ मांस्यो मार्दा मुठी वेहुं ॥

जीवा इम रह्यो वीष्ट घर माय ॥ जीवा ॥ १५ ॥ बाप वीरज माता रुध्र ॥ जीवा इस दोलीयो ते आहार ॥ भुली गयो जन्म्या पछे ॥ जीवा सेखी करे अविचार ॥ जीवा ॥ १६ ॥ उंठे कोड सुइ लाल करे ॥ जीवा चांपे रुं रुं माय ॥ अष्टगुणी हुवे वेदना ॥ जीवा गर्भा वासारे माय ॥ जीवा ॥ १७ ॥ जनमता हुवे कोड गुंणी ॥ जीवा मरणंता कोडाकोड ॥ जन्म मरणता जीवडा ॥ जीवा जाणजो मोटी खोड ॥ जीवा ॥ १८ ॥ देश अनारज उपनो ॥ जीवा इंद्री हीणो होय ॥ आउखुं ओछुं होये ॥ जीवा धर्म कीसी वीध होय ॥ जीवा ॥ १९ ॥ कदाचीत नरभव पामीयो ॥ जीवा उतम कुले अवतार ॥ देहनीरोगी पामीने ॥ जीवा रइ खोयो जम वार ॥ जीवा ॥ २० ॥ ठग फासीगर चोरटा ॥ जीवाधीवरकसायरी न्यात ॥ उपजीनी मुवो नही ॥ जीवा एसान रही कोइ जात ॥ जीवा ॥ २१ ॥ चउद राज लोकमां ॥ जीवा जनम मरणनी जोड ॥ जीवा खाली वालाग्रमात्रए ॥ जीवा एसीनरहीकोइ ठोड ॥ जीवा ॥ २२ ॥ एह जीव राजा हुवेगा जीवा हस्ती बांध्या बार ॥ कबहीक करमावसे ॥ जीवा न मील्यो अन उधार ॥ जीवा ॥ २३ ॥ इम संसार भमतो थको ॥ जीवा पाम्यो समकीत सार ॥ आदरीने छिटकावी दीयो ॥ जीवा जाय जन्मारो हार ॥ जीवा ॥ २४ ॥ खोटा देवज सरदीया ॥ जीवा लागो कुगुरु केड ॥ खोटो धर्मज आदरी ॥ जीवा कीधा चउ गती फेर ॥ जीवा ॥ २५ ॥ कबहीक नरके गयो ॥ जीवा कबहीक हुवो तुं देव ॥ पुन्य पापना फल थकी ॥ जीवा लागी मीथ्यातनी टेव ॥ जीवा ॥ २६ ॥ ओघाने वली मोमती ॥ जीवा मेरु जेवडा कीध

पवई समकीत विना ॥ जीवा कारज नहीं हुवा सीध ॥ जीवा ॥ २७ ॥ चार ज्ञानवणा धर्णी ॥ जीवा नरक सातमी जाय ॥ चवद पुरवनो भाण्यो ॥ जीवा पडे नीगोद माहे ॥ २८ ॥ जीवा ॥ मग वंतनो धर्म पाम्या पछी ॥ जीवा कर्दायन भाप फोक ॥ कषायीत पत्माइ हुवे ॥ जीवा अर्ध पुद्गल माहे मोस ॥ जीवा ॥ २९ ॥ सुस्पने बादरपणे ॥ जीवा मेम्ली फर्णा सास ॥ एक पुद्गल भाव-र्तनेनी ॥ जीवा जीर्णा घणी छे बात ॥ जीवा ॥ ३० ॥ अनंत जीव मुगते गया ॥ जीवा गाली आतम दोष ॥ नहीं गया नहीं जा वसे ॥ जीवा एक नीगोदनी जात मोस ॥ जीवा ॥ ३१ ॥ पाप मामोइ आपणा ॥ जीवा अमव नाला रोक ॥ तेथी वेमल्पोकमा वसो ॥ जीवा पनर भव मोहे मोस ॥ ३२ ॥ जीवा ॥ एहवा भाव सुणी करी ॥ जीवा सर्वा आणी नाइ ॥ ज्यु आयो तेम गयो ॥ जीवा लक्ष चोरासी माहे ॥ जीवा ॥ ३३ ॥ केइ उत्तम नर चींतवे जीवा जाणे अथीर संसार ॥ साचो मार्ग साधीने ॥ जीवा जाय सुगती मझार ॥ जीवा ॥ ३४ ॥ दान शीयल तप भावना ॥ जीवा इणशु राखो प्रेम ॥ कोड कल्याण छे तेहने ॥ जीवा ज्ञान वीमल कहे एम ॥ जीवा ॥ ३५ ॥ संपुर्ण इती

---

प्रतिक्रमण विसे उपदेश

मातापर भक्ति रागने ञीपर प्रीतीराग तेम पडिकमणामा मीधि भक्तिनो रांग विचारवो ते आवी रीत एक पडिकमण-बीजु काउ-सग ॥ त्रीजु पचखाण ए त्रणमां मीवि अनुष्ठान छे केमके पणी

संगतथी आगळ गुण वधे माटे प्रीतिराग छे ॥ अने ॥ एक सामायिक वीजो चोउवीसथो त्रीजो गुरुने वंदण करवो ए त्रणमा भक्ति अनुष्ठान छे ॥

यति धर्म माहे पांच क्रिया कहे छे पहेली विषक्रिया वीजी गरल क्रिया, त्रीजी अनुष्ठान क्रिया, चोथी तदहेतु क्रिया, पांचमी अमृत क्रियाए पांच भेदे क्रिया जाणवी ॥ विष क्रिया कोणे कहीए ग्रहस्थि आवे त्यारे क्रिया करे तेने विषक्रिया कहीए ॥ वीजी गरलक्रिया कोणे कहीए ते गरलक्रीया कालांतरे फल आपे हडकीया वायुनी परे हडकवा लागे त्यारे मरण पामे तेम चारित्रीयो अति नियाणुं करे तो वे त्रण भवमा ते वस्तु पामे पण चारित्रनुं फल पामे नही तेने गरलक्रिया जाणवी ॥ त्रीजी अनुष्ठान क्रिया कहे छे अविवेके करीने अथवा क्रिया करवा वेसे त्यारे क्रिया करवानुं भान नही मन रहित क्रिया करे तेने कंइ फल दायक जाणवी नही तेने अनुष्ठान क्रिया कहीए ॥ चोथी तद हेतुं क्रिया कहे छे चारित्र लेनार वैरागी भद्र परिणामी देसना सांभले शुध रागे वध ते क्रिया करे पण विधी सुध नहीय परंतु सरवाले तेथकी विशुद्ध थाय माटे चोथी क्रिया फलदायक जाणवी. पांचमी अमृत क्रिया कहे छे आगम प्रमाणे सुध क्रिया करे क्रिया करवामा अध्वसाय सारा करे क्रिया करवामा सुध्ध अनुष्ठाननुं आचरण करे एवातो कोइक विरला प्राणी दीसे छे माटे पांच क्रियामां अमृत क्रीयानुं फल मोक्ष आपवावालुं छे माटे अमृत क्रिया जाणवी ए पांच क्रियामां त्रण क्रिया आदरवा योग्य नथी ने वे चोथी ने पांचमी क्रिया आदरवा योग्य छे

## सम्मुर्छीम् जीवोनी उत्पत्ती विशे

गायक मुत्रमे २४ पहर पछी

भेंसके मुत्रमे १६ पहर पछी

गाऽरतथा गधेडी घोडीके मुत्रमे ८ पहर पछी नरनारीके मुत्रमे चार पहर पछे छमुर्छिम जीव उपजे

१४) पुर्वका नाम

१) पहिला पुर्व उत्पाद

२) बीजो–अग्रायणी,

३) त्रीजो–वीर्यवाद

४) चोथो–सता प्राणीपे

५) पांचमो–नार गरपण

६) छठो–सत्य प्रवाद

७) सातमो–आतम

८) आठमो–कर्म प्रवाद

९) नवमो–प्रत्याख्यान प्रवाद

१०) दशमो–विध्या प्रवाद

११) अगीआरमे–नाम कल्याण

१२) बारमे–प्राणायु

१३) तेरमे–क्रिया विस्तास

१४) चौदमें–बिन्दुसार